चतुर्थ अध्याय

आधुनिक खण्डकाव्य : सर्वांग-अवलोकन

खण्डकाव्य : अन्तरंग-अवलोकन

खण्डकाव्य के 'अन्तरंग' में वे सभी तत्व समाविष्ट होंगे जिनके सम्मिलित समन्वय से काव्य का भावपक्ष संपन्न, सबल एवं सुदृढ बन जाता है। ऐसे तत्वों में कथावस्तु, पात्र एवं चरित्रचित्रण, उद्देश्य, वातावरण-चित्रण, प्रकृतिचित्रण, रसयोजन आदि विशिष्ट महत्व के हैं।

कथावस्तु

कथावस्तु अथवा कथानक खण्डकाव्य का एक आवश्यक अंग है। खण्डकाव्य सम्बन्धी पुराने आचार्यों के लक्षणों से लेकर आधुनिक प्रणीत खण्डकाव्य तक में काव्य का यह तत्व अन्तर्लीन रहता है।

'कथा' शब्द की व्युत्पत्ति 'कथ्' धातु से हुई है जिसका साधारण अर्थ है 'वह जो कहा जाये'। लेकिन अपने विशेष अर्थ में वह जो कुछ कहा जाय, सब कुछ कथा नहीं हो सकता। अपने विशिष्ट अर्थ में कथा वही है जिसमें किसी घटना का वर्णन हो, जिसका कोई निश्चित परिणाम रहता है। घटना प्रत्यक्ष अथवा कल्पित दोनों हो सकती है। 'जिस किसी से सम्बन्धित घटना हो, उसकी किसी विशेष परिस्थिति या परिस्थितियों का निश्चित आदि और अन्त से युक्त वर्णन ही कथा कहलाता है।'[१] साधारणतया कथा का लघु रूप या सारांश ही कथानक है। इस का विशेष अर्थ है महाकाव्य, नाटक उपन्यास जैसे कथायुक्त साहित्य रूपों में प्रयुक्त कार्यव्यापारों की शृंखलाबद्ध संयोजना। 'अपने विशिष्ट अर्थ में इससे अभिप्राय है साहित्य के कथात्मक रूपों -- लोकगाथा, महाकाव्य, उपन्यास, कहानी आदि का वह तत्व, जो उन में वर्णित कालक्रम से शृंखलित घटनाओं को रीढ़ की हड्डी की तरह दृढ़ता देकर गति देता है और जिसके चारों ओर घटनाएं बेल की भाँति उगती बढ़ती और फैलती हैं।'[२]

१- हिन्दी साहित्य कोश : भाग १ - सं० डा० धीरेन्द्रवर्मा, पृ० २०३.

२- वही, पृ० २०३.

कथा और कथानक दोनों में अन्तर है । इसके अन्तर को स्पष्ट करते हुए `साहित्यकोश` में लिखा हुआ है --`कथा या कहानी भी साधारणतः कार्यव्यापार की योजना ही होती है, परन्तु कैसी भी कोई कथा कथानक नहीं कही जा सकती ।`[1] सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान ई० एम० फार्स्टर की उक्ति का उद्धरण देते हुए साहित्यकोश फिर स्पष्ट करता है --`ई० एम० फार्स्टर ने कथा और कथानक का अन्तर बताते हुए कहा है ` कथा है घटनाओं का कालानुक्रमिक वर्णन कलेवा के बाद व्यालू, सोमवार के बाद मंगलवार, मृत्यु के बाद नाश आदि` जबकि कथानक भी घटनाओं का वर्णन होता है, परन्तु उसमें कार्य-कारण-सम्बन्ध पर विशेष बल दिया जाता है ।`[1] कथानक में कार्य-कारण-सम्बन्ध की उपस्थिति का यह फल होता है कि घटनाएं युक्तियुक्त सी रहती हैं तथा बुद्धिगम्य होती हैं । कथानक का यही विशेष गुण उसे विश्वसनीयता के तल पर ला खड़ा कर देता है ।

अंग्रेजी में `प्लाट` (Plot) ही इसका पर्यायवाची शब्द है । इसमें जीवन के गतिमान संघर्षशील रूप की अवतारणा की जाती है । `प्लाट` मुख्यतया लक्ष्योन्मुख कार्यव्यापारों का विवरण है, जिसमें संघर्ष एवं समस्याएं सम्मिलित हैं तथा जिनका आगे चलकर सुलझाव भी हो जाता है ।`[2] वस्तुतः काव्य के कथानक या कथावस्तु काव्य का वह तत्त्व है जो काव्य की मूलभूत विषय वस्तु है । उसके द्वारा ही काव्य-शरीर का संगठन होता है ।

प्रबन्ध काव्यों में कथा को एक आवश्यक अंग स्वीकार किया गया है । काव्य भेद के अनुरूप कथानक की अवतारणा में भी अंतर रहता है । महाकाव्य में काव्यशरीर

१- हिन्दी साहित्यकोश : भाग १ - सं० डा० धीरेन्द्रवर्मा, पृ० २०३

२- "Essentially the plot is a narrative of motivated action involving some conflict or question which is finally resolved." -

An introduction to literary criticism:

Marlies K. Danziger. ed. Stacy Johnson. page: 19.

के अनुकूल कथा का कार्य भी महत्व रखता है। महाकाव्य के लक्षण निर्धारित करते समय आचार्यों ने महाकाव्यों में सम्बे कथानक की आवश्यकता पर जोर दिया है।[१] महाकाव्य के कथानक के 'प्रत्यात' रहने की बात पर भी इन आचार्यों ने जोर डाला है। आचार्य रुद्रट के 'काव्यालंकार' में (अ० १६ : २-१६) महाकाव्य के कथानक के उत्पाद्य या अनुत्पाद्य होने की बात पर भी प्रकाश डाला है। महाकाव्य के समान विस्तृत काव्यशरीर तो खण्डकाव्य में नहीं रहता। इस कारण महाकाव्य की भाँति विस्तृत कथानक की संयोजना की गुंजाइश खण्डकाव्य में नहीं रहती। इसकी कथावस्तु अपेक्षाकृत लघु रहती है। लघुता में भी इसकी कथावस्तु अपने आप संपूर्ण एवं प्रभावशाली रहती है।

'खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैक देशानुसारि च' तथा 'लघु घटना प्राधान्यात् खण्डकाव्यमितिस्मृतम्' जैसी परिभाषाओं के अनुसार यह बात स्पष्ट हो जाती है कि खण्डकाव्य में एक ही घटना की प्रमुखता रहती है। खण्डकाव्य के लिए कथावस्तु के प्रशस्त या प्रत्यात होने की कोई आवश्यकता नहीं। अप्रशस्त कथवा काल्पनिक कथावस्तु भी खण्डकाव्य के लिए पर्याप्त है।

कथानक का विन्यास अर्थात् उसकी रूप रचना भी महत्वपूर्ण विषय है। खण्डकाव्य में कथावस्तु का विन्यास कैसे रहे, इस विषय में संस्कृत के काव्यशास्त्री प्रायः मौन ही रहे हैं। लेकिन आपने खण्डकाव्य में घटना के प्राधान्य पर अवश्य प्रकाश डाला है।[२]

हिन्दी के काव्यशास्त्रियों ने खण्डकाव्य के कथासंगठन सम्बन्धी विषय पर भी अधिक परिचर्चा की है। डा० भगीरथ मिश्र लिखते हैं --'प्रबन्ध काव्य का दूसरा भेद खण्डकाव्य या खण्डप्रबन्ध है - प्रायः जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना या दृश्य का मार्मिक

१- काव्यालंकार - भामह, १:१६:२१.
काव्यादर्श - दण्डी, १:१४:१६.
साहित्यदर्पण - विश्वनाथ, ६:३१५:३२७.

२- लघु घटना प्राधान्यात् खण्डकाव्यमितिस्मृतम्' - विश्वनाथ, प० ६, पृ० ३२६.

उद्घाटन होता है और अन्य प्रसंग संक्षेप में रहते हैं । ..... इसमें भी कथा संगठन आवश्यक है, सर्वांगता नहीं .... कथा विस्तृत नहीं होती ।"[1] अपनी परिभाषा में आपने स्पष्टतया व्यक्त किया है कि खण्डकाव्य में कथावस्तु संक्षिप्त रहती है तथा उसके संगठन की सख्त जरूरत है । कथा का संगठन खण्डकाव्य में किस प्रकार का हो, इस बात पर "हिन्दी साहित्यकोश" में निम्नलिखित अवतरण है --"खण्डकाव्य एक ऐसा पद्यबद्ध कथाकाव्य है जिसके कथानक में इस प्रकार की अन्विति हो कि उसमें अप्रासंगिक कथायें सामान्यतया अन्तर्भुक्त न हो सकें, कथा में एकांगिता "साहित्यदर्पण" के शब्दों में क्रम, आरंभ विकास, चरमसीमा और निश्चित उद्देश्य में परिणति हो ।"[2] इस में खण्डकाव्य के कथानक-विन्यास पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है । मूल कथा के क्रमिक विकास पर इस में बल रखा गया है । खण्डकाव्य की कथावस्तु आरंभ होकर, विकसित होकर, चरमसीमा को प्राप्त कर, निश्चित उद्देश्य या लक्ष्य में आकर समाप्त हो जाती है ।

हिन्दी खण्डकाव्य-विकास-परम्परा पर एक विहंगावलोकन यह स्पष्ट करने में सक्षम है कि हिन्दी के प्रारंभिक खण्डकाव्यों में कथावस्तु का प्रमुख स्थान रहा है तथा उस का विन्यास भी सुचारु रूप से हुआ है । आधुनिक काल के प्रारंभिक खण्डकाव्यों को भी यही बात है । लेकिन आधुनिक काल के परवर्ती खण्डकाव्यों में कथावस्तु का स्थान गौण सा हो गया । आधुनिक युग की वैज्ञानिक गतिविधियों व परिवेशों के बीच काव्यों में वस्तु से अधिक मनोवैज्ञानिक विचार विश्लेषणों व भावों का प्राधान्य हो गया । खण्डकाव्यों में कथावस्तु की एक हद तक उपेक्षा हुई तथा उसका स्थान क्षीण कथासंत्रियों ने ले लिया । कथावस्तु के प्राधान्य के इस ह्रास की बात केवल खण्डकाव्यों के विषय में ही नहीं आधुनिक परवर्ती अधिकांश साहित्यिक रूपों में स्पष्टतया द्रष्टव्य है ।

१- काव्यशास्त्र - डा० भगीरथ मिश्र, पृ० ६१.
२- हिन्दी साहित्यकोश : भाग १ - सं० डा० धीरेन्द्रवर्मा, पृ० २५८.

आधुनिक काल के परवर्ती समय में कथातत्व का प्राधान्य चरित्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रणों को प्राप्त हुआ । वैसे तो कथा में कथानक के साथ चरित्र भी मिला जुला रहता है । कथात्मक कलाकृति में पहले कथानक आता है या चरित्र - यह प्रश्न तो एक पहेली ही है । "जहाँ तक आदर्श का सम्बन्ध है कथानक और चरित्र परस्पर इस प्रकार गुंथे हुए होने चाहिए कि उन्हें अलग-अलग किया ही न जा सके, कथानक चरित्र से निकलता हुआ दिखाई दे तथा चरित्र कार्यव्यापार के द्वारा निर्मित जान पड़े ।"[1] यही उलझन पाश्चात्य समीक्षकों के भी सम्मुख उपस्थित है ।[2]

प्राचीन काल के खण्डकाव्यकारों ने चरित्र से अधिक प्रमुखता काव्य की कथावस्तु को ही दी है । आधुनिक युग में पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रण को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ । कथावस्तु के गौण स्थान के कारण कलाकृति का मूल्य गौण नहीं होता ।

वस्तुत: कथानक का कोई बना बनाया ढाँचा नहीं है । आधुनिक युग में कथानक की इस बंधी-बंधाई परिपाटी के विरुद्ध मौलिक प्रतिभाशाली व्यक्तियों ने उसके कृत्रिम बन्धन को तोड़ने का सफल प्रयास किया, तो सहृदयों ने उनकी मुक्तकण्ठ प्रशंसा ही की । विख्यात कवियों की ओर से कथा की क्षीण तंत्रियों पर कथात्मक काव्य-रचना हुई तो यह स्पष्ट हुआ कि कथानक का कोई निश्चित ढाँचा खड़ा नहीं किया जा सकता । "साहित्य में कथानक के विरुद्ध विद्रोह की भावना वस्तुत: उस सामान्य विद्रोह की भावना का एक अंश मात्र है, जो अन्य कलाओं के क्षेत्र में भी अब तक सार्थक समझे जाने वाले स्वीकृत रूप मात्र के प्रति जागरित हुई है ।"[3] कथानक के क्षेत्र में अधुनातन काल में यह क्रांति जो हुई

१- हिन्दी साहित्य कोश : भाग १ - सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० २०४.

२- "From the readers point of view plot and characterisation cannot be clearly distinguished in most stories for the plot(including dialogue) amounts simply to how the characters act and react:-

An introduction to literary criticism:"

Marlies K. Danziger, page: 19.

३- हिन्दी साहित्य कोश : भाग १, सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० २०४.

है वह तत्कालीन परिवेश के अनुकूल हुई है तथा यह काव्य-कला के विकास का ही द्योतक है।

चाहे, जो भी हो, कथावस्तु खण्डकाव्य का एक अपेक्षित अंग है। कथावस्तु का स्थूल रूप हो या सूक्ष्म, उसका समुचित संगठन खण्डकाव्य के रसास्वादन के लिए नितांत आवश्यक है। सूक्ष्म कथातंत्रियों वाले काव्यों में काव्यकार को उनके सफल संयोजन में अधिक सजग रहना पड़ता है। प्रबन्धत्व को बनाये रखना प्रबन्धकाव्यकार का परम कर्तव्य है। प्रबन्धकाव्य के ही अंग-खण्डकाव्य- में प्रबन्धत्व को बनाये रख कर ही कथावस्तु की नियोजना चाहिए।

खण्डकाव्य में कथावस्तु का नियोजन सर्गबद्ध तथा सर्गरहित दोनों रूपों में हो सकता है। कथा की सर्गबद्धता खण्डकाव्य का आवश्यक लक्षण नहीं है। खण्डकाव्य की कथावस्तु अपेक्षाकृत लघु रहती है। इस काव्यरूप में प्रभावान्विति अधिक रहती है। प्रभावान्विति को बनाये रखते हुए कवि अपने विषयानुकूल कथावस्तु को सर्गों में बद्ध या सर्गरहित विवरण दे सकता है। खण्डकाव्य लघु प्रबन्धकाव्य रहता है। अतः इसमें विस्तृत कथावस्तु आवश्यक नहीं। जीवन की एक मार्मिक घटना का सर्वांगपूर्ण चित्र उपस्थित करना ही खण्डकाव्य का लक्ष्य होता है। एक ही मुख्य कथा इसमें रहती है। प्रासंगिक कथाओं का इसमें प्रायः अभाव रहता है। यदि प्रमुख कथा को स्पष्ट करने के लिए प्रासंगिक कथाएं नितांत आवश्यक हैं तो जोड़ी जा सकती हैं -- प्रभावान्विति एवं प्रबन्धत्व को बनाये रखते हुए।

खण्डकाव्य की कथावस्तु के लिए प्रख्यात व प्रत्यात होने की आवश्यकता नहीं। प्रत्यात एवं कल्पित विषयों पर खण्डकाव्य रचे जाते हैं। पुराण, इतिहास आदि के ख्यात वृत्तों पर जिस कथावस्तु का संगठन होता है वही प्रत्यात है तथा कल्पना के आधार पर कवि जिस वस्तु की सृष्टि करता है वह काल्पनिक है। हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल में प्रत्यात एवं काल्पनिक कथावस्तुओं के आधार पर प्रचुर मात्रा में खण्ड-काव्य प्रणीत हुए।

प्रख्यात कथावस्तु

इसके अन्तर्गत पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथावस्तु आ जाते हैं। प्रख्यात कथा-वस्तुओं पर काव्य प्रणयन के मूल में कहीं प्रेरणाएं प्रयत्नशील रही हैं। हमारी मातृभूमि भारतभूमि का अतीत उज्ज्वल रहा है। हमारी संस्कृति का स्रोत हमारा अतीत ही है तथा देशवासी भी अपनी संस्कृति के हिमायती रहे हैं। भारतीय संस्कृति अतीत में जितनी उज्ज्वल एवं गरिमामयी रही, आधुनिक काल में उतनी ही म्लान रही। आधुनिक काल में हमारा देश विदेशियों के पंजे में पड़ गया तो हमारे देश व देशवासियों के साथ हमारी वर्त-मान संस्कृति का भी दम घुट रहा था। "विदेशी सत्ता के आगे घुल-घुल से पराभूत इस देश में अतीत का स्वर्ण, वर्तमान की दीनता-दरिद्रता में अधिक संरक्षणीय हो गया। जब तक वर्तमान की मलिनता में गौरव और वैभव सुख और समृद्धि की दिशा में अतीत का वह स्वर्णिम आदर्श प्रत्यक्ष नहीं हो जाता, तब तक वही एकमात्र गौरव आधार बना रहता है। यह एक मनोवैज्ञानिक न्याय है।"[१] हिन्दी काव्य के आधुनिक काल में व्यक्ति का आदर्श जाति, समाज व देश के लिए बलिदान की ओर ले जाने के लिए कवियों ने अपने सम्मुख एक ही कपाट को खुला रखा देखा। वह था उज्ज्वल अतीत के गौरव का वर्णन करके जन-मानस को उस ओर मोड़ना। उन्हें अपनी गरिमामयी संस्कृति के प्रति आस्था-वान बनाना। अतीत के उज्ज्वल पात्रों को आदर्श बनाकर स्वयं राष्ट्र निर्माण करने की प्रेरणा देने में समर्थ काव्य के निर्माण की ओर इस काल में कवियों का ध्यान मुड़ गया। इस के लिए उन्होंने भारतीय अतीत के उन उज्ज्वल कथा प्रसंगों को चुन लिया, जिन के चित्रण से वे सफल मनोरथ हो सके। पुराणों व इतिहास के ऐसे ही मार्मिक प्रसंगों को कवियों ने आधार बनाया तथा उसमें नये परिवेशानुकूल नवीन व्याख्याओं के साथ उपस्थित भी किया।

१- हिन्दी कविता में युगांतर - डा० सुधीन्द्र, पृ० ११७.

हिन्दी के काव्य प्रारंभ से ही पुराणों एवं इतिहासों से खूब प्रभावित रहे। अधिकांश काव्य रामायण एवं महाभारत जैसे पुराणों तथा भारतीय प्राचीन एवं नवीन इतिहास से अनुप्राणित रहे। आधुनिक काल में प्रभूत मात्रा में पौराणिक व ऐतिहासिक प्रबन्धकाव्य प्रणीत हुए। खण्डकाव्य भी अधिक संख्या में पौराणिक, ऐतिहासिक इतिवृत्तों पर विरचित हुए। आधुनिक काल में विनिर्मित खण्डकाव्यों को यदि पौराणिक, ऐतिहासिक व काल्पनिक - इन तीन भेदों में विभक्त करें तो पौराणिक खण्डकाव्यों की संख्या ही बढ़कर रहेगी।

पौराणिक कथावस्तु

प्राचीनता के प्रति मोह एवं धार्मिक श्रद्धा सदा ही पुराणों की ओर मानव के मन को आकृष्ट करते रहे हैं। भारतीय महापुराण वस्तुत: भारत के गौरवमय एवं महिमामय अतीत के हिमायती हैं। भारतीय अतीत के यशगान से पुराणों के पृष्ठ-पृष्ठ गुंजायमान हैं। इनमें रामायण तथा महाभारत का महत्व बेजोड़ है। ये दोनों महापुराण उच्चतम ज्ञान के इतने बड़े दीपस्तंभ हैं तथा इन रचनाओं में वाल्मीकि एवं व्यास दोनों कवियों ने तत्कालीन भारतीय जीवन का ऐसा सांगोपांग चित्रण उपस्थित किया है कि वे व्यक्ति-काल-देश की सीमा को लांघ कर सार्वलौकिक, सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक हयता को प्राप्त हुए। इन्हीं महाग्रंथों में भारतीय जातीय, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परम्परा की प्राणप्रतिष्ठा हुई है। यही कारण है कि युग युग में युगानुरूप परिवर्तन परिवर्धन के साथ ये ग्रंथ प्रेरणास्रोत रहे हैं।

साहित्यिक चिंतन धारा के विकास के क्षेत्र में ये पुराण ग्रंथ जिनमें रामायण तथा महाभारत प्रमुख हैं - मीलस्तंभ की भाँति रहते हैं। यह भी इसका कारण हो सकता है कि अनंतर काल में अधिकांश साहित्य इन्हीं ग्रंथों के उपजीव्य रहे। प्रभाव की दृष्टि से देखा जाय तो 'महाभारत' ही अधिक महत्वपूर्ण रहा। महाभारत में कवि ने जीवन का सर्वांगपूर्ण चित्रण उपस्थित किया है, जीवन का एक हलका सा महत्वहीन प्रसंग भी

छूट नहीं गया है । जीवन के समस्त क्षेत्रों को, उसके कोने-कोने को रचनाकार ने झांक लिया है । स्वयं रचनाकार ने इस बात पर जोर दिया है -- आपके अनुसार इसके सभी प्रसंग पुरुषार्थ के किसी न किसी वर्ग की व्यावहारिक सिद्धि हेतु आये हैं ।[1] महाभारत केवल ग्रंथ या महाकाव्य नहीं है । वस्तुत: जैसा कि सुप्रसिद्ध जर्मन पण्डित विण्टरनित्ज ने कहा है, महाभारत अपने आप में संपूर्ण एक समग्र साहित्य (whole literature) है । . . . . महाभारत उस युग की ऐतिहासिक, नैतिक, पौराणिक, उपदेशमूलक और तत्त्ववाद सम्बन्धी कथाओं का विशाल विश्वकोश है ।[2]

महाभारत के ही समान महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है -- 'रामायण' । इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की कथा के आख्यान के द्वारा मानवीय आदर्शों का प्रोद्घाटन ही हुआ है । रामायण में निर्धारित 'रामराज्य' अब भी समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों व साहित्यकारों का मूलमंत्र बना हुआ है । उक्त दोनों महान् ग्रंथों -- महाभारत एवं रामायण -- में दो दिव्य पुरुषों -- कृष्ण एवं राम -- के दिव्य चरित्र का ही गायन हुआ है । 'राम और कृष्ण को आज के बुद्धिवादी युग में भी तो ईश्वरावतार ही माना जा रहा है । इनके साथ भगवान का विशेषण लगाकर श्रद्धालु अपनी श्रद्धा को व्यक्त करते हैं । आधुनिक युग में यद्यपि इन व्यक्तियों के देवत्व को मानवता का ही रूप दिया गया है परन्तु इनके प्रति मनुष्य की श्रद्धा अब भी देवानुरूप है ।'[3] आधुनिक कवियों ने इन पौराणिक पुरुषों -- उनकी कथा व चरित्र को उसी रूप में नहीं अपनाया है बल्कि उनमें युगानुरूप परिवर्तन सहित ही अपनाया है । आधुनिक युग में निर्मित पौराणिक कथावस्तुओं पर आधारित ग्रंथ तो अपने आप में मौलिक एवं आधुनिक युग के अनुरूप रंग-ढंग का रहता है । 'कविगण प्राचीन घटनाओं और चरित्रों से प्रभावित हों अथवा पुराने आख्यानों या प्रसंगों से प्रेरणा ग्रहण करें, यह तो स्वाभाविक है, परन्तु काव्यसाहित्य में पुरानी रूढ़ियों को

१- धर्मे अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् ।। - महाभारत : आदि पर्व० ६२।५३

२- हिन्दी साहित्य की भूमिका : डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ० १७३.

३- हिन्दी कविता में युगांतर : डा० सुधीन्द्र - पृ० १२७.

अपनाना कवि कल्पना के स्वातंत्र्य का बाधक ही कहा जायगा ।[१] आधुनिक कविगण पुरानी लीकों को तोड़ नितांत नूतन मार्ग पर आ गये । पौराणिक ग्रंथों के प्रभावपूर्ण अंशों को लेकर अभिनव उद्भावनाओं के साथ नवीन परिप्रेक्ष्य में पुनः सृष्टि देने का कार्य ही आधुनिक कवियों ने किया है ।

आधुनिक युग में कुछ पौराणिक खण्डकाव्य विरचित हुए । इनमें अधिकांशों का उपजीव्य 'महाभारत' ही रहा । 'रामायण' भी अनेक खण्डकाव्यों का आधार रहा । इन दो पुराणों के अतिरिक्त श्रीमद्भागवत, मार्कण्डेय पुराण, दुर्गासप्तशती जैसे पुराण ग्रंथ व उपनिषद भी खण्डकाव्यकारों के प्रेरणास्रोत रहे । इसाई धर्मग्रंथ बैबिल एवं मुसलमानी धर्म ग्रंथ कुरान के प्रसंगों को उपजीव्य बनाकर भी विरले खण्डकाव्य विरचित हुए । इस प्रसंग में आधुनिक काल में प्रणीत पौराणिक खण्डकाव्यों की कथावस्तु के स्रोत एवं उनकी विशेषताएं अवलोकनीय हैं ।

पौराणिक कथावस्तु : छायावाद पूर्वी युग के खण्डकाव्यों में

छायावाद पूर्वी युगीन खण्डकाव्यों का मतलब आधुनिक प्रारंभिक खण्डकाव्यों से है । द्विवेदी युग से ही आख्यानक काव्यों की परम्परा चली है, जो पौराणिक आधार को लिये हुए हैं । आधुनिक काल के प्रारंभ से ही पुराणों के प्रति मोह कविगणों पर प्रकट हो चले थे । भारतेन्दु काल में इसके लिए अधिक गुंजाइश नहीं थी । --'भारतेन्दुकाल के कवि पर मानसिक संस्कार अतीत की काव्यनिधि का था, परन्तु उस पर वर्तमान की सामाजिक यथार्थता का भी पुट था । सामाजिक यथार्थ ऐसे ज्वलंत रूप में उनके दृष्टिपथ में आया कि वे सहसा अतीत की ओर न झांक सके ।'[२] इस समय भी कुछ कवियों ने पौराणिक कथा में हाथ लगाया और उसे ब्रजभाषा में गाया । जगन्नाथदास रत्नाकर कृत 'हरिश्चन्द्र' खण्डकाव्य इसका उज्ज्वल उदाहरण है । इस काल में ब्रजभाषा में श्रीधर

१- आधुनिक साहित्य : नन्ददुलारे वाजपेयी - पृ० १७.

२- हिन्दी कविता में युगांतर : डा० सुधीन्द्र - पृ० २१६.

पाठक ने `ऋतुसंहार` का अनुवाद किया तथा देवीप्रसाद पूर्ण जी ने `मेघदूत` का सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किया । ये सब प्रकाशित में थे । श्रीमद्भागवत के अंशों का भी कन्हैयालाल पोद्दार जी ने अनुवाद प्रस्तुत किया ।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इस ओर अधिक ध्यान दिया । कुमारसंभव और मेघदूत के आधार पर आपने `कुमारसंभव सार` व `हिन्दी मेघदूत` की रचना की । द्विवेदी जी की `सरस्वती` ने भी इस क्षेत्र में अधिक योगदान दिया । `सरस्वती` की प्रेरणा का प्रतिपादन करते हुए डा० सुधीन्द्र लिखते हैं -- `पौराणिक आख्यान पूर्ण कविता का युग के सिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा आदि की चित्रकला से भी सारकालिक सम्बन्ध देखा जा सकता है । सन् १९०० से ही श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित `सरस्वती` में देश के सिद्ध चित्रकार राजा रविवर्मा की कला प्रदर्शित हुई ।`[१] उन चित्रों में प्रदर्शित भाव व प्रसंग पर द्विवेदी जी ने स्वयं परिचयात्मक कविताएं लिखीं । पौराणिक चित्रों में पौराणिक घटना सूचक इतिवृत्त भी खड़ी बोली कविता में दिया जाने लगा । मैथिलीशरण गुप्त भी पौराणिक कथाओं से आकृष्ट होकर तद्विषयक आख्यानक कविताओं की रचना करने लगे । आपकी समर्थ लेखनी ने `उत्तरा से अभिमन्यु की विदा; `अर्जुन और उर्वशी; `राधा-कृष्ण की आंसूमिलौनी` `शकुन्तला पत्र लेखन; `कुन्ती और कर्ण``विरहिणी सीता` जैसी आख्यानक कविताओं को जन्म दिया । आख्यानक कविताओं से आगे बढ़कर गुप्त जी ने पौराणिक इतिवृत्तों के आधार पर प्रबन्ध काव्यों का भी सृजन किया ।

श्री मैथिलीशरण गुप्त जी कृत खड़ी बोली के सर्वप्रथम खण्डकाव्य `जयद्रथ वध` को सर्वप्रथम पौराणिक खण्डकाव्य होने का श्रेय भी प्राप्त है । इसके अतिरिक्त आपके द्वारा तथा अन्य कवियों के द्वारा अनेकानेक खण्डकाव्य विरचित हुए । आगे सन् १९२० तक विरचित पौराणिक खण्डकाव्यों की कथावस्तु पर विचार होगा ।

१- हिन्दी कविता में युगांतर - डा० सुधीन्द्र - पृ० १२०.

आधुनिक काल के प्रारंभ होते होते सन् १८९४ ई० में 'हरिश्चन्द्र'[1] नामक खण्ड-काव्य प्रकाशित हुआ । यह तो ब्रजभाषा में विनिर्मित एक खण्डकाव्य है । सत्य हरिश्चन्द्र की कथा[2] प्रख्यात है । उसी हरिश्चन्द्र पुराण के आधार पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सत्य-हरिश्चन्द्र नामक नाटक लिखा था । सत्य हरिश्चन्द्र के आदर्श चरित्र से प्रभावित रत्नाकर जी ने हरिश्चन्द्र की कथा को खण्डकाव्य का रूप दे दिया है । हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा एवं उसकी परीक्षा की कथा ही प्रस्तुत काव्य की वस्तु है ।

हरिश्चन्द्र सम्बन्धी पौराणिक प्रख्यात आख्यान का अवलम्बन उसी प्रकार लेकर कवि ने प्रस्तुत खण्डकाव्य में कथा का संगठन किया है । काव्य में हरिश्चन्द्र एक सत्य-निष्ठ आदर्श मानव के रूप में आता है । घटना की योजना का मतलब भी हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता की महत्ता का वर्णन है । सत्य हरिश्चन्द की कथा सर्वदेशी मानवमात्र के लिए आदर्श रूप रहा है । खण्डकाव्य की कथा के चयन का लक्ष्य भी हरिश्चन्द्र की उज्ज्वल चारित्रिक महत्ता के चित्रण करके भारतवासियों को अपने उज्ज्वल अतीत की सांस्कृतिक महिमा से अवगत कराना रहा है । खण्डकाव्य की कथा की दृष्टि से यह अनुयोज्य ही है । हरिश्चन्द्र के जीवन की सत्यवादिता के प्रसंग को प्रकट करने में यह घटना सचमुच सफल निकली है ।

'जयद्रथवध' की कथा-वस्तु 'महाभारत' पर आधारित है --

हतेऽभिमन्यौ क्रुद्धेन तत्र पार्थेन संयुगे ।
अक्षौहिणीः सप्त हत्वा हतो राजा जयद्रथः ॥[3]

महाभारत में द्रोणपर्व के अन्तर्गत अध्याय बयासी से एक सौ छियालीस तक इस कथा का वर्णन हुआ है । प्रस्तुत कथा को अपनी मौलिक उद्भावनाओं से अधिक उर्वर एवं प्रभाव-शाली बनाकर आपने इसे खण्डकाव्य के उचित बनाया है । पुत्र-शोकार्त अर्जुन के द्वारा पुत्र-घाती जयद्रथ के वध करने की घटना इसमें वर्णित है ।

१- हरिश्चन्द्र : श्री जगन्नाथदास रत्नाकर.
२- देवीभागवत, सप्तम स्कन्ध.
३- जयद्रथ वध - श्री मैथिलीशरण गुप्त.

पुरानी कथावस्तुओं के नवीन युग के अनुरूप बुद्धिवादी परिवर्तन के साथ प्रस्तुत करने की परम्परा इस काल में इतनी विकसित नहीं हुई थी। एक तरह से गुप्त जी ने प्रस्तुत खण्डकाव्य में अभिमन्युवध तथा जयद्रथ वध सम्बन्धी महाभारतीय आख्यान का पुनराख्यान ही किया है। ". . . . चरित्रों की अलौकिकता का कुछ स्वरूप अब भी शेष था।"[1] प्रस्तुत काव्य में यत्र-तत्र कवि की मौलिक उद्भावनाएँ भी काम करती हैं। महाभारत में अन्य महारथियों के अभाव में युधिष्ठिर के द्वारा चक्रव्यूह भेदन का भार अभिमन्यु को देने का वर्णन है।

गुप्त जी ने इस जगह मौलिक उद्भावना का उपयोग किया है। गुप्त जी का अभिमन्यु स्वयं व्यूह-भेदन के लिए जाने की अभिलाषा प्रकट करता है।[2] काव्य में अनेक मार्मिक प्रसंगों का हृदयहारी वर्णन हुआ है। उत्तरा अभिमन्यु संवाद अभिमन्यु का शवदाह आदि कथा के मार्मिक प्रसंग हैं। महाभारतीय कथा के एक ही अंश को लेकर कविवर गुप्त जी ने अपने खण्डकाव्य के लिए कथा निरूपित की है।

`द्रौपदी चीर हरण` तथा `अभिमन्यु का आत्मबलिदान` नामक खण्डकाव्यों की कथावस्तुएँ भी क्रमशः `महाभारत` के कौरव सभा में द्रौपदी के चीरहरण प्रसंग तथा चक्रव्यूह युद्ध में वीर अभिमन्यु के आत्मत्याग के प्रसंग के आधार पर ढाली गयी हैं। आधुनिक नारी की निःसहायता का चित्र द्रौपदी के द्वारा कवि ने पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

वीर आदर्शों को अस्वतंत्र भारत के वीरों के सम्मुख प्रस्तुत करने के उद्देश्य से ही इस काल के कविगणों ने पौराणिक कथावस्तु को अपने काव्य का आधार बनाया है। अभिमन्यु, अर्जुन आदि वीरता के प्रतिरूप हैं। अभिमन्यु ने शत्रुओं से लड़ते-लड़ते मृत्यु का वरण किया था। इन कथावस्तुओं के द्वारा भारतीय जनता को देश की स्वतंत्रता हेतु वीरता

१- आधुनिक साहित्य : नन्ददुलारे वाजपेयी - पृ० ९७.

२- हे तात! तजिए सोच को, है काम ही क्या क्लेश का ?
   मैं द्वार उद्घाटित करूँगा, व्यूह-बीच प्रवेश का।
   -- जयद्रथ-वध - गुप्त जी - पृ० ५.

के साथ शत्रुओं का सामना करने तथा देशहित प्राणत्याग करने का पाठ भी खण्डकाव्यकारों ने दिया है ।

पौराणिक कथावस्तु : छायावादी युग के खण्डकाव्यों में

इसके अन्तर्गत सन् १९२० से लेकर सन् १९४५ तक प्रकाशित पौराणिक खण्डकाव्यों की कथावस्तुओं पर विचार हुआ है ।

सन् १९२१ ई० में शिवदास गुप्त कृत खण्डकाव्य 'कीचक वध' प्रकाशित हुआ जिसकी कथावस्तु 'महाभारत' पर आधारित है ।[१] महाभारत के विराट पर्व में वर्णित कीचक और सैरन्ध्री प्रसंग ही प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु का आधार है । विदर्भ के राजमहल में सैरन्ध्री के जीवन, राजा के साले कीचक की सैरन्ध्री के प्रति आसक्ति एवं अंत में भीमसेन द्वारा कामुक कीचक के वध की कथा इसमें वर्णित है । कथा के आख्यान से अधिक कवि ने इस बात के समर्थन में ध्यान दिया है कि कामुक वृत्ति वाले की अधोगति निश्चित है । नारी के पतिव्रत धर्म पर भी कवि ने प्रकाश डाला है ।

श्री रघुनन्दनलाल मिश्र द्वारा प्रणीत 'अभिमन्यु वध' की कथा का आधार भी महाभारत है । महाभारत के द्रोणपर्व के अभिमन्यु वध का प्रसंग कई प्रबन्धकारों का प्रेरणा-स्रोत रहा है ।[२] वैसे तो अभिमन्यु वध के प्रसंग पर कई खण्डकाव्य विरचित हुए हैं । अभिमन्यु के द्वारा व्यूह-भेदन के लिए प्रस्थान, उसके पूर्व व्यूह भेदन के लिए निमंत्रण देते हुए दुर्योधन के दुःसाहस का वर्णन, उत्तरा से अभिमन्यु की विदा, उनका वध एवं दाह-संस्कार आदि प्रसंगों से इसकी कथा संगठित हुई है ।

सन् १९२५ में गुप्त जी ने 'पंचवटी' खण्डकाव्य का प्रणयन किया जिसकी कथा-वस्तु रामायण कथा से गृहीत है । रामायणी कथा के लक्ष्मण-शूर्पणखा वाली घटना इस

१- महाभारत : विराटपर्व.

२- महाभारत : द्रोणपर्व.

की मूल वस्तु है । दण्डकारण्य के पंचवटी में पर्णकुटी बनाकर निवास करने वाले राम, सीता व लक्ष्मण के सम्मुख प्रणयभिक्षा मांगती हुई आने वाली शूर्पणखा तथा बाद में परेशान होकर उसके कान-नाक छेदन कर डालने वाले लक्ष्मण की कथा इसमें कही गयी है । कथा के कई मार्मिक प्रसंगों को कवि ने अपनी मौलिक उद्भावनाओं के जरिए सजा किया है । यथा -- पंचवटी में राम, लक्ष्मण के साथ शूर्पणखा का संवाद आदि ।

`शक्ति` खण्डकाव्य की कथावस्तु का आधार पौराणिक है । मार्कण्डेय पुराण के `दुर्गासप्तशती` का आख्यान ही इसका उपजीव्य है । महिषासुरमर्दिनी शक्ति की देवी दुर्गा के द्वारा शुंभ निशुंभ नामक असुरों के वध की कथा इस काव्य में है । काव्य की कथा का प्रतीकात्मक पक्ष भी प्रबल है । इस कारण प्रस्तुत काव्य के कथानक का अधिक महत्व है । संगठित जनशक्ति द्वारा भारतीय जनता की मुक्ति की ओर प्रस्तुत कथा के द्वारा कवि ने संकेत दिया है । `स्वशक्ति संगठन` पर कवि का इशारा इस काव्य की कथावस्तु की जान है जो कवि की मौलिक उद्भावना है ।

`बकसंहार` की कथावस्तु महाभारतीय कथा पर आधारित है । महाभारत में भीम के द्वारा बक के वध का जो प्रसंग है उसी को कवि ने अपने काव्य की वस्तु बनायी है । पात्रों के मनोवैज्ञानिक विचारों व चरित्र-चित्रणों को प्रकट करने लायक कवि ने कथा-वस्तु का चयन किया है । कथा के द्वारा नारी के मानसिक संघर्षों का सच्चा चित्रण हुआ है ।

गुप्त जी कृत `वनवैभव` की कथावस्तु भी महाभारतीय कथा पर आधृत है । पांडवों के वनवास वाली घटना की पृष्ठभूमि ही काव्यवस्तु है । वन के भौतिक वैभव तथा पांडवों में श्रेष्ठ धर्मात्मा युधिष्ठिर के आत्मिक वैभव की झांकी देने में समर्थ हुई है काव्य

१- शक्ति - मैथिलीशरण गुप्त.

२- बकसंहार - वही.

की कथावस्तु । युधिष्ठिर की द्यूत विशारता तथा उनके आदेश पर चित्ररथ गान्धर्व के बंदी बनाये गये कौरवों का अर्जुन द्वारा छुड़ाना ही इसका कथा-प्रसंग है ।

पांडवों के अज्ञातवास के समय की एक घटना पर आधारित है -- सैरन्ध्री[१] नामक खण्डकाव्य । विराट-राजधानी पर घटनेवाली इस घटना पर इसके पूर्व भी एक खण्डकाव्य विनिर्मित हुआ -- कीचक वध । 'सैरन्ध्री' में भी कीचकवध की घटना का ही वर्णन हुआ है ।

रत्नाकर कवि कृत 'उद्धवशतक' की कथावस्तु 'भागवत' की कथा पर अवलंबित है । श्रीमद् भागवत के दशम स्कन्ध के ४६-४७ वें अध्यायों में भ्रमरगीत प्रसंग वर्णित है । इस प्रसंग पर आधारित काव्यों की एक परम्परा ही आगे चलकर निकली है । खण्डकाव्य के रूप में आधुनिक काल में सर्वप्रथम निकला है -- 'उद्धवशतक' । गोपी और उद्धव का विलक्षण संवाद ही कथा में वर्णित है । कवि ने प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु को युगानुकूल नवीन परिवर्तन के साथ ही उपस्थित किया है । उद्धव की ज्ञानगरिमा को चूर-चूर करने के उद्देश्य से ही कृष्ण उद्धव को व्रज भेजते हैं । रत्नाकर का कृष्ण व्रज से लौटकर ही निर्गुण की व्यर्थता का आख्यान सुनाने का अनुरोध करते हैं । रत्नाकर की गोपियां भ्रमर के माध्यम से उद्धव से बातें नहीं करती हैं सीधे 'ऊधो' से बातें करती हैं । नन्द-यशोदा से उद्धव की भेंट का वर्णन सूरदास व नन्ददास के भ्रमरगीतों में नहीं । भागवत की भांति रत्नाकर के 'उद्धवशतक' में इस प्रसंग की अवतारणा हुई है । कथावस्तु के द्वारा प्रेमाभक्ति की विजय की वैजयन्ती को फहराने का प्रयत्न भी कविवर ने किया है ।

'नहुष' खण्डकाव्य की कथावस्तु महाभारत के उद्योगपर्व के एक लघु उपाख्यान पर आधारित है । इसमें देवेन्द्र के पद को प्राप्त करने वाले नहुष के उत्थान व पतन का मार्मिक चित्रण किया है । प्रस्तुत खण्डकाव्य में कथा को गौण स्थान ही मिला है । नहुष के

१- सैरन्ध्री : मैथिलीशरण गुप्त.

२- नहुष : वही.

मानसिक संघर्षों का ही अधिक चित्रण काव्य में हुआ है। कहानी केवल पृष्ठभूमि के रूप में रहती है। मनोवैज्ञानिक विचारविश्लेषण ही काव्य में यत्र-तत्र-सर्वत्र गूंज उठता है। नहुष की पौराणिक कथा को युगानुरूप बौद्धिक तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण में प्रस्तुतीकरण कविवर गुप्तजी की मौलिक देन है।

महाभारत के द्रौणपर्व पर आधारित 'अभिमन्यु पराक्रम'[१] की कथावस्तु में वीर अभिमन्यु के पराक्रम एवं वीरमृत्यु की कथा का मार्मिक वर्णन हुआ है। इसके पूर्व इसी विषय पर रघुनन्दनलाल मिश्र का खण्डकाव्य 'अभिमन्यु-वध' निकला था। इन दोनों ही कथावस्तु के नवीन प्रस्तुतीकरण के द्वारा भारतीय नवयुवकों में पराक्रम, वीरता, त्याग आदि भावों को जगाने का श्रम ही कवियों ने किया है।

तत्कालीन स्वतंत्रतापूर्व भारत के लिए ऐसे ही वीर व्यक्तित्वों की आवश्यकता थी। अभिमन्यु, अर्जुन आदि के वीर पराक्रम की कथा के इस आधुनिक युग में ग्रहण करने का मूल कारण यही रहा। इस काल में उद्भूत पौराणिक खण्डकाव्यों की कथावस्तु में यह बात अवलोकनीय है कि उनमें केवल कथावस्तु का इतिवृत्तात्मक आख्यान ही नहीं हुआ है, अपितु उनका नवीन परिवेशानुकूल प्रस्तुतीकरण भी हुआ है। सैरन्ध्री, शकित, नहुष जैसे खण्डकाव्य इस तथ्य के सुस्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करने वाले हैं। इन कथावस्तुओं में अलौकिक पक्ष अत्यधिक गौण तथा लौकिक पक्ष मुख्य भी है। कालानुकूल विश्वसनीयता की महती विशेषता भी इन में विद्यमान है।

पौराणिक कथावस्तु : छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में

पौराणिक कथावस्तुओं को छायावादोत्तर युग में भी अधिक प्रश्रय प्राप्त हुआ। अनेक पौराणिक खण्डकाव्य इस युग में प्रणीत हुए।

१- अभिमन्यु-पराक्रम - देवीप्रसाद.

'महाभारत' के युद्धोपरांत की घटना की पृष्ठभूमि पर 'कुरुक्षेत्र'[1] काव्य की कथावस्तु आधारित है। केवल कथा की पृष्ठभूमि ही पौराणिक है, काव्य में कथा से अधिक युद्ध सम्बन्धी विचारों का ही प्राधान्य है। वास्तव में इस काव्य में कथा की प्रधानता न होकर विचारों की ही प्रधानता है। कविवर दिनकरजी ने अपने खण्डकाव्य में युद्ध सम्बन्धी विषय पर भीष्म एवं युधिष्ठिर के संवादों के द्वारा अपने विचार व्यक्त किये हैं। 'कुरुक्षेत्र में महाभारत के युधिष्ठिर-भीष्म-संवाद की भूमिका लेकर युद्ध की वस्तु स्थिति का उल्लेख किया गया है। महाभारत का आधार लेते हुए भी यह एक हद तक स्वतंत्र रचना है।'[2] संघर्षरत नवीन युग के अनुरूप कथावस्तु को अभिनव मोड़ देने में दिनकर जी सर्वथा सफल हुए हैं। विशेषतः कुरुक्षेत्र में उन्होंने नवयुग की नवयुवक जागृति और न्याय और समता के लिए उत्पीड़ितों की क्रांति की जोरदार आवाज़ उठायी है।

'महाभारत' का कथाप्रसंग प्रस्तुत खण्डकाव्य में केवल पृष्ठभूमि रह जाती है। द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका से समस्त विश्व त्रस्त हो गया। युद्ध के विषय पर चिंतन करने वाले जननायकों के सम्मुख इस प्रश्न ने उलझन खड़ा कर दिया कि युद्ध करना पाप है या पुण्य। युद्ध सम्बन्धी इसी उलझन को सुलझाने का प्रयास कविवर दिनकर ने प्रस्तुत काव्य में किया है। युधिष्ठिर शांतिवादियों के स्वर में बोलते हैं तथा भीष्म निर्लिप्त मन से तत्व की बातें कहते हैं तथा युद्ध की आवश्यकता की घोषणा करते हैं। सचमुच वर्तमान काल की जटिलतम समस्या है युद्ध की समस्या। इस समस्या पर प्रस्तुत काव्य में दिनकरजी ने साहसपूर्वक विचार किया है। यही मूल उद्देश्य कुरुक्षेत्र युद्ध की पृष्ठभूमि को अपने काव्य की पृष्ठभूमि के रूप में चुनने के मूल में काम करता है।

'नकुल'[3] की कथा का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व का एक छोटा सा प्रसंग है। पांडव-वनवास के अवसर पर घटित अपने चारों भाइयों व द्रौपदी की अपमृत्यु तथा उनके

१- कुरुक्षेत्र - रामधारीसिंह दिनकर.

२- आधुनिक साहित्य - नन्ददुलारे वाजपेयी, पृ० १३१.

३- नकुल - सियारामशरण गुप्त.

पुनरुज्जीवन की कथावस्तु है। महाभारतीय लघु इतिवृत्त को मौलिक प्रतिभा के बल पर कविवर सियारामशरण जी ने पुष्ट बनाया है। काव्य की कथा तो महाभारतीय प्रसंग के अनुसार ही चलती है। काव्य का सर्वप्रमुख मार्मिक प्रसंग है युधिष्ठिर द्वारा नकुल का जीवन मांगना। युधिष्ठिर के सम्मुख अपने मृत भाइयों व पत्नी के बीच में से किसी एक को जिलाने का प्रश्न उठता है तो युधिष्ठिर तुरंत उत्तर देते हैं -- नकुल को जिलाने का। यहीं से कथा में मनोवैज्ञानिक विचार जड़ जमा लेते हैं। युधिष्ठिर के इस उत्तर का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी कथा में प्रस्तुत हुआ है। छोटे भाई के लिए बड़ा भाई जैसा ही त्याग सकता है। पारिवारिक सम्बन्ध को सुदृढ़ रखने के लिए भी यह अनिवार्य है। यहीं नहीं छोटे भाई को अपनी हीनता ग्रंथि (inferiority complex) का कभी भी अनुभव नहीं होना चाहिए। कवि की कथा का आधार इसी तथ्य पर जा रहा होता है --

"छोटे के लिए बड़े से बड़ा समर्पण
किया जाय जब तभी धर्म धन का संरक्षण ।।"[1]

काव्य के कथाप्रसंग का मूलाधार तो वस्तुतः महाभारत है, लेकिन कथा के विचार कवि के अपने हैं।

'शिवपुराणम्', 'शिवमाहात्म्यम्' जैसे शिव सम्बन्धी पुराणों में वर्णित शिवजी के विषपान सम्बन्धी प्रख्यात इतिवृत्त ही 'विषपान'[2] नामक खण्डकाव्य की कथा का अवलम्ब है। लोकमंगल को ध्यान में रखकर क्षीर सागर मंथन के समय वासुकी नाग के द्वारा उगले हुए विष का पान महादेव करते हैं। यही तो ख्यातवृत्त है। द्विवेदी जी ने कथा-वस्तु में शिवजी को भवमंगल हेतु विष पीने की प्रेरणा देती हुई पार्वती का चित्रण किया है। यों कवि ने अपने खण्डकाव्य में नारी की प्रेरणादायिनी शक्ति की महत्ता का अंकन करके नवीन उद्भावना दर्शायी है।

१- नकुल - सियारामशरण गुप्त.

२- विषपान - सोहनलाल द्विवेदी

'लक्ष्मणशक्ति'[1] की कथा का उपजीव्य रामकथा का एक मार्मिक प्रसंग है। राम रावण युद्ध के समय लक्ष्मणशक्ति के विनष्ट हो जाने तथा उसकी पुनः प्राप्ति की कथा ही काव्य की विषयवस्तु है। वस्तुतः रामायणी कथा का पुनराख्यान ही प्रस्तुत काव्य में हुआ है।

'कर्ण' नामक केदारनाथ मिश्र प्रभात के खण्डकाव्य की कथावस्तु महाभारत पर आधृत है। महाभारत के एक प्रमुख पात्र-कर्ण-के विलक्षण चरित्र ने अनेकों प्रबन्धकारों को विमोहित किया है तथा कर्ण सम्बन्धी अनेक काव्य विरचित हुए हैं। महाभारतीय कथा का अनुवर्तन करते हुए भी प्रस्तुत कथा में अपनी विलक्षणता है। महाभारत के उपेक्षित पात्र कर्ण को प्रस्तुत काव्य कथा ने अमर बना दिया है। उसके चरित्र की दानशीलता तथा प्रण-पालन के उजियाले पक्ष इस कथावस्तु के बीच अपूर्व द्युति फैलाता है।

महाभारत के एक विशिष्ट प्रसंग पर आधारित है 'हिडिम्बा'[2] काव्य की कथावस्तु। हिडिम्बा सम्बन्धी महाभारतीय प्रख्यात कथा उसमें नवीन परिवर्तनों के साथ नितांत नूतन एवं मौलिक रूप में प्रस्तुत हुई है। राक्षसी हिडिम्बा की भीमसेन के प्रति आसक्ति तथा उसके पुत्र घटोत्कच की उत्पत्ति की कथा ही काव्य-विषय है। कवि ने राक्षसी हिडिम्बा की राक्षसी वृत्ति का परिष्कार करके उसे मानवीय चरित्र वाली बनाने के लिए कथा में आवश्यक परिवर्तन किये हैं। हिडिम्बा वीर भीमसेन से प्रेम की भिक्षा मांगती है। हिडिम्बा के भाई हिडिम्ब तथा भीमसेन के बीच संघर्ष होता है तथा हिडिम्ब मारा जाता है। अपने आश्रयदाता भ्राता की मृत्यु पर वह भीमसेन से अपना संरक्षण चाहती है। हिडिम्ब के दाहसंस्कार के बाद वह कुन्ती से भीम की वधू बनने की अनुमति मांगती है। जीवन भर के सहवास की विनती की अपेक्षा वह केवल एक पुत्र की चाह करती है। माता की आज्ञा पर भीम उसे ब्याह लेता है तथा हिडिम्बा का

१- लक्ष्मणशक्ति - राजाराम श्रीवास्तव.

२- हिडिम्बा - मैथिलीशरण गुप्त.

मनोरथ भी सफल हो जाता है। महाभारतीय कथा का यह परिष्कृत रूप अधिक स्वाभाविक और कालोचित निकला है।

'रश्मिरथी'[1] की कथावस्तु महाभारत से गृहीत है। रश्मिरथी कर्ण के उदात्त जीवन का एक मार्मिक चित्रण ही प्रस्तुत काव्य में हुआ है। अनेक मौलिक एवं हृदयस्पर्शी प्रसंगों की अन्विति के कारण रश्मिरथी का कथानक आकर्षक निकला है। काव्य में कर्ण की कथा उसके उज्ज्वल चरित्र को स्पष्ट करने में सर्वथा सफल सिद्ध हुई है।

श्री रागेय राघव कृत 'खण्डकाव्य 'अपाला' की कथा पौराणिक है। नारी की मौलिक छवि में विमुग्ध रावण के घमण्ड के नाश एवं नलकूबर तथा रंभा के मिलन की कथा इसका विषय है। 'उत्तर रामायण' में तथा महाभारत के वनपर्व के २८वें अध्याय में इस प्रसंग का उल्लेख हुआ है। अप्सरा रंभा की अपछवि पर विमुग्ध कुबेर वैश्रवण का पुत्र नलकूबर उसे एक दिन अपने महल निमंत्रित करते हैं। रास्ते में घमण्डी रावण उसे रोक लेता है तथा बलात्कार करता है। बाद में महादेव शिवजी के द्वारा, कैलास को अपने हाथों उठाने वाले रावण के घमण्ड को दूर करने का वर्णन है। कथांत में रंभा व नलकूबर से रावण क्षमा याचना करता है तथा नलकूबर व रंभा का मिलन भी होता है। प्रस्तुत कथा में कथा के आख्यान के साथ साथ कवि ने घमण्डी पुरुष के विनाश तथा नारी के सम्मान की बात पर जोर डाला है।

'युद्ध'[2] महाभारत के युद्ध सम्बन्धी प्रसंग पर अवलम्बित एक खण्डकाव्य है। महाभारत के युद्ध प्रसंग को पृष्ठभूमि बनाकर काव्य में कवि ने युद्ध सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त किये हैं। युद्ध के द्वारा जो भयानक विध्वंस होता है, उसका हृदयहारी चित्रण काव्य का विषय है।

१- रश्मिरथी - रामधारीसिंह दिनकर.

२- युद्ध - मैथिलीशरण गुप्त.

कैकेयी रामायण का एक पात्र है तथा उसके उपेक्षित चरित्र को उज्ज्वल बनाते हुए `कैकेयी`[1] खण्डकाव्य की कथावस्तु की सृष्टि हुई है। भरत की माता कैकेयी को केन्द्र बनाकर प्रणीत इस खण्डकाव्य में रामकथा के कतिपय प्रसंगों का युगानुकूल मौलिक आविष्करण हुआ है। कैकेयी का पश्चाताप तथा राम से क्षमा मांगने का प्रसंग उसमें हुआ है। कैकेयी के मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रण के अनुकूल कवि ने कथा में आवश्यक परिवर्तन किया है। कैकेयी के मन में उठने वाले पश्चातापयुक्त विचारों ने कथा को बहुत मार्मिक बना दिया है।

महाभारत की प्रमुख कथा के इर्द-गिर्द जो अन्य आख्यान हैं उनमें एक है - शकुन्तलोपाख्यान[2] जिसके आधार पर महाकवि कालिदास ने `अभिज्ञानशाकुन्तलम्` नाटक की रचना की है। `अभिज्ञानशाकुन्तलम्` को उपजीव्य बनाकर विनिर्मित गुप्तजी का एक खण्डकाव्य है `शकुन्तला`। शकुन्तला एवं दुष्यंत के प्रेम, विरह तथा पुनर्मिलन का वर्णन ही काव्य का विषय है। नारी की महिमा का अंकन प्रस्तुत काव्य वस्तु की विशेषता है।

`शल्य वध`[3] की कथावस्तु का आधार महाभारत है। महाभारतीय शल्य वध के प्रसंग का पुनराख्यान ही इसमें हुआ है। क्षात्रधर्म के परिपालन के लिए युद्ध को तैयार होने वाले शल्य को कवि ने कथा में मुख्य स्थान दिया है जिसमें कवि की मौलिकता दर्शनीय है।

रांगेय राघव कृत `पांचाली` खण्डकाव्य का कथानक महाभारत पर आधारित है।[4] जयद्रथ द्वारा पांचाली के हरण तथा पांडवों द्वारा उसकी मुक्ति की कथा इसमें है।

१- कैकेयी - शेषमणि शर्मा।
२- महाभारत : आदिपर्व, अध्याय ६८ से ७४ तक.
३- शल्य वध - उग्रनारायण.
४- महाभारत : वनपर्व, अध्याय २७१.

नारी की वास्तव एवं उसकी मुक्ति सम्बन्धी अनेकों मौलिक विचारों से अभिमण्डित है प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु ।

श्री गिरिजाशंकर शुक्ल `गिरीश` का `प्रयाण` नामक खण्डकाव्य श्रीमद्भागवत के एक पौराणिक प्रसंग पर अवलम्बित है । श्रीमद्भागवत में वर्णित कृष्ण-सुदामा की कथा प्राचीन काल से ही कवियों को सदा आकर्षित करती आयी है । कृष्ण-सुदामा की आदर्श मैत्री के प्रसंग को आधार बनाकर हिन्दी के भक्तिकाल में तथा उसके उपरान्त कई `सुदामा चरित` लिखे । नरोत्तमदास कृत `सुदामा चरित` इस प्रसंग पर आधारित खण्ड-काव्यों में खूब ख्याति प्राप्त है । `गिरीश` जी के `प्रयाण` का आधार भी वही कृष्ण-सुदामा की मैत्री का प्रसंग है । लेकिन `प्रयाण` पुरानी कथा का चर्वित चर्वण नहीं रह गया है । कवि ने प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु में कई मौलिक परिवर्तन किये हैं । प्रचलित प्रख्यात कथा के अनुसार सुदामा ब्राह्मण सिर्फ आर्थिक लाभ के मोह से अपनी पत्नी सुशीला द्वारा अपने बालसखा कृष्ण के पास भेजा गया था । `प्रयाण` के सुदामा को कृष्ण के पास ले जाने वाली प्रेरणायें कुछ और ही हैं जो कवि की मौलिक उद्भावनाएं हैं । उनके प्रयाण के मूल में सब से पहली प्रेरणा यही रही -- अपने परम मित्र से मिलने की इच्छा । दूसरी तो बचपन में कृष्ण के हिस्से का चना खा जाने और उससेसम्बन्ध में मिथ्या भाषण करने के अपराध-भार से विमुक्त होने की इच्छा । और एक प्रेरणा यह भी रही कि श्रीकृष्ण की ईश्वरता का अनुभव करके उनके महान् व्यक्तित्व के संपर्क से अपनी साधना को पूर्ण सफल बनाने की इच्छा ।

`प्रयाण` में सुदामा के गांव से द्वारका नगर के बीच एक महावन है जिस के पथ को पार करते समय सुदामा मार्ग भ्रष्ट एवं हिंसक जंतुओं से भयभीत होकर मूर्च्छित हो जाते हैं । उसे गुरु सांदीपन ठीक रास्ता दिखाते हैं ।[१] गुरु द्वारा दिशानिर्देशन का संकेत कविवर का अपना है । नरोत्तमदास के `सुदामा चरित` में स्वयं कृष्ण के द्वारा यह कार्य

१- प्रयाण - गिरिजादत्त शुक्ल `गिरीश`, पृ० ६०, पद्य ६३-६४.

संपन्न होता है।[१]

'प्रयाण' की कथा में परिलक्षित और एक विशेषता यह है कि इसका श्रीकृष्ण सुदामा के हाथ से प्राप्त तंदुल के तीन कण लेकर उसे तीन लोक देते हैं -- सद्बुद्धि लोक, सत्कर्म लोक एवं फल लोक। 'प्रयाण' में कृष्ण का कथन है कि सच्चे प्रेम से पूर्ण तृप्ति का अनुभव करने वे अपने पूर्ण ऐश्वर्य में से ये तीनों लोक दिया करते हैं जिसका दान किसी एक व्यक्ति को करके भी वे किसी दूसरे को रिक्त नहीं बनाते, क्योंकि इस दान को ग्रहण करने की पात्रता भी त्याग से ही आती है, संग्रह से नहीं। यों रुक्मिणी का समाधान तथा सुदामा को दिव्यप्रकाश का दान -- दोनों वे एक साथ करते हैं। 'सुदामा चरित' का कृष्ण अनजान रूप से ही सुदामा को सब कुछ धन-संपत्ति प्रदान करते हैं लेकिन प्रयाण का कृष्ण प्रकट रूप से ही अपने मित्र को सारा वैभव-विलास दे देते हैं। इसके लिए कृष्ण स्वयं सुदामा की झुग्गी की ओर प्रयाण करते हैं।

सयमुख कविवर ने 'प्रयाण' काव्य में एक पौराणिक कथा को अपनी सूक्ष्म अनुभूति व मार्मिक कला के द्वारा सुन्दर बनाया है। कथा का आदर्श वही है, कथावस्तु भी वही, लेकिन वर्णन कौशल कवि का अपना है। पुराना कथानक भी आपके हाथों मौलिक बन गया है।

'महाभारत' के एक लघु उपाख्यान पर आधारित है विदुलोपाख्यान[२] का कथानक। इसमें विदुला के द्वारा युद्ध में पराजित होकर आये हुए अपने पुत्र को उपदेशों द्वारा उद्बुद्ध

१- 'तीन दिवस चलि विप्र, दुखि उठे जब पाँय
एक ठौर सोये कहूँ घास पयार बिछाय।
अन्तरजामी आपु हरि जानि भगत की पीर
सोवत ही ठाढो किया, नदी गोमती तीर॥'
- सुदामाचरित - नरोत्तमदास (सं० कृष्णदेव शर्मा), पृ० ४७, पद २७-२८.

२- विदुलोपाख्यान - भगवतीशरण चतुर्वेदी.

करने की कथा वर्णित है। महाभारतीय उपाख्यान[१] के अनुकूल ही प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा चलती है। नवयुवकों को देश के लिए लड़ मरने की तथा देशप्रेमी बनने की प्रेरणा देने में इसकी कथा सफल निकली है।

'सती सावित्री'[२] खण्डकाव्य का कथानक महाभारतीय उपाख्यान[३] पर आधारित है तथा काव्य कथा बिना किसी परिवर्तन के इसमें वर्णित हुई है। सती सावित्री भारतीय आदर्श नारी पात्र है जो अवश्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा देने में समर्थ है। उसके सतीत्व का सुन्दर वर्णन कथा का मार्मिक पक्ष है। यमदेव या मृत्युदेव को भी अपने सतीत्व के बल पर काबू में करने वाली सती साध्वी नारी सावित्री प्रस्तुत पौराणिक कथा का सर्वस्व है।

रामायणी कथा की पृष्ठभूमि में वह्निपथ[४] खण्डकाव्य की कथावस्तु का गठन हुआ है। रावण के अवसान उसकी द्वितीय पत्नी सिंहिका के वह्नि पथ पर प्रविष्ट हो जाने वाली कथा का मार्मिक चित्रण ही काव्य का विषय है। अपने सर्वस्व रूप रावण की मृत्यु पर आकुला सिंहिका का चित्र कथा का मर्मस्पर्शी चित्र है जिसे देख सीतादेवी भी दुःखिनी हो जाती है। सिंहिका के वह्नि प्रवेश का प्रसंग भी कथा में मुख्य है। कथावस्तु से अधिक इस काव्य में मनोवैज्ञानिक विचारों का प्राधान्य हो गया है।

'दशानन'[५] का आधार रामायणी कथा है। खण्डकाव्यकार ने परम्परागत कथा को अपनाया नहीं है। आपने रामायण की पृष्ठभूमि को केवल अपनी कथा का आधार बना दिया है। पात्रों के चरित्र चित्रणों में आपने क्रांतिकारी परिवर्तन किया है जिससे

१- महाभारत : उद्योगपर्व, १३४-१३७.

२- सती सावित्री - गोपाल औदिच्य.

३- महाभारत : वनपर्व, २९३-२९९.

४- वह्निपथ - अनूपशर्मा.

५- दशानन - कैलाश तिवारी.

अनुरूप कथावस्तु में भी आपने आवश्यक परिवर्तन किये हैं। कथावस्तु अवश्य विद्रोही है। परम्परावद्ध विचारों के विरुद्ध इस काव्य में विचार उठे हैं। यों काव्यवस्तु में एक मूलता है। `दशानन` की कथा ऐसी संगठित हुई है जिसके द्वारा राम के चरित्र के दुर्बल पक्षों तथा रावण के श्रीरोचित कार्यों पर दृष्टिपात हुआ है। `दशानन` का श्रीराम अपने कार्यों पर पश्चाताप तप्त हो जाता है तथा भैया लक्ष्मण को लंकाधिराज रावण के पास भेज देते हैं। रावण भी स्वाभिमानी था, अतः उसने लक्ष्मण से बातें करने से विमुखता प्रकट की। दूसरी बार भी लक्ष्मण गया तो रावण अपने हृदय को खोलउसके सम्मुख रख देता है। रावण अपने करतूतों का कारण खुल्लमखुल्ला प्रकट करता है। अपनी प्यारी बहन सूर्पणखा का अपमान वह कैसे सह ले सकता था। इसी के बदले में उसने सीता-हरण किया। शत्रु पक्ष (रावण पक्ष) के विभीषण तथा सुग्रीव को अपने पक्ष में करके श्रीराम ने कुलद्रोहियों की पुष्टि करने का ही कार्य किया है जो भी उनके महान् चरित्र के लिए उचित नहीं ठहरता। बालि वध का कार्य भी रावण के मुताबिक राम के योग्य न रहा। राम के दूत हनुमान द्वारा किये गये लंकादहन के कार्य की आलोचना भी कथा में रावण पत्नी मंदोदरी के द्वारा हुई है। लंका में अयोध्या का राज्य करना भी रावण के अनुसार भविष्य में उपनिवेशों को जन्म देने में ही सहायक रहेगा। सचमुच राम-कथा की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर रावण को एक भले मानस के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न खण्डकाव्यकार ने अपने कथा-नियोजन के द्वारा किया है।

`महाभारत` के `आदिपर्व` में वर्णित उपाख्यान को उपजीव्य बनाकर `कच-देवयानी`[१] काव्य की कथा संगठित हुई है। कच और देवयानी की कथा महाभारत की प्रचलित कथा[२] के अनुकूल ही चलती है। लेकिन पात्रों के आन्तरिक संघर्षों के चित्रण ने कथावस्तु को नवीन युगानुकूल बनाने में समर्थ किया है। पुरुष के द्वारा प्रेम के मामले में

१- कच-देवयानी - रामचन्द्र.

२- महाभारत : आदिपर्व, अध्याय ७८.

उपेक्षा भाव स्त्री सह नहीं सकती । इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को कथा प्रकट करती है । कथा के बीच के संघर्षों का चित्रण आधुनिक नारी के समाज के प्रति विद्रोह को प्रकट करने वाला है ।

`अमृतपुत्र`[1] बैबिल कथा को आधार बनाकर हिन्दी में विरचित सर्वप्रथम हिन्दी काव्य और शायद अकेला खण्डकाव्य है । ईसाई धर्मपुराण बैबिल की कथा के अनुरूप महाप्रभु ईसा के जीवन एवं उनके चरित्र के दो मार्मिक प्रसंगों पर प्रकाश डालने वाली है काव्य की कथावस्तु । `अमृतपुत्र` में दो आख्यान हैं जो दो खण्डकाव्यों के लिए पर्याप्त हैं । प्रथम अंश की कथा `सामरी` है । बैबिल की कथा के मुताबिक ही काव्य कथा आगे बढ़ती है । सामरी के हाथों से जल मांग कर महाप्रभु ईसा पान करते हैं । उस वक्त निम्न जाति में जन्मी उस तरुणी के मन में उठने वाले विचारों के आविष्करण में कवि की मौलिकता परिलक्षित होती है । बैबिल की कथा में समारा के कुएं से पानी भरने वाली तरुणी का कोई नाम नहीं बताया गया है । प्रस्तुत काव्य में कविवर ने समारा में रहने वाली उस तरुणी कथानायिका को सामरी नाम दे दिया है ।

दूसरे आख्यान `क्रूसधर` में कथा का आख्यान एक तीर्थयात्री साइमन के मुंह से किया गया है जो उस दृश्य का मौन गवाह रहा था । बैबिल की कथा में महाप्रभु ईसा के क्रूसारोहण की घटना का जो विवरण मिलता है, उसी के रूप में इसकी कथा भी वर्णित है । साइमन के मन में उठने वाले विकार-विचारों का विश्लेषण एवं अवतरण कवि का मौलिक है ।

`कनुप्रिया`[2] की कथा प्रख्यात कृष्णकथा पर आधारित है जिसका मूलस्रोत श्रीमद्भागवत है । इस काव्य में कृष्ण एवं राधा के प्रणयव्यापारों को पृष्ठभूमि बनाकर कवि ने आधुनिक युग के स्त्री-पुरुष प्रणय सम्बन्धी तथा अन्यान्य विचारों को प्रस्तुत किया है ।

१- अमृतपुत्र - सियारामशरण गुप्त.

२- कनुप्रिया - धर्मवीर भारती.

केवल कथा की पृष्ठभूमि ही पौराणिक है । काव्य की विचारशीलता कवि की अपनी है । कृष्ण के जीवन के मार्मिक घटनाओं का संकेत उसकी कथावस्तु में राधा के मुंह से होता है ।

'दानवीर कर्ण' की कथावस्तु महाभारतीय आख्यान के कर्ण प्रसंग पर आधारित है।[1] कर्ण की दानशीलता का उज्ज्वल चित्रण ही कथा का लक्ष्य है । कर्ण सम्बन्धी प्रख्यात कथा का उसी रूप में काव्य में वर्णन हुआ है । कतिपय मुख्य प्रसंगों का मार्मिक वर्णन भी काव्य कथा के यत्र-तत्र हुआ है ।

कृष्ण कथा के एक मार्मिक प्रसंग पर आधारित है 'प्रेमविजय'[2] की कथावस्तु । पौराणिक कथा के अनुसार ही काव्य की कथा की प्रगति होती है । देवों से बाणासुर के विरोध एवं कृष्ण के द्वारा उनके बीच फिर मैत्री का पुनः स्थापन की कथा तथा बाणासुर की पुत्र उषा व कृष्ण के पुत्र अनिरुद्ध के प्रेम की विजय की कथा ही काव्य की वस्तु है । कथा में प्रेम की विजय की महत्ता का गायन हुआ है ।

'द्रौपदी'[3] काव्य का आधार महाभारत है । महाभारत की कथा के एक मार्मिक पक्ष का प्रतीकात्मक कथाभियोजन ही प्रस्तुत खण्डकाव्य में हुआ है । महाभारत के पात्रों की प्रतीकात्मक व्याख्या स्वयं महाभारत में हुई है --

"ते पंचरथमास्थाय भारत: समलंकृता: ।
भूतानीव समस्तानि राजन् वहशिरे तदा ।"[4]

द्रौपदी काव्य की पौराणिक कथा को काव्यकार ने प्रतीकात्मक रूप देकर उसे नवीन रूप में प्रस्तुत किया है । पात्रों के मानसिक संघर्ष व अन्तर्द्वन्द्वों ने काव्यकथा को मनोवैज्ञानिक बना दिया है ।

1- महाभारत, वनपर्व, अ० ३०२-३१०.

2- प्रेमविजय : सेठ गोविन्ददास ।

3- द्रौपदी : नरेन्द्रशर्मा.

4- महाभारत : शांतिपर्व १।३७.

रामायणी कथा के आधार पर 'भूमिजा'[1] की कथा सृष्टि हुई है। उसमें श्रीराम के परित्याग पर भूमिजा सीता के अपनी माता भूमि के अन्तराल में अन्तर्लीन हो जाने की कथा वर्णित है। कथा पौराणिक है, उसकी पौराणिकता को बनाये रखने वाली है लेकिन सीता तथा अन्य पात्रों के मानसिक संघर्षों के चित्रण ने कथा को युगानुरूप एवं स्वाभाविक बना दिया है। मनोवैज्ञानिक विचार विश्लेषणों के कारण काव्य-वस्तु नवीन सी प्रतीत होती है। केवल घटना ही पौराणिक लगती है।

प्रह्लाद सम्बन्धी ख्यात पौराणिक कथा के अनुरूप ही चलती है 'प्रह्लाद'[2] खण्डकाव्य का कथानक। 'पद्मपुराण' के चतुर्थ भाग के २३वीं अध्याय में यह कथा वर्णित है। प्रह्लाद की नाम् भक्ति उनके पिता हिरण्यकश्यप का विरोध, अन्त में स्वयं नरहरि रूप हरि के द्वारा हिरण्यकश्यप के वध तथा मुक्तिदान की कथा ही काव्य में वर्णित है। प्रह्लाद का महान् चरित्र काव्यवस्तु के अन्तर्गत हीरे की भाँति चमकता है।

'मार्कण्डेयपुराणम्' में देवी दुर्गा की अनन्त शक्ति का प्रतिपादन है। 'दुर्गा-सप्तशती' का आधार यही मार्कण्डेय पुराण है। 'रणचण्डी'[3] में देवी दुर्गा के माहात्म्य का वर्णन हुआ है। उसकी कथावस्तु का आधार 'दुर्गासप्तशती' के 'उत्तमचरित' का एक प्रसंग है। 'देवी भागवतम्' के पंचम स्कन्ध में भी यह प्रसंग है। प्रस्तुत काव्य की कथा में शक्ति की देवी दुर्गा के कोमल एवं कठोर पक्षों का चित्रण हुआ है। असुरों के अत्याचारों से पीड़ित देवगण देवी के श्रीचरणों में शरण लिये तो देवी ने उन्हें प्रश्रय दिया। उसी मातृ स्वरूपा देवी पर शुंभ और निशुंभ आसक्त हो गये तो देवी ने उनकी शक्ति की परीक्षा करके अपनी असीम शक्ति की घोषणा की। देवी रणचण्डी के संहार नर्तन में चण्ड के अवतार स्वरूप शुंभ निशुंभ का संहार हो गया। काव्य की कथावस्तु का गठन तो पौराणिक कथा के अनुसार ही सम्पन्न हुआ है। कथा में कवि ने यत्र-तत्र नये परिवर्तन किये

१- भूमिजा : रघुवीर शरण मित्र.

२- प्रह्लाद : विजयसिंह 'पथिक'.

३- रणचण्डी : विश्वनाथ पाठक.

है जिससे इसकी कथा पौराणिक न लगकर बीसवीं सदी की ही प्रतीत होती है। देवी रणचण्डी को आधुनिक समाज की पद्दलित नारी तथा देवी के कोमल रूप को आधुनिक कोमल नारी के रूप में चित्रित किया गया है। नारी की महान् शक्ति तथा उसके संहारकारी रूप का मार्मिक चित्रण इस कथावस्तु में सम्पन्न हुआ है। कवि ने कथावस्तु को मनोवैज्ञानिक रूप में ही प्रस्तुत किया है।

पुरूरवा एवं उर्वशी की प्रेमकथा अत्यन्त विख्यात पौराणिक कथा[१] है। इसी को आधार बनाकर महाकवि कालिदास का 'विक्रमोर्वशीयम्' विरचित हुआ है। 'उर्वशी'[२] काव्य की कथा पुरूरवा व उर्वशी के पौराणिक आख्यान पर आधारित है। पौराणिक आख्यान के एक ही मुख्य प्रसंग-प्रणय प्रसंग को पृष्ठभूमि बनाकर कवि ने अपनी खण्डकाव्य की कथावस्तु का चयन किया है। खण्डकाव्य की कथावस्तु में घटना से अधिक मानव मन का विश्लेषण ही स्पष्टतया हुआ है। कथावस्तु के द्वारा कविवर ने मानव के मन के प्रमुखतम तत्व 'काम' का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यों पौराणिक कथा-वस्तु का नवीन आविष्करण प्रस्तुत काव्य में हुआ।

रामायणी कथा का एक मुख्य प्रसंग ही 'चित्रकूट'[३] खण्डकाव्य का उपजीव्य है। 'रामायणी' कथा का जितना अंश चित्रकूट में घटता है उसी को खण्डकाव्यकार ने अपनी कथावस्तु का आधार बनाया है। चित्रकूट प्रसंग रामकथा का सचमुच एक मार्मिक प्रसंग है। चित्रकूट में श्रीराम से मिलने के लिए पश्चाताप का अनुभव करती। कैकेयी माता दूसरी रानियाँ, अयोध्यावासियों तथा भरत के साथ वहाँ उपस्थित होती है। चित्रकूट में उनके मिलन का अत्याकर्षक प्रसंग ही प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु है। कैकेयी माता श्रीराम से अपनी करनी पर पश्चाताप प्रकट करती है तथा राम को अयोध्या लौट आने की विनती

१- महाभारत - आदिपर्व, तथा देवी भागवत, प्रथम स्कन्ध.

२- उर्वशी : रामधारीसिंह "दिनकर".

३- चित्रकूट : त्रिवेदी रामानन्दशास्त्री.

करती है । श्रीराम के द्वारा उन्हें सांत्वना देने तथा अयोध्यावासियों के चित्रकूट से विदा तक की कथा काव्य की वस्तु है । चित्रकूट की कथावस्तु के सुन्दर चित्रण में काव्यकार सफल हुए हैं ।

'महाभारत' की कथा[1] को उपजीव्य बनाकर विरचित एक खण्डकाव्य है 'गुरु दक्षिणा'[2]। 'गुरुदक्षिणा' की कथावस्तु का आधार एकलव्य की गुरुदक्षिणा का मार्मिक प्रसंग है । महाभारतीय कथा के अनुसार ही काव्यकार ने द्रोणाचार्य को दक्षिणा देने वाले एकलव्य की कथा का चित्रण किया है । कथावस्तु तो महाभारतीय प्रसंग के आधार पर ही आगे बढ़ती है लेकिन कवि ने काव्य में 'एकलव्य' के पात्र को ऊपर उठाया है । उसके चरित्र की महत्ता के अंकन को मुख्य रूप से करने के लिए काव्यकार ने कथा — नियोजन में आवश्यक परिवर्तन किये हैं । निम्न कुल में जन्म लेकर, यश के उच्च-शिखर को प्राप्त करने वाले, पर उपेक्षित पात्र एकलव्य का उदात्त चरित्र प्रमुख कथा का प्राण है ।

'कौन्तेय-कथा'[3] खण्डकाव्य के कथानक का आधार महाभारत है । महाभारत के शिव-अर्जुन युद्ध का प्रसंग[4] ही प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथावस्तु है । कथा की घटनाएँ महाभारत प्रसंग के मुताबिक ही चलती हैं । कौरवों से विरुद्ध लड़कर विजय वैजयन्ती को प्राप्त करने के लिए शक्ति कमाने के उद्देश्य से अपने ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर इन्द्र-नील पहाड़ पर देवेन्द्र की तपस्या करने वाले अर्जुन की शक्ति की परीक्षा करने वाले शिवजी का चित्रण है । किरात रूप शिवजी एवं अर्जुन के बीच भीषण युद्ध होता है तथा अन्त में अर्जुन की वीरता पर संतुष्ट शिवजी उन्हें अपराजेय अस्त्र की भेंट देते हैं ।

१- महाभारत : आदिपर्व, अध्याय १३२.

२- गुरुदक्षिणा : विनोदचन्द्र पाँडेय 'विनोद'.

३- कौंतेय कथा : उदयशंकर भट्ट.

४- महाभारत : वनपर्व : अध्याय ३७-३९.

किरात-अर्जुन सम्बन्धी महाभारतीय आख्यान के अनुकूल 'कौन्तेय-कथा' में भी कवि ने कथावस्तु की संयोजना की है ।

रामायणी कथा को आधार बनाकर राम रावण युद्ध की भूमिका में निर्मित है 'संशय की एक-रात'[१] नामक खण्डकाव्य की कथावस्तु । कथा का प्रसंग कवि की मौलिक उद्भावना है । राम-रावण युद्ध के पूर्व राम के मन में उठने वाले सन्देहों की अवतारणा ही काव्यवस्तु के अत्यन्त महत्व का पक्ष है । सीतादेवी की पुनः प्राप्ति तथा धर्म की पुनः स्थापना के लिए युद्ध करने के मामले में श्रीराम के मन में कई प्रकार के सन्देह सिर उठाते हैं । दशरथ की दिव्यात्मा छायारूप में अवतीर्ण होकर अपने पुत्रों के सन्देहों का निवारण करती है । श्रीराम के मानसिक सन्देहों को दूर करने का प्रयत्न जटायु, विभीषण आदि की ओर से भी होता है । अन्त में राम के मन का सन्देह दूर हो जाता है तथा आखिर सर्वजन कल्याण हित रावण से युद्ध करने का ही वे निश्चय करते हैं । काव्य की कथावस्तु निः-सन्देह रामकाव्य परम्परा से भिन्न अस्तित्व रखने वाली है, लेकिन कथावस्तु का मौलिक एवं स्वाभाविक आविष्करण जहाँ जो हुआ है, सुदृढ़ एवं रोचक हुआ है । मनोव्यापारों के चित्रण ने कथावस्तु को मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य दे दिया है ।

रामायण[२] में श्रीराम के द्वारा पाषाणरूपिणी अहल्या के उद्धार का प्रसंग आया है । यही प्रसंग 'पाषाणी'[३] खण्डकाव्य के कथानक का आधार है । पौराणिक आख्यान में गौतम मुनि के द्वारा अपनी पत्नी अहल्या को शाप दे देने तथा आखिर श्रीराम के चरण स्पर्श से उसे शाप मोक्ष मिलने का वर्णन है । मुनि के शाप से अहल्या पाषाणी बन जाती है । 'पाषाणी' की अहल्या पाषाण नहीं बन जाती है, लेकिन मात्र उसका हृदय जड़वत् हो जाता है । यह वर्णन तो कवि की मौलिक उद्भावना है । पौराणिक

१- संशय की एक रात : श्री नरेश मेहता.

२- पाषाणी : शरणबिहारी गोस्वामी.

३- वाल्मीकि रामायण : बालकाण्ड, ४८, ४९.

आख्यान में अहल्या को पहले शाप मोक्ष मिलने का संकेत प्राप्त नहीं होता । लेकिन 'पाषाणी' में ऐसे प्रसंग की अवतारणा है । जड़ बन गयी अहल्या को महर्षि विश्वामित्र पहले ही इसकी सूचना दे देते हैं कि श्रीराम के दर्शन से उसे शाप मोक्ष मिलेगा । कवि की यह मौलिक उद्भावना नवीन युगानुकूल हुई है । इस युग में मनोवैज्ञानिक उपचार का खूब प्रचार है । महर्षि के द्वारा अहल्या को मिलने वाले इस शाप मोक्ष की सूचना सचमुच उसके मन को आश्वास देता है -- मनोवैज्ञानिक उपचार का काम देता है । सचमुच मौलिक उद्भावनाओं के बल पर कवि ने अहल्या की पौराणिक कथा को नवीन परिवेशानुकूल प्रस्तुत किया है । इस कारण यह पौराणिक कथा लौकिकता की भूमि पर पग रखती है तथा स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक भी निकली है ।

'सौमित्र'[1] खण्डकाव्य के कथानक का मूलस्रोत 'रामायण' ही है । रामायणी कथा में जिस आदर्श भाई लक्ष्मण का चित्रण हुआ है, उसी का अंकन सौमित्र की कथावस्तु में हुआ है । इस काव्य की कथावस्तु ऐसी संगठित हुई है कि रामायण के कतिपय मुख्य पात्र के मुँह से ही लक्ष्मण के उज्ज्वल चरित्र की कथा कहते हैं । लक्ष्मण की वीरता एवं सेवाभाव के मनोरम चित्र प्रस्तुत करने में समर्थ घटनाओं के आविष्करण से प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा सम्पन्न हुई है । लक्ष्मण सम्बन्धी इस काव्य के कथाप्रसंग रामायणी कथा के अनुसार ही आगे बढ़ने वाले हैं ।

'श्रीमद्भागवत' में प्रतिपादित श्रीकृष्ण एवं कुब्जा के प्रसंग पर आधृत है 'कुबरी'[2] काव्य का कथानक । कुब्जा का श्रीकृष्ण पर सुदृढ़ प्रेम प्रख्यात ही है । उसके कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम तथा प्रेम में उसके सफल मनोरथ हो जाने का कार्य ही काव्य प्रस्तुत हुआ है । कुब्जा सम्बन्धी पौराणिक आख्यान को खण्डकाव्यकार ने नितान्त मूल उद्भावनाओं के जरिए परिष्कृत एवं मौलिक बनाया है । कुबरी के मनोवैज्ञानिक विचार विश्लेषणों से हर्ष-

---

1- सौमित्र : रामेश्वरदयाल दुबे.
2- कुबरी : रामनारायण अग्रवाल.

पंद ही काव्य की कथावस्तु चमक उठती है । खण्डकाव्यकार ने कुबरी को पूर्वजन्म की शूर्पणखा माना है तथा उस उपेक्षिता नारी के अन्तर्मन का थाह भी लगाया है ।

`आत्मजयी`[1] खण्डकाव्य की कथावस्तु का मूलस्रोत `कठोपनिषद्` में वर्णित नचिकेता-यम प्रसंग है । प्रस्तुत खण्डकाव्य में पौराणिक कथावस्तु नवीन रूप में ही उपस्थित है । कठोपनिषद में नचिकेता और यम के बीच जीवन-मृत्यु के विषय पर वार्तालाप होता है तथा यम नचिकेता को मृत्यु सम्बन्धी रहस्य बता देते हैं । `आत्मजयी` की कथानक नितांत नूतन है । इसकी कथावस्तु नवीन युगानुकूल संघर्ष से युक्त है । `आत्मजयी` पिता पुत्र के संघर्ष की रोचक कहानी है । नचिकेता के पिता वाजश्रवा लौकिक पक्षपाती थे तथा पुत्र उसके विरुद्ध थे । अपने पिता द्वारा इकट्ठे किये गये अपार धन सम्पत्ति का त्याग देने वाला पुत्र नचिकेता पिता के विरुद्ध मनोवृत्ति वाला है । यों पिता पुत्र का संघर्ष दो मान्यताओं के संघर्ष का रूप धारण कर लेता है । इसकी कथावस्तु में वैभव विलास में डूबे पूंजीपतियों के विद्रोही पुत्रों का संघर्षमय जीवन चित्रण उपस्थित है । सचमुच एक पौराणिक कथानक का बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक धरातल पर नवीन आविष्करण ही `आत्मजयी` में हुआ है ।

महाभारत के `द्रोण पर्व` में वर्णित अभिमन्यु-वध का प्रसंग ही `चक्रव्यूह`[2] खण्डकाव्य के कथानक का उपजीव्य है । इस प्रसंग को उपजीव्य बनाकर पहले भी कई खण्डकाव्य विरचित हुए । महाभारत युद्ध के तेरहवें दिन आचार्य द्रोण पांडव पक्ष के किसी एक महारथी की हत्या हित चक्रव्यु की रचना करते हैं । चक्रव्यूह तोड़ने की कला में अभिज्ञ एकमात्र पांडव वीर अर्जुन की अनुपस्थिति के कारण उसका वीर पुत्र षोडष वर्षीय वीर अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदन के लिए जाने का निश्चय करता है । माता सुभद्रा तथा पत्नी उत्तरा से विदा लेकर वह चक्रव्यूह में शेर की भांति प्रवेश करता है तथा वीर मृत्यु को प्राप्त करता है । महाभारतीय कथा के अनुसार ही `चक्रव्यूह की कथा भी चलती है । वीर अभिमन्यु के पराक्रम का उज्ज्वल चित्रण कथावस्तु के विन्यास के द्वारा संपन्न हुआ है । स्वधर्म पालन

१- आत्मजयी : कुंवर नारायण.

२- चक्रव्यूह : विनोदचन्द्र पांडेय `विनोद`।

है उच्चाशय की घोषणा काव्य कथा में मंडराती है ।

'द्रोण'[1] खण्डकाव्य का उपजीव्य महाभारतीय आख्यान है ।[2] महाभारत में आचार्य द्रोण का उच्च स्थान है । उन्हीं के व्यक्तित्व एवं जीवन-संघर्षों का चित्रण ही काव्य की वस्तु है । अपने गुरु आचार्य द्रोण के अपमान करने वाले राजा द्रुपद को गुरुवर के आदेश से युद्ध में पराजित करके अर्जुन गुरु के सम्मुख ला खड़ा कर देते हैं । लेकिन उच्चाशय गुरुवर उसे क्षमा कर देते हैं । फिर तो महाभारत युद्ध के अवसर पर भी द्रोण का महत्वपूर्ण हाथ रहा । उनके ही बनाये चक्रव्यूह, अर्जुन पुत्र को यम पुरि भेज देने में समर्थ बनता है, महाभारत युद्ध के पन्द्रहवें दिन के सेनापति स्वयं गुरु बन जाते हैं तथा धृष्टद्युम्न के हाथों उनकी वीर मृत्यु होती है । महाभारत में वर्णित द्रोण कथा ही प्रस्तुत काव्य का आधार है । प्रस्तुत काव्य में द्रोण का चरित्र-चित्रण नवीन ढंग से किया है । प्रत्येक अवसर पर गुरुवर के मन में लहरें मारने वाले संघर्षों के चित्रण को काव्य कथा में उचित स्थान प्राप्त हुआ है ।

'भागवत पुराण' के प्रथम स्कन्ध में वर्णित राजा परीक्षित की कथा ही 'परीक्षित'[3] नामक खण्डकाव्य की कथा का मूलाधार है । पौराणिक कथा[4] प्रस्तुत काव्य में केवल पृष्ठभूमि का काम देती है । कथावस्तु को कवि ने नितांत नूतन रूप योजना के द्वारा अभिनव एवं मौलिक बनाया है । पौराणिक कथा के परिवर्तित मार्गों का संकेत सूत्र रूप में लेकर ही कवि ने प्रस्तुत काव्य में कथावस्तु का गठन किया है । राजा परीक्षित के शासन-काल में कलियुग का प्रवेश हो गया । अधर्म रूप कलियुग को मारने के लिए राजा ने अपनी तलवार उठायी तथा जल्दी ही कलियुग ने राजा के चरणों में पड़कर शरण की प्रार्थना की ।

१- द्रोण : रामगोपाल रुद्र.

२- महाभारत : आदिपर्व अध्याय १३०-१३७.

३- परीक्षित -- शांति भारद्वाज 'राकेश'.

४- भागवत पुराण : प्रथम स्कन्ध, अध्याय १७.

राजा ने अपने यहाँ आश्रय । माँगने वाले कलियुग को शरण दे दिया तथा उसे रहने के लिए पाँच स्थानों -- द्यूत, मद्यपान, स्त्री संग, हिंसा व स्वर्ण (धन) - को निर्धारित किया । इसी पौराणिक कथावस्तु का नवीन ढंग से रूपकात्मक आविष्करण प्रस्तुत खण्डकाव्य में हुआ है । अपनी काव्यवस्तु में कलियुग दुष्प्रवृत्तियों के प्रतीक के रूप में आया है । अपनी कथा में कवि ने यह तथ्य बताने का प्रयत्न किया है कि सत्ता, पूँजी, अनैतिकता आदि देश का कैसा भयानक विनाश कर देती है । काव्य की कथावस्तु की प्रतीकात्मक योजना ने काव्य को अलौकिकता से कठोर वास्तविकता तक ला खड़ा कर दिया है । भागवत पुराण में परीक्षित को शृंगी ऋषि के शाप से तक्षक साँप डसता है । इस प्रसंग पर 'परीक्षित्' खण्डकाव्य के रचयिता ने एक मौलिक उद्भावना का प्रयोग किया है । 'परीक्षित्' का राजा के दुर्नीति राजा आत्मग्लानि तथा जनता की विधि को मानते हुए अपनी सत्ता का त्याग कर देते हैं । वस्तुतः पौराणिक कथा, खण्डकाव्य का ढाँचा बन गयी है, मौलिक उद्भावनाओं के कारण काव्यकथा नितान्त नवीन हुई है ।

'सुवर्णा'[1] खण्डकाव्य का आधार महाभारत है । लेकिन उसका कथा प्रसंग कवि का अपना है । 'सुवर्णा' में महाभारतीय पात्र कर्ण तथा महाभारतेतर कवि के भावगत पात्र सुवर्णा की कथा का आख्यान हुआ है । अपने सन्निकटवर्ती एक मित्र से सुनी एक लोककथा ही प्रस्तुत काव्य सृजन का मूलस्रोत है । यों महाभारत के रंगमंच पर कविवर नरेन्द्रशर्मा ने एक लोककथा के सुवर्णबीज का परिणत रूप 'सुवर्णा' का कथानक बताया है । 'महाभारत' केवल कथा की पृष्ठभूमि रह जाती है । कथा की घटना मौलिक है । सुवर्ण दुर्ग के अभिमान, वीर राजा की इकलौती बेटी थी सुवर्णा । सुवर्ण दुर्ग पर चढ़ाई करने वाला कर्ण राजा को परास्त कर सुवर्णा को अपने यहाँ ले जाता है । कर्ण उसके प्रति आकर्षित होता है लेकिन पितृ हंता व सूतपुत्र कर्ण को स्वीकार करने को सुवर्णा तैयार नहीं होती । आखिर कर्ण की मृत्यु के उपरांत जबकि उसे कर्ण का ठीक परिचय प्राप्त होता है तब वह कर्ण की चिता में कूदकर आत्मसमर्पण करती है । काव्य कथा की पृष्ठभूमि महाभारत की है, कथा-वस्तु कवि की अपनी है ।

१- सुवर्णा : नरेन्द्र शर्मा.

`प्रवीर`[1] की कथावस्तु का आधार महाभारत की छोटी सी कथा है। महाभारतीय आख्यान के अनुकूल ही प्रस्तुत कथा में युवावीर प्रवीर के यज्ञाश्व को बाँध रखने तथा अर्जुन के हाथ से वीर गति को प्राप्त करने का वर्णन हुआ है। महाभारतीय कथा की मौलिक उद्भावनाओं सहित ही कवि ने प्रस्तुत किया है। युवा प्रवीर के स्वदेश प्रेम का मार्मिक चित्रण तथा उसकी जननी के द्वारा पुत्र को प्रेरणा देने वाला प्रसंग मार्के के हुए हैं।

`उत्तर जय`[2] काव्य की कथावस्तु का मूलाधार महाभारत है। महाभारतीय कथा के आखिरी भाग की भूमिका में प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथा का संगठन हुआ है। महाभारतीय कथा के प्रतीकात्मक आविष्करण ने काव्यवस्तु को एक नया रूप दे दिया है। महाभारत के अंतिम युद्ध तथा युद्ध वीरों के देहत्याग के प्रतीकात्मक अवतरण ही काव्यवस्तु है। धर्मराज युधिष्ठिर आकाश तत्व के प्रतीक के रूप में कथावस्तु में आया है, भीम,पवन, अर्जुन आग, नकुल जल तथा सहदेव थल के प्रतीक रूप में आये हैं। कुन्ती पृथ्वीमाता का प्रतीक है, अभिमन्यु चन्द्रमा का प्रतीक, तथा अश्वत्थामा चिरंजीव है। कथावस्तु के भीतर पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण की भी गुंजाइश रही है।

`मदन-दहन` सम्बन्धी प्रसंग का जीवन्त चित्रण कविकुल चूड़ामणि कालिदास ने अपने काव्य `कुमार संभवम्` में किया है। उसी मदन-दहन वाली घटना को कविवर नागार्जुन ने अपने खण्डकाव्य की[3] कथावस्तु बनायी है। शिव की तपस्या में विघ्न डालने वाले मदन को अपनी क्रोधाग्नि में शिवजी भस्मीभूत कर देते हैं। उस समय यह आकाशवाणी सुनायी देती है कि मदन भस्म नहीं हो सकता, वह अंकुर रूप में सर्वत्र वर्तमान रहेगा। कथावस्तु के मुख्य प्रसंग हैं --

मदन-दहन तथा मदन पत्नी रति का विलाप। वस्तुतः इस खण्डकाव्य में मदन दहन वाली घटना का उसी प्रकार वर्णन हुआ है। इस प्रसंग की मूलस्रोत वाल्मीकि रामायण[4] में है।

१- प्रवीर : केदारनाथ मिश्र प्रभात.

२- उत्तर जय : नरेन्द्र शर्मा.

३- भस्मांकुर : नागार्जुन.

४- वाल्मीकि रामायण : बालकाण्ड, अध्याय २३.

समग्रत: विचार करने पर ज्ञात होगा कि हिन्दी के अधिकांश खण्डकाव्यों की कथावस्तुएं पौराणिक आधार को ली हुई हैं । पुराणों से प्रभावित खण्डकाव्यों पर विचार करें, तो स्पष्टत: परिलक्षित होगा कि महाभारत के आख्यान व उपाख्यानों ने ही खण्डकाव्यकारों को अधिक प्रभावित किया है । `रामायण` की कथा से भी कई कवि प्रभावित रहे । अन्य पुराणों में मार्कण्डेय पुराण, दुर्गासप्तशती, भागवत पुराण, श्रीमद्भागवत, शिवपुराण, भी मुख्य रहे हैं जिनसे भी आधुनिक खण्डकाव्य की कथावस्तुएं संगठित हुईं । महाभारत के विशिष्ट प्रसंगों पर एक से अधिक खण्डकाव्य विरचित हुए । मुख्यतया आदि पर्व, द्रोणपर्व, वन पर्व,[1] विराट पर्व, युद्ध पर्व आदि के मुख्य प्रसंगों पर आधारित खण्डकाव्य ही अधिक मिलते[2] हैं । महाभारत से कर्ण, अभिमन्यु आदि के चरित्रों पर कई खण्डकाव्य विरचित हुए । महाभारत के उपाख्यानों ने भी खण्डकाव्यकारों को अनुप्रेरित किया है । हरिश्चन्द्र की कथा, शकुन्तला की कथा, सत्यवान व सावित्री की कथा आदि ऐसी ही हैं ।

`रामायण` के चित्रकूट, पंचवटी, राम-रावण युद्ध आदि प्रसंगों को ही खण्डकाव्यकारों ने अपने खण्डकाव्यों की कथावस्तु के लिए चुन लिया है । रामायणी कथा पर आधारित खण्डकाव्य हैं -- पंचवटी, चित्रकूट, कानन, कैकेयी, अग्नि पथ, ऊर्मिला, सौमित्र, लक्ष्मण-शक्ति आदि ।

१- द्रोणपर्व -- जयद्रथ वध, अभिमन्यु वध, चक्रव्यूह.

२- विराटपर्व -- कीचक वध, सैरन्ध्री.

उद्योगपर्व -- नहुष

वनपर्व -- नहुष, वनवास, हिडिम्बा, पांचाली.

आदिपर्व -- कचदेवयानी, पांचाली.

३- कर्ण -- कर्ण, रश्मिरथी, दानवीर कर्ण, सुकर्ण.

अभिमन्यु -- अभिमन्युवध, अभिमन्यु पराक्रम, चक्रव्यूह.

उपर्युक्त खण्डकाव्यों की एक सामान्य विशेषता यह है कि इनमें एक ही मुख्य घटना या प्रसंग का चित्रण हुआ है। कभी-कभी पौराणिक कथावस्तुएं केवल पृष्ठभूमि या भूमिका के तौर पर रही हैं तथा कवि के मौलिक विचारों एवं उद्भावनाओं का ही प्राधान्य हो गया है। ऐसी कथावस्तु वाले खण्डकाव्य हैं -- आत्मजयी, द्रौपदी, [illegible], कनुप्रिया आदि।

इन पौराणिक कथाओं को नवीन युगानुकूल, नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयत्न अधिकांश खण्डकाव्य प्रणेताओं ने किया है। उनके हाथों पौराणिक कथावस्तु भी नितांत नूतन रूप धारण कर चुकी है। कभी-कभी कतिपय खण्डकाव्यों की कथावस्तु केवल पौराणिक आख्यान का पुनराख्यान ही रह गयी है। लक्ष्मणशक्ति, शल्य वध, प्रह्लाद भस्मांकुर आदि खण्डकाव्यों के कथानकों का यही हाल है।

पौराणिक परम्परा के अनुकूल ही अधिकांश काव्यों की कथावस्तु संगठित हुई है। 'दशानन' काव्य की कथावस्तु तो परम्परा विरुद्ध है। 'दशानन' में रावण के चरित्र को ऊपर उठाने के लिए आवश्यक परिवर्तन कथावस्तु में भी कवि ने उपस्थित किया है।

पौराणिक कथावस्तुओं को आधार बनाकर आधुनिक कवियों ने वर्तमान में अतीत के प्रक्षेपण करने का कार्य ही किया है। पौराणिक कथावस्तुओं को अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर स्वाभाविक एवं वास्तविक रूप-रंग देने का प्रयत्न भी कवियों की ओर से हुआ है, जो सराहनीय है।

ऐतिहासिक कथावस्तु

पौराणिक आख्यानों की भाँति ऐतिहासिक आख्यान भी हिन्दी काव्यों के कथानकों के उपजीव्य बने तथा आधुनिक काल में ऐतिहासिक खण्डकाव्य प्रचुर मात्रा में

प्रणीत हुए । भारत के इतिहास के सुनहले पृष्ठ भारत के अतीत की महिमामयी संस्कृति का गुणगान करने वाले हैं, जिनके मोह में आधुनिक नवीन कवि पड़ गये । भारतवर्ष के अतीत का इतिहास सचमुच हमारी संस्कृति का हिमायती है । यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के उपासक आधुनिक कवियों व साहित्यकारों ने इतिहास के गड़े हुए मुर्दों को उखाड़ने का कार्य सफलतापूर्वक किया है । प्राचीनता के प्रति मोह, जातीय गौरव, राष्ट्रप्रेम, आदर्श स्थापना एवं वीर पूजा की प्रवृत्तियों ने आधुनिक कवियों को इतिहास से इतिवृत्त ग्रहण करने की ओर प्रवृत्त किया है ।

पौराणिक उज्ज्वल पात्रों के समान, विलक्षण चरित्र वाले ऐतिहासिक व्यक्ति भी आधुनिक काल की कथावस्तु के आधार बने । आधुनिक कवियों के लिए ऐतिहासिक युगों के उच्च व्यक्तित्व जीवन की विविध दृष्टियों से प्रेरणादायक हुए । आधुनिक युग का वातावरण ही ऐसा रहा कि इस बीच ऐतिहासिक कथावस्तुओं व व्यक्तित्वों को अधिक प्रश्रय प्राप्त हुआ । आधुनिक काल के कवियों के लिए वे महापुरुष भी श्रद्धा के आलंबन बने जो अपने समय में जाति और समाज के रक्षक एवं सेवक रहे । उन्हीं महापुरुषों का व्यक्तित्व सचमुच मानवमात्र को प्रेरणाप्रद है । श्रीधर पाठक ने इस तथ्य की उद्घोषणा की थी -- "अपने इतिहास - पुराणों का मन्थन करके जो-जो हमारे जातीय उत्कर्ष के उपयुक्त प्रसंग मिलें उनके आधार पर उत्कृष्ट काव्य प्रस्तुत करने से क्या हमारी वर्तमान स्थिति के सुधार और उन्नति में विपुल साहाय्य मिलने की संभावना नहीं है ?"[१]

स्वातंत्र्यपूर्व भारतीय देशप्रेमी मन देश की गुलामी एवं अंग्रेज़ी शासन के प्रति असंतोष के कारण मन ही मन कुढ़ रहे थे । भारतवासियों में देश के प्रति प्रेम व अतीत भारत की गरिमामय संस्कृति के प्रति गौरव उत्पन्न करने हित तत्कालीन भारतीय कवि प्राचीन इतिहास की ओर मुड़े । देशप्रेम व वीरता की भावना जगाने में समर्थ कथाप्रसंगों को लेकर कवियों ने उनका अभिनव रूप में नवीन चित्रण प्रस्तुत किया । "यदि सौभाग्य से

१- पाँचवें हिन्दी साहित्य सम्मेलन में श्रीधर पाठक का सभापति-पद से अभिभाषण : हिन्दी कविता में युगांतर : सुधीन्द्र, पृ० १२९.

किसी जाति का अतीत गौरव पूर्ण हो और वह उस पर अभिमान करे तो उसका भविष्यत् भी गौरवपूर्ण हो सकता है । . . . . यदि आज हम अपने पूर्वजों के कृत्यों पर गर्व कर सकते हैं तो कौन नहीं कह सकता कि एक दिन -- चाहे वह दिन दूर ही क्यों न हो -- स्वयं भी उनका-सा गौरव प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करके उनके सच्चे वंशज कहलाने की भी चेष्टा कर सकते हैं ।"[1]

इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर आधुनिक काल के खण्डकाव्य की कथावस्तु संगठित हुई है । कतिपय खण्डकाव्य की कथावस्तुएं देश के वीर नेताओं की वीरता का आख्यान करती हैं तो कतिपय में देशहित पर मिटने वाले सपूतों का चित्रण है एवं कुछ कथा-वस्तुएं आदर्श प्रेम की कहानी कहनेवाली मिलती हैं । भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास एवं आधुनिक इतिहास के प्रसंग आधुनिक खण्डकाव्यकारों के प्रेरणास्रोत रहे हैं । इन ऐतिहासिक कथाप्रसंगों का सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक महत्त्व अक्षुण्ण रहता है । "आदर्श इतिहास-कथाएं सामयिक भूमिका में तो उन्नायकारी होती हैं परन्तु कभी-कभी समानान्तर परिस्थितियां होने पर भावी युगों में भी, प्रतीकात्मक रूप में प्रेरणा देने वाली सिद्ध होती हैं ।"[2]

स्वातंत्र्य पूर्व काल में कवियों की दृष्टि देश की मुक्ति पर अधिक रही । उन्होंने ऐतिहासिक कथावस्तुओं से प्रसंग चुनते वक्त इस ओर सजग रहे कि उनके कथा प्रसंग पाठकों को देश की मुक्ति की ओर प्रयत्नशील बनने की प्रेरणा देने वाले रहे । राष्ट्रप्रेम एवं स्वतंत्रता की भावना कूट-कूट कर भरे हुए कथाप्रसंगों का ही चित्रण तत्कालीन कवियों ने अधिकतर किया है । स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद भी ऐतिहासिक कथा-वस्तुओं पर काव्य विरचित हुए । उनका मूल लक्ष्य तो एक आदर्श सुख पूर्ण, वैभव संपन्न देश की ओर प्रयाण करने का तथा भारतीय संस्कृति की महत्ता को चिरस्थायी रखने का रहा है ।

---

१. मौर्यविजय : सियारामशरण गुप्त : भूमिका : पृ० ४.

२. हिन्दी कविता में युगांतर : डा० सुधीन्द्र : पृ० १३०.

आधुनिक युग के सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में तत्काल प्रणीत ऐतिहासिक खण्डकाव्यों की विशेष महत्ता रह जाती है।

ऐतिहासिक कथावस्तु : छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में

आधुनिक काल में सन् १९१० ई० में 'रंग में भंग' नामक खण्डकाव्य की रचना करते हुए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने ऐतिहासिक खण्डकाव्य का श्रीगणेश किया। एक ऐतिहासिक रंग-भंग की कहानी ही इसमें वर्णित है।

"जानता था भंग होगा कौन यों रस रंग का ?
ध्यान था किस को कहाँ ! इस औचकीय प्रसंग का ?"[1]

संवत् १३६३ में घटित एक ऐतिहासिक घटना पर प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथावस्तु आधारित है। भारतवर्ष के इतिहास में राजपूतों की वीरता का उज्ज्वल वर्णन हुआ है। राजपूती इतिहास अनेक वीरोचित, गाढ़ वैर मचित करने एवं गंभीर गौरवास्पद घटनाओं की रंगभूमि है। अपने लघु खण्डकाव्य के लिए भी वीर राजपूती इतिहास से कविवर गुप्त जी ने कथा-वस्तु चुनी है। प्रस्तुत कथावस्तु के जरिए कवि ने दिखाया है कि राजपूत कैसे अपनी प्रतिज्ञा पर मर मिटते हैं तथा अदूरदर्शी राजाओं की प्रतिज्ञा का कैसा दुष्परिणाम होता है। इसमें राजपूत नारियों की वीरता, स्वाभिमान तथा सती धर्म के पक्षों का भी उज्ज्वल चित्रण मिलता है।

बूँदी के राजा लालसिंह की बेटी प्रभावती का विवाह चित्तौड़ के राणा खेतल से संपन्न हुई थी। लालसिंह का दरबारी कवि आम्बी था जो अपने आश्रयदाता की स्तुति में कहा करता था —

"स्वर्ग में, पाताल में भू, आन-सा दानी नहीं,
शीश मैं अपना कटाऊँ जो मिले कोई कहीं।"

बूँदी में आये आम्बी को, उसकी गर्वोक्ति दुहराकर और उत्तर देकर कि —

---

1. रंग में भंग : मैथिलीशरण गुप्त : पृ० ७.

"रह न सकती यों किसी से एक ईश्वर के बिना,
अद्वितीय मनुष्य जग में कौन पा सकता बिना ।।"[१]

— लालसिंह ने कवि की चाटुकारी की हँसी उड़ायी । लालसिंह की खरी बातें चारणी के हृदय में चुभ गयीं और उसने झट तलवार लेकर अपना गला काट डाला । अपने कवि की यह दशा देखकर राना खेतल तमतमा उठे । अपने अपमान के बदले में बूँदी के रणक्षेत्र में जो घमासान लड़ाई हुई, उसमें राना खेतल और उनके साथी मारे गये । रंग में भंग हो गया और रानी प्रभावती सती हो गयी ।

इस कथावस्तु के अनुबन्ध में एक छोटी सी घटना का वर्णन भी काव्य में हुआ है जिसमें अपनी जान का मूल्य देकर मातृभूमि की आन रखने वाले लाला कुम्भ की वीर कथा का वर्णन है । सचमुच राजपूती इतिहास से सम्बन्धित इस खण्डकाव्य की कथा प्रेरणादायिनी मिलती है ।

सियारामशरण गुप्त जी के खण्डकाव्य "मौर्यविजय" का कथानक ऐतिहासिक है । प्रसिद्ध भारतीय ऐतिहासिक वीर चन्द्रगुप्त मौर्य की गाथा का गायन ही इसमें हुआ है । चन्द्रगुप्त मौर्य यूनान के सम्राट अलक्षेन्द्र के विरोध में आर्यावर्त का वीर प्रतिनिधि बनकर अपने शौर्य एवं पराक्रम से उठ खड़ा होता है, भारतीय गौरव का वह पुतला बन जाता है । उसी वीरता की कथा ही प्रस्तुत खण्डकाव्य का विषय है । प्रस्तुत कथावस्तु के माध्यम के जरिए कवि ने अंग्रेजों के शासनकाल में मोहनिद्रा में पड़े हुए भारतीयों को अतीत की गौरव गरिमा का गायन सुनाकर स्वदेश प्रेम की ओर उन्मुख करने का महान् कार्य किया है । यूनान के सम्राट अलक्षेन्द्र के सेनापति सेल्युकस की कन्या हेलेना को ब्याह कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत-यूनानी सम्बन्ध को सुदृढ़ भी किया है । इसका उल्लेख धार्मिक तौर पर करके कविवर ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करने का संकेत भी किया है ।

---

१. रंग में भंग : मैथिलीशरण गुप्त : पृ० १२.

'महाराणा का महत्त्व'[1] नामक खण्डकाव्य की कथावस्तु राजपूती इतिहास पर आधारित है। कथावस्तु के द्वारा कवि ने महाराणा के उदात्त चरित्र का उज्ज्वल चित्रण किया है। अब्दुल रहीम खानखाना की पत्नी को पकड़ कर सम्मुख लाने वाले अपने सैनिकों को यही आदेश महाराणा देते हैं --

". . . . . कभी न कोई क्षत्रिय चाह रे
अबला को दुःख दें, चाहे हों शत्रु की।"

महाराणा प्रताप उस मुस्लिम नारी को सम्मानपूर्वक उसके पति के पास भेजने का प्रबन्ध करते हैं। भारतीय आदर्श व्यक्ति का चरित्र इससे उज्ज्वल कैसे हो सकता है। महाराणा प्रताप ने भारतीय संस्कृति को बनाये रखने का ही कार्य किया। आर्य संस्कृति कभी नारियों का अपमान नहीं करने देती। नारी देवी के समान पूजनीया है। भारतीय राजपूत वीर सदैव ही भारतीय अपनी संस्कृति के संरक्षक रहे हैं। "स्वाधीनता-संग्राम और स्वदेश के बन्धनों से मुक्ति के संघर्ष के दिनों में कवियों को महाराणा प्रताप का ओजस्वी जीवन सहज प्राण-प्रेरक हो गया।"[2]

राजपूती इतिहास की एक मार्मिक घटना को उपजीव्य बनाकर विनिर्मित है -- 'वीर हमीर'[3] खण्डकाव्य की कथावस्तु। इसमें रणथम्भौर के सुविख्यात राजा वीर हमीर तथा अलाउद्दीन खिलजी के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन हुआ है। राजपूत राजा वीर हमीर के शौर्य का तथा राजपूत नारियों के जौहर व्रत का मार्मिक चित्र काव्य में खींचा गया है। स्वदेश रक्षा हित अपने सैनिकों को लड़ मरने के लिए आह्वान करने वाले राजपूत राजा हमीर का चरित्र, आदर्श भारतीय वीर का ही है, जो भारतीय व्यक्तियों के लिए मार्गदर्शी भी है। 'वीर हमीर' के शौर्य की गाथा का चित्रण करते हुए कवि ने भारतीय वीरों को जन्मदेश हित लड़ने का ही आह्वान किया है।

---

१. महाराणा का महत्त्व - जयशंकर प्रसाद।
२. हिन्दी कविता में युगांतर : डा० सुधीन्द्र - पृ० १३१.

इस युग में ऐतिहासिक कथाओं के ऐसे ही पटों पर खण्डकाव्य की कथाएँ संगठित हुईं, जिनसे भारतीय नवयुवकों में नवचेतना फैल सकती थी । भारतवर्ष के मुक्ति संघर्ष के दिन थे । उन दिनों अतीत के वीरों की वीरता का गायन करके कविवरों ने नवयुवकों को वीर बनने का आह्वान किया है तथा अपने देश की रक्षा के लिए आत्मबलिदान करने का संदेश भी दिया है । भारतीय महती संस्कृति की उद्घोषणा करने में सक्षम कथावस्तुओं से युक्त खण्डकाव्य भी बन सके — 'महाराणा का महत्व' ऐसा ही काव्य है ।

ऐतिहासिक कथावस्तु : छायावादी युग के खण्डकाव्यों में

छायावादी युग में भी ऐसे खण्डकाव्य प्रणीत हुए जिनके कथानक भारतीय इतिहास से सम्बन्ध रहे । छायावादी युग का परिप्रेक्ष्य भी भारतीय मुक्ति संघर्ष का रहा । बेड़ियों को काटकर निकल कर स्वदेश को स्वतंत्र बनाने के प्रयत्न में सभी राष्ट्रप्रेमी सतत प्रयत्नशील रहे । इस युग में विरचित ऐतिहासिक खण्डकाव्य भी जन-जन में राष्ट्रीयता, राष्ट्रप्रेम व आत्मगौरव के भाव भरने वाले थे । इन खण्डकाव्यों की कथावस्तु भारत की गरिमामयी संस्कृति को वहन करने वाली ही रही । भारतीय अतीत के उज्ज्वल ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को प्रकट करने में सक्षम ऐतिहासिक घटनाओं को खण्डकाव्यकारों ने अपनी कथावस्तु का उपजीव्य बनाया । समसामयिक इतिहास भी इस काल में खण्डकाव्य की वस्तु बन गयी ।

मैथिलीशरण गुप्त जी कृत 'विकट भट' खण्डकाव्य की कथावस्तु का आधार ऐतिहासिक है । भारतवर्ष में वीर शूर एवं निडर राजपूतों के इतिहास का अत्यन्त महत्व है । एक राज्यसेवी क्षात्र वंश की कथा ही प्रस्तुत खण्डकाव्य की वस्तु है । जोधपुर के राजा जियासिंह के सरदार विकट भट की विकटता की कथा इसमें वर्णित है । राजपूत सरदार के रूप में एक आदर्श भारतीय क्षात्र वीर के शौर्य की कथा को ही काव्यकार ने अपना काव्य विषय बनाया है ।

चित्तौड़ की नारियों के आत्मगौरव एवं जौहर व्रत का आख्यान करने वाला है —

'चित्तौड़ की चिता'[1] का कथानक । चित्तौड़ तो भारतवर्ष के इतिहास में राजपूती निडरता, वीरता प्रदर्शन तथा क्षत्राणी नारी धर्म के लिए खूब ख्याति प्राप्त है । वीर राजपूत राणा संग्राम सिंह तथा मुगल बादशाह बाबर के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन काव्य के प्रारंभ में है । युद्ध में अपने पति संग्रामसिंह की मृत्यु के बाद भी रानी करुणा अपने उदयसिंह के लिए जीती है । राणा की मृत्यु के उपरांत फिर से चित्तौड़ पर बहादुरशाह का युद्ध होता है तो पराजित अपने वीर सेनानियों की पत्नियों के साथ रानी भी चिता जलाकर जौहर व्रत का अनुष्ठान करती है । भारतीय राजपूतनी नारी के सतीत्व एवं आत्मगौरव का जीता-जागता चित्र प्रस्तुत कथावस्तु में उपस्थित है जो सदैव ही भारतीय नारियों के लिए प्रेरणा-प्रद एवं गौरव दायिनी है ।

समकालीन इतिहास भी प्राचीन इतिहास की भाँति खण्डकाव्य कारों के प्रेरणा-स्रोत रहे । समकालीन इतिहास के कुछ प्रसंगों को तत्कालीन कतिपय कवियों ने अपने खण्डकाव्यों का विषय बनाया । भारत अपने मुक्ति संघर्ष के यत्न में निरत था तथा भारतमाता के सभी सपूत उसके लिए प्रयत्नशील थे । कानपुर में हिन्दू-मुसलमानों के जो दंगे हुए उन्हीं का ऐतिहासिक चित्र काव्य में प्रस्तुत है । उस दंगे में अपने प्राणों की बलि चढ़ाने वाले वीर व्यक्ति श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की कथा को ही काव्य[2] का विषय बनाया है सियारामशरण गुप्त जी ने । कानपुर में हिन्दू-मुसलमान के बीच जो सांप्रदायिक दंगे छिड़ गये उनका ऐतिहासिक चित्र काव्य में प्रस्तुत है ।

'सिद्धराज'[3] खण्डकाव्य की कथावस्तु मध्यकालीन भारतीय इतिहास से सम्बद्ध है । मध्यकालीन भारतीय ऐतिहासिक वीर राजा सिद्धराज जयसिंह के पराक्रम की कथा ही काव्य-वस्तु है । मालवेश्वर, खंगार, मदनवर्माराज, सिन्धुराज आदियों को पराजित करने वाले वीर

---

1. चित्तौड़ की चिता : रामकुमार वर्मा.
2. आत्मोत्सर्ग : सियारामशरण गुप्त.
3. सिद्धराज : मैथिलीशरण गुप्त.

राजा अपने जीवन-पथ में नैतिक पतन की ओर उन्मुख हो जाते हैं और फिर पश्चाताप युक्त होकर वे विजित देशों को उनके राजाओं को वापस देकर उनके साथ पुनः मैत्री स्थापित करने की कोशिश करते हैं । यही ऐतिहासिक इतिवृत्त गुप्त जी के काव्य का विषय है । इस इतिवृत्त को प्रस्तुत करके कविवर ने मानव-जीवन के प्रकृत पक्ष के उद्घाटन का महत्वपूर्ण कार्य ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया है ।

महाकवि तुलसीदास का भारतवर्ष के इतिहास में अक्षुण्ण महत्व है । उन्हीं ऐतिहासिक महापुरुष के जीवन में घटने वाली एक महत्वपूर्ण घटना का ही चित्रण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के खण्डकाव्य 'तुलसीदास' में हुआ है । तुलसी के अपनी पत्नी के प्रति प्रेम तथा विरक्त होकर चले जाने की कथा तो बहुत ख्यात है । उसी ख्यातवृत्त की कड़ियों को पिरोकर निराला ने अपने काव्य का विषय तैयार किया है । ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में काव्य का श्रीगणेश होता है, विकास होता है तथा इति होती है । मध्यकालीन भारत के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक चित्र काव्य में उपस्थित है । मध्यकाल में मुस्लिम संस्कृति के प्रचार से भारतीय संस्कृति को जो क्षति हुई उसका चित्रण, अपने जन्मक्षेत्र राजापुर का वर्णन आदि काव्य में हुआ है । ऐतिहासिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में काव्य शुरू होता है --

"भारत के नभ का प्रभापूर्य
शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज रे - तमस्तूर्य दिङ्मंडल,
उर के आसन पर शिरस्त्राण
शासन करते हैं मुसलमान,
- - - ।"[१]

अपने जन्म प्रदेश के आसपास के ऐतिहासिक गढ़ों, व अन्य स्थानों का वर्णन भी कवि ने किया है । कथा की ऐतिहासिकता तो असन्दिग्ध है लेकिन काव्य की पृष्ठभूमि अवश्य ऐति-

---

१- तुलसीदास : निराला, पृ० ११, पद १.

हासिक है । स्मरण रखने की बात एक यह भी है कि काव्य में कथावस्तु की उतनी प्रधानता नहीं रही है, मनोवैज्ञानिक तथ्यों का निरूपण ही मुख्य हुआ है । भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी आस्था व श्रद्धा को निराला ने प्रस्तुत काव्यवस्तु के द्वारा प्रकट किया है ।

ऐतिहासिक कथावस्तु : छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में

छायावादोत्तर युग में भी ऐतिहासिक कथावस्तुओं को आधार बनाकर कुछ खण्डकाव्य विरचित हुए । आधुनिक व समसामयिक ऐतिहासिक कुछ कतिपय खण्डकाव्यों के विषय बने, तो पहले की ही भाँति प्राचीन भारतवर्ष के इतिहास के मार्मिक प्रसंगों पर भी खण्डकाव्य प्रणीत हुए । कथावस्तु का स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण की विशेषता इनमें खूब खिल-खुलकर दीखती है ।

'कारा'[१] खण्डकाव्य भारतीय आधुनिक राजनीतिक इतिहास के आधार निर्मित हुआ है । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर प्रस्तुत खण्डकाव्य की कथावस्तु अवलम्बित है । सन् १९४२ के दिनों भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रखर प्रभंजन देश भर में प्रवाहित था । अनेक देश प्रेमी व्यक्ति देश की मुक्ति के लिए स्वयं बलि होने के लिए तैयार हुए । ब्रिटिश शासकों ने उन्हें बन्दी बनाया, मातृभूमि की मुक्ति हेतु सन् ४२ में जो भीषण संग्राम हो रहा था उसमें खण्डकाव्यकार सुमन जी भी भागभाक् रहे । उन्हें भी पंजाब सरकार ने कैदी कर लिया । ब्रिटिशों की कालकोठरी की यातनाएं उन्होंने सह लीं । अंग्रेज शासकों के समय के नरक-तुल्य बन्दीगृहों का आँखों देखा चित्र काव्य में प्रस्तुत है । देश की नवजागृति का ऐतिहासिक चित्र भी काव्य-वस्तु के ज़रिए कवि ने खींचने का यत्न किया है । तत्कालीन भारतीय इतिहास का एक जीता-जागता चित्र प्रस्तुत काव्यविषय प्रस्तुत करता है ।

आधुनिक भारतीय इतिहास के संघर्ष के पृष्ठों के बीच बंगाल के एक अकाल की भी करुणा चित्र अंकित है । सन् १९४३ में बंगाल में एक भीषण अकाल पड़ा था । उसी

---

१. कारा : क्षेमचन्द्र 'सुमन'.

अकाल के चित्र को कवि ने अपने खण्डकाव्य का विषय बनाया है। केवल काव्य की पृष्ठभूमि ही ऐतिहासिक है। उसे अपने भावपूर्ण विचार-विकारों से कवि ने विकसित किया है तथा उस पर एक मार्मिक कथावस्तु की सृष्टि की है। "सन् १९४३ के प्रारंभ में बंगाल के अकाल का रोमांचकारी विवरण समाचार पत्रों में आने लगा। स्वाभाविक था कि इस विषय पर कवियों की प्रतिक्रिया दो प्रकार की हो सकती थी। एक तो बंगाल के दुर्दिन का वर्णन करना और उसके प्रति देश की सहानुभूति जगाना।..... मेरी प्रतिक्रिया दूसरे प्रकार की हुई। बंगाल की दयनीय दशा पर मैं इतना विचलित नहीं हुआ जितना उसकी नपुंसक सहिष्णुता पर, जिससे उसने मानवी स्वार्थ प्रेरित एक दानवी रीति-नीति को मार-मार कर झेल लिया।"[1] बंगाल की पुण्यभूमि के अतीत ऐतिहासिक गौरव का मार्मिक चित्र कवि ने उपस्थित किया है। बंग माता का सपूतों की भी कवि स्मृति अंकित करते हैं। बंगमाता के अकाल पर वे दुःख प्रकट करते हैं तथा उसे उद्बुद्ध होकर कर्मयुद्ध करने के लिए प्रेरणा भी दे देते हैं। वस्तुतः बंगाल के अकाल की ऐतिहासिक घटना को पृष्ठभूमि के तौर पर रखकर कवि ने अपनी मौलिक विचारधाराओं के ज़रिए अपने खण्डकाव्य के लिए कथानक निरूपित किया है।

राजपूती वीर इतिहास के आधार पर 'गोरावध'[2] की कथावस्तु संगठित हुई है। राजपूती वीर इतिहास में चित्तौड़ के दो वीरों -- गोरा और बादल -- के शौर्य का वर्णन सुवर्ण लिपियों में अंकित है। उनमें से देश स्नेह व राज स्नेह से प्रेरित होकर स्वर्ग मरण को वरण करने वाला वीर राजपूत है गोरा। अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध लड़ते लड़ते रणक्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त करने वाले गोरा की हृदयस्पर्शी कथा काव्य का विषय है। चित्तौड़ की रानी पद्मिनी के अलौकिक सौन्दर्य में विमुग्ध अलाउद्दीन छल से उसके पति रत्नसेन को अपने दरबार बुलाते हैं तथा कैद करा देते हैं। रानी, अपने वीर सैनिक गोरा तथा अन्य सैनिकों के साथ अलाउद्दीन की सेना तथा गोरा व अन्य सैनिकों का

१- बंगाल का काल : बच्चन : तृतीय संस्करण की भूमिका : अपने पाठकों से, पृ० ८-९.

२- गोरा वध : श्यामनारायण पाण्डेय

जो भीषण युद्ध हुआ उसमें वीर गोरा की वीर मृत्यु हो जाती है । गोरा-वध सम्बन्धी ऐतिहासिक ख्यात वृत्त के अनुसार ही खण्डकाव्य की कथा की योजना हुई है । वैयक्तिक एवं वीरता के महान् आदर्श का संस्थापन ही प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु का लक्ष्य है । वीर नायक गोरा की कथा सचमुच गौरवशाली है ।

भारतवर्ष के इतिहास का एक चमकीला पुतला ही है अशोक । उनका जीवनवृत्त गरिमामयी भारतीय संस्कृति की उद्घोषणा करने वाला ही रहा है । उनका कलिंग युद्ध भी इतिहास की प्रख्यात घटना है । कलिंग युद्ध के बाद, उस युद्ध के भीषण विनाश को देखकर सम्राट अशोक का जो मानसिक परिवर्तन होता है तथा वे अहिंसा के प्रचारक बन जाते हैं, उसी घटना का मार्मिक चित्रण काव्य का विषय है । सम्राट् के चरित्र की महत्ता को प्रकट करने के लिए इस मुख्य कथा के साथ महेन्द्र कथा, कुणाल कथा आदि प्रासंगिक कथाओं की भी योजना हुई है ।

कलिंग युद्ध की ऐतिहासिक घटना ही `अशोक`[१] काव्य की कथावस्तु का आधार है । ऐतिहासिक वृत्त के मुताबिक ही कथावस्तु आगे बढ़ती है । कवि ने कथा के बीच में अशोक के मानसिक संघर्षों व अन्तर्द्वन्द्वों का चित्रण किया है, जिसके कारण कथा के `अशोक के मन: परिवर्तन वाला प्रसंग` स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक बन गया । इस प्रकार के वर्णनों ने काव्यवस्तु को नवीन परिप्रेक्ष्य दे दिया है तथा कथावस्तु में एक नवीनता भी आ गयी है ।

`तप्तगृह`[२] की कथावस्तु ऐतिहासिक है । राजा बिम्बिसार एवं उनके पुत्र कोणिक से सम्बन्धित ऐतिहासिक वृत्त ही प्रस्तुत काव्य का विषय है । इस ऐतिहासिक कथा को खण्डकाव्यकार ने नवीन परिवेश में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है । मगध के सम्राट्

---

१. अशोक : रामदयाल पाण्डेय.

२. तप्तगृह : केदारनाथ मिश्र `प्रभात`।

बिंबिसार के जीवन के अंतिम दिनों के संघर्षपूर्ण दिनों का चित्रण कवि का अपना है । इस ऐतिहासिक प्राचीन कथानक को कवि ने नवीन व मौलिक उद्भावनाओं के बल पर नितांत नवीन ताजगी प्रदान की है । कथा के संगठन में कविवर ने कल्पना के साथ-साथ मनोविज्ञान का भी आश्रय ग्रहण किया है । काव्य के कथानक में राजा बिंबिसार तथा कौणिक के मन में उठने वाले संघर्षों का मनोवैज्ञानिक चित्रण है । तत्कालीन भारतवर्ष का सुन्दर राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक चित्र इसमें उपस्थित है । बौद्ध धर्म के विकास की झांकी इस में है । 'तम्सगृह' की कथावस्तु ऐतिहासिक है तथा तम्सगृह की चर्चा भी इतिहास में है । वह एक ऐसा कारागार था जो राजगृह का यातनागृह था तथा अपनी असह्य उष्णता के कारण अपने नाम को सार्थक करता था । इतिहास के मुताबिक यह कारागार-तम्सगृह -गृद्धकूट के आसपास था, जिसमें अजातशत्रु ने बिंबिसार को कैद रखा था । बिंबिसार के शासनकाल का तथा उनके जीवन के अंतिम दिनों का चित्र प्रस्तुत खण्डकाव्य का कथानक उपस्थित करता है ।

भारतवर्ष के मुस्लिम शासन काल के इतिहास से सम्बद्ध एक इतिवृत्त के आधार पर 'सिंहद्वार'[१] खण्डकाव्य की कथावस्तु की सृष्टि हुई है । महमूद गजनी तथा भारतीय वीर बाप्पा रावल के युद्ध की घटना इतिहास प्रसिद्ध है । मूर्तिभंजक गजनी भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर को लूटने के लिए बाप्पा रावल के प्रदेश से होकर गुजर रहा था । भारतीय आर्य वीर बाप्पा रावल ने अपने मन्दिर की रक्षा करने का ही दृढ़ निश्चय किया । उस प्रयत्न में गजनी की विशाल सेना के विरुद्ध लड़ते-लड़ते अस्सी वर्ष का वह वीर शेर मृत्यु गति को प्राप्त करता है । प्रस्तुत ऐतिहासिक घटना नवीन उद्भावनाओं के साथ खण्डकाव्य का कथानक बन गया है । इस कथानक में कवि ने मूर्तिभंजक गजनी, तथा समाज पर उसकी करतूत के प्रभाव का स्पष्ट चित्रण किया है । स्वयं कवि के अनुसार —"......कबीर ऐसा निराकार उपासक और दयानन्द सरस्वती ऐसा मूर्तिपूजाहीन 'आर्य समाज' का जन्मदाता

१- सिंहद्वार : जीवन शुक्ल.

पैदा न होता यदि सोमनाथ का दर्द समाज के मर्म में न खो जाता ।"[1] भारतीय वीर एवं आर्य संस्कृति के परिपालक बापारावल से सम्बन्धित यह ऐतिहासिक घटना वस्तुतः सदैव ही भारतीयों के लिए प्रेरक है ।

सन् १८५७ भारतवर्ष के इतिहास का एक मील स्तंभ ही है जब पहली बार भारतवर्ष ने अंग्रेजों से खुलकर अपना विरोध प्रकट किया । भारतवर्ष की मुक्ति के लिए भारतीयों ने राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर भीषण संग्राम शुरू किया । उस संग्राम में भाग लेने वाले एक वीर सेनानी रहे तात्या टोपे । उन्हीं की कहानी तत्कालीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत खण्डकाव्य `तात्या टोपे`[2] में चित्रित है । ऐतिहासिक घटनाओं का सदैव अनुवर्तन करने वाला रहा है काव्य का कथानक । आधुनिक भारतीय इतिहास के तत्कालीन प्रमुख इतिहास का आविष्करण इस खण्डकाव्य में हुआ है । देश की स्वतंत्रता के लिए आत्म-बलिदान करने वाले वीर तात्या टोपे का उज्ज्वल चित्रण काव्य में प्रस्तुत है ।

राजपूत इतिहास से सम्बद्ध एक घटना पर आधारित है `चंदेरी का जौहर`[3] नामक खण्डकाव्य का कथानक । चंदेरी का जौहर इतिहास प्रसिद्ध घटना है । राणा सांगा को परास्त करके सन् १५२८ ई० में मुगल बादशाह बाबर ने चंदेरी पर घेरा डाला था । चंदेरी के राजा मेदिनीराय से बाबर ने एक सन्धि का प्रस्ताव किया कि वे चंदेरी को छोड़ दें । लेकिन राजपूत वीर मेदिनीराय सहमत नहीं हुए । फलतः बाबर की विशाल वाहिनी ने चंदेरी पर चढ़ाई की । उनका सामना करते हुए मेदिनीराय स्वर्ग सिधारे । राजपूत नारियों ने अपने बच्चों को मारकर जौहर व्रत का अनुष्ठान किया । राजपूती निडरता, शूरवीरता एवं राजपूत स्त्रियों के सतीत्व, एवं जौहर व्रत का वीरता-भावना चित्र प्रस्तुत ऐतिहासिक कथानक प्रस्तुत करता है ।

१- `बप्प` (काव्य-भूमिका) : मोहन शुक्ल, पृ० ६.
२- तात्या टोपे : लक्ष्मीनारायण `कुशवाह`.
३- चंदेरी का जौहर : आनन्द मिश्र.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में 'वीरलाल पद्मधर'[1] काव्य की कथा संगठित हुई है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों का योगदान अत्यंत महत्व का है। इतिहास की दृष्टि से भी उसका महत्व कुछ गौण तो नहीं। अगस्त सन् १९४२ को कौंसी सरकार के विरुद्ध प्रयाग विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने एक जुलूस निकाला और उस जुलूस के नेता थे एक क्यौवृद्ध युवावीर सिंह। जब ब्रिटिश सिपाहियों की गोली नेता की ओर आयी तो, नेता की जान बचाते हुए पद्मधर शहीद हुए। सन् १९४२ के स्वतंत्रता संग्राम के समूचे इतिवृत्त का आलोक इस कथावस्तु में प्राप्त होता है।

'कोणार्क'[2] काव्य की कथावस्तु का आधार ऐतिहासिक है। प्रस्तुत खण्डकाव्य में उड़ीसा के कोणार्क मन्दिर सम्बन्धी ऐतिहासिक घटना का वास्तविक चित्रण हुआ है। कोणार्क मन्दिर तो इतिहास प्रसिद्ध है तथा उसके निर्माण से सम्बन्ध में जो करुणाकलित कहानी है, उस का भी ऐतिहासिक आधार है। उड़ीसा के राजा नरसिंह देव अपनी माता की इच्छापूर्ति के लिए महाशिल्पि विशु को कोणार्क के सूर्य मन्दिर के निर्माण का भार सौंप देते हैं। जबकि करोड़ प्रयत्न करने पर भी स्तम्भ के ऊपर कलश को ठीक तरह से वे खड़ा नहीं कर सके, राजा की घोषणा पर विशु का बेटा धर्मपद आता है तथा उसे ठीक कर देता है। दूसरे शिल्पी इस कारण ईर्ष्यालु हो जाते हैं तथा उसके वध करने का यत्न करते हैं। आखिर महाशिल्पी को पता चलता है कि धर्मपद और कोई नहीं अपना ही बेटा है। जब वे अपने बेटे की खोज में निकलते हैं तब तक धर्मपद कहीं विलीन हो चुके थे। कोणार्क मन्दिर के इर्द-गिर्द उसके निर्माण के समय घटित यह घटना मुखरित है। इस ऐतिहासिक घटना का यथार्थ व हृदयस्पर्शी वर्णन ही खण्डकाव्यकार ने प्रस्तुत किया है। पुरानी ऐतिहासिक घटना को नवीन रूप देने का प्रयत्न ही ऐसी एक कथावस्तु को अपने खण्डकाव्य के विषय रूप में चुनते हुए कवि ने किया है।

---

१. वीर लाल पद्मधर : तन्मय बुखारिया।

२. कोणार्क - रामेश्वरदयाल दुबे।

आधुनिक स्वातंत्र्यपूर्व भारतवर्ष के इतिहास के आधार पर 'प्राणार्पण'[1] की कथावस्तु की सृष्टि हुई है। सन् १९३१ में घटित एक ऐतिहासिक घटना ही काव्य विषय है। हिन्दू-मुस्लिम विद्रोह के अवसर पर, उसके विरोध को मिटाने व एकता को स्थापित करने के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ाने वाले श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की कथा का आख्यान काव्य में हुआ है। अंग्रेजों को भारत से निकालने का प्रयत्न भारतवासियों ने शुरू किया था। महात्मागांधी जी ने जनता में एक नवजागरण फैला दिया था। लेकिन अंग्रेजों की फूट की नीति (Devide and rule) के कारण हिन्दू एवं मुसलमानों के बीच विद्रोह छिड़ गया। हिन्दू-मुस्लिम विद्रोह की विभीषिका को मिटाने का प्रयत्न देशस्नेहियों ने शुरू किया। गणेशशंकर विद्यार्थी ने भी इसके लिए प्रयत्न किया। हिन्दू और मुसलमान के बीच एकता पुनः स्थापित करने के लिए आपने उनको एकता व मानवता का सन्देश दे दिया। इस प्रयत्न के बीच उन्हें अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े।

गणेशशंकर विद्यार्थी के आत्मबलिदान को कथावस्तु बनाकर पहले सियारामशरण गुप्त जी का एक काव्य निकला 'आत्मोत्सर्ग'। दोनों काव्यों में गुणैकता की स्पष्ट झलक है।

'स्वतंत्रता की बलिवेदी'[2] का कथानक भारतीय स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों की बलि चढ़ाने वाले अमर सपूतों की सच्ची कहानी है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारत के विभिन्न आंचलिक प्रदेशों की ओर से जो योगदान हुआ, उसी का मर्मस्पर्शी चित्रण काव्य में हुआ है। स्वतंत्रता-संग्राम में आंचलिक नर-नारियों ने जी-जान से प्रयत्न किया। ऐसे ही आंचलिक सपूतों के प्रतिनिधि के तौर पर इस खण्डकाव्य में चन्दन, मृदुला व श्यामादीदी की कथा कही गयी है। स्वतंत्रता संग्राम के जोर पकड़ लेने पर ये सभी आंचलिक पात्र मातृभूमि की स्वतंत्रता हेतु अपने प्राणों का उपहार चढ़ाकर अमर हो जाते हैं। केवल काव्य की पृष्ठभूमि ही ऐतिहासिक है। घटनाएं तो कवि की मौलिक उद्भावनाएं ही हैं।

---

१. प्राणार्पण : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

२. स्वतंत्रता की बलिवेदी : जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'

अंग्रेजों के विरुद्ध स्वदेश की रक्षा के निमित्त स्वयं लड़कर अमर गति को प्राप्त करने वाली झाँसी की लक्ष्मीबाई की कथा का भारतवर्ष के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। सन् सत्तावन के संग्राम में अपने देश की रक्षा के लिए स्वयं उसने ब्रिटिश लोगों के विरुद्ध रणक्षेत्र में जाकर भीषण रण किया। आखिर खुशी खुशी उसने मरण का भी वरण किया। रानी लक्ष्मीबाई ने स्वयं अपनी बलि देकर झाँसी एवं स्वातंत्र्य का यश बढ़ाने का महान् कार्य किया। उसका चरित्र वस्तुतः अमर है। उसी के चरित्र को आधार बनाकर 'महारानी लक्ष्मीबाई'[2] नामक खण्डकाव्य की कथा गठित हुई है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ऐतिहासिक वस्तु को आधार बनाकर विरचित खण्डकाव्य है -- 'मुक्तियज्ञ'[3]। महात्मा गान्धी जी के नेतृत्व में भारत में जिस मुक्ति का यज्ञ हुआ उसका सच्चा सारा चित्र प्रस्तुत काव्य का कथानक प्रस्तुत करता है। भारतवर्ष के इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम का महत्व अक्षुण्ण है। उस युग की घटनाओं का ऐतिहासिक यथार्थ चित्रण सर्वप्रथम इसी खण्डकाव्य में प्रस्फुटित हुआ था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी जी के अवतरित होने के प्रसंग से लेकर भारत की स्वराज्य प्राप्ति तक की ऐतिहासिक घटनाओं का सफल अंकन इसके कथानक का विषय है। वस्तुतः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सामाजिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में निर्मित हिन्दी का सर्वप्रथम खण्डकाव्य है सुमित्रानंदन पंत जी का 'मुक्तियज्ञ'। सन् १९२१ से लेकर १९४७ तक की ऐतिहासिक घटनाओं का ऐतिहासिक चित्रण काव्य में हुआ है। कल्पना का बिल्कुल त्याग इस खण्डकाव्य के कथानक की एक प्रमुख विशेषता है।

भारतवर्ष का इतिहास सुप्रसिद्ध राजपूत राणा राणाप्रताप की शूरवीरता, पौरुष एवं त्याग व बलिदान का साक्षात् साक्षी ही है। सुप्रसिद्ध भारतीय ऐतिहासिक महापुरुष राणाप्रताप के जीवन पर आधारित एक घटना ही 'अजेय पौरुष'[4] खण्डकाव्य

१-२ महारानी लक्ष्मीबाई : श्यामनारायण प्रसाद.
३- मुक्तियज्ञ : सुमित्रानंदन पंत.
४- अजेय पौरुष - शंकर सुल्तान पुरी.

का आधार है । हल्दीघाटी के युद्ध का ऐतिहासिक महत्त्व है । हल्दीघाटी में राणाप्रताप एवं अकबर के बीच जो भीषण संग्राम हुआ, उसका सच्चा वर्णन काव्य में मिलता है । अपने देश की रक्षा के लिए लड़ लड़कर अपने प्राणों की बलि करने वाले महाराणा भारतवर्ष के इतिहास का अमर पुतला बन गया है । उनकी वीरता व बलिदान की सच्ची झलक काव्य में प्राप्त है । महाराणा प्रताप के युग के भारतवर्ष का एक वास्तविक चित्र भी काव्य में प्रस्तुत हुआ है । प्राचीन ऐतिहासिक पात्रों की वीरता का वर्णन करके नवयुवा पीढ़ी के कुण्ठा, निराशा एवं दुर्बलता के भावों को मिटाने का प्रयत्न कवि ने प्रस्तुत कथानक के जरिए किया है ।

मेवाड़ के इतिहास पर आधारित है 'प्रतिपदा'[1] काव्य की कथावस्तु । फाल्गुन महीने की प्रथम प्रतिपदा के दिन मेवाड़ के वीरों के आखेट के लिए चले जाने की ऐतिहासिक प्रथा ही प्रस्तुत काव्य विषय के लिए ग्राह्य है । ऐसी ही एक ऐतिहासिक आखेट का वर्णन 'प्रतिपदा' में हुआ है । मेवाड़ के वीर भावी जयाजय के लिए उस आखेट की सफलता को शकुनाशकुन मानते थे ।[2] प्राचीन इतिहास के पृष्ठों का आश्रय देकर इसमें सार्वभौमीय सालीदास के दक्षिण करवीर दुर्जयसिंह के आखेट का वर्णन प्रस्तुत किया गया है । प्राचीन भारतीय प्रथाओं व मेवाड़ी वीरों के चरित्र का उज्ज्वल चित्रण काव्यवस्तु में हुआ है ।

आधुनिक भारतीय इतिहास के परिप्रेक्ष्य में 'कुटिया का राजपुरुष'[3] का कथानक विरचित हुआ है । विश्वशांति के लिए शांति अग्रदूत बनकर ताशकंद में जाने वाले और वहाँ पर विधि की गति से अमरगति को प्राप्त करने वाले ऐतिहासिक महापुरुष लाल-बहादुर शास्त्री की जीवनकथा ही इस काव्य की वस्तु है । स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सेनानी बनकर राष्ट्र की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील होने वाले शास्त्री जी के ऐतिहासिक चित्र का महत्त्वपूर्ण अंकन काव्य में हुआ है । स्वतंत्रता तक आपने उसके लिए प्रयत्न किया, भारत-भूमि की मुक्ति पर आपने उसके सूत्रधारकत्व का कार्य किया । मातृभूमि भारतभूमि के अमर

१. प्रतिपदा : सरनामसिंह शर्मा 'अरुण'.
२. वही (दो शब्द) पृ० २.
३. कुटिया का राजपुरुष : विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक'.

पुत्र शास्त्रीजी की भारतीय इतिहास में शाश्वत प्रतिष्ठा है । उस प्रतिष्ठा की ज्वलंत अंकन प्रस्तुत खण्डकाव्य में भी अंकित है ।

भारतवर्ष के इतिहास में मशहूर मराठा वीर शिवाजी का शीर्ष स्थान है । उन्हीं वीर शिवाजी का ऐतिहासिक चरित ही प्रस्तुत खण्डकाव्य 'शिवाजी'[1] का उपजीव्य है । शिवाजी की वीरता का वर्णन प्रस्तुत करने के साथ साथ उनकी चारित्रिक महत्ता का अंकन भी काव्य में हुआ है । बहमद की पुत्रवधु गेहरबानू को पति के पास वापस भेज देने वाला तथा अपने सैनिकों को यह ऐतिहासिक घोषणा - कि बागी नारियों पर कोई हाथ न लगाये - करने वाला शिवाजी सचमुच भारतीय संस्कृति का संरक्षक ही है । ऐतिहासिक तथ्यों को बनाये रखते हुए ही खण्डकाव्य ने प्रस्तुत काव्य की कथा का संयोजन किया है । शिवाजी एक भारतीय आदर्श वीर पुरुष है जिसके चरित का वर्णन हमेशा ही भारतवासी के शीश को ऊपर उठाने वाला है ।

ऐसे ही उदात्त ऐतिहासिक पात्रों से सम्बन्धित इतिवृत्तों को खण्डकाव्यकारों ने अपने खण्डकाव्यों का कथानक बनाया है ।

मुख्यतया आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों (ऐतिहासिक) के कथानक भारतवर्ष के इतिहास की मार्मिक घटनाओं पर ही आधारित हैं । अधिकांश खण्डकाव्यों के कथानकों के मूलस्रोत भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास है । प्राचीन इतिहास से यहाँ केवल इतना ही मतलब है कि अंग्रेजी शासन के पूर्व का इतिहास । सम्राट अशोक से सम्बन्धित 'अशोक' काव्य तथा बिंबिसार से सम्बन्धित 'राजगृह' रचित हुआ । भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजवंश मौर्य वंश के आधार पर 'मौर्य विजय' खण्डकाव्य विरचित हुआ तो राजपूत इतिहास के वीर व्यक्तित्वों के निदर्शन-स्वरूप रंग में भंग, विकट भट, वीर हमीर, महाराणा का महत्व, गोरा वध, प्रतिपदा जैसे खण्डकाव्य विरचित हुए । राजपूतनी नारियों के आत्माभिमान

१- शिवाजी : उमाकांत मालवीय.

व सतीत्व पालन के यशोगान करने वाले "चित्तौड़ की चिता, चंदेरी का जौहर" जैसे काव्य भी प्रणीत हुए । बहादुर मराठा वीर शिवाजी के महान् व्यक्तित्व व चरित्र को प्रकट करने वाला काव्य `शिवाजी` भी रचित हुआ ।

आधुनिक इतिहास भारतवर्ष के मुक्तिसंघर्ष से सम्बद्ध है । भारतवर्ष के इस नवीन इतिहास की मुख्य घटनाओं पर निर्मित खण्डकाव्यों हैं आत्मोत्सर्ग, बंगाल का काल, तांत्या टोपे, वीर लाल पद्मधर, झांसी की रानी, स्वतंत्रता की बलिवेदी मुक्तियज्ञ, कारा कुटिया के राजपुरुष आदि ।

कतिपय खण्डकाव्यों में ऐतिहासिक घटनाएं ही प्रमुखतया कथावस्तु बन गयी हैं — महाराणा का महत्त्व, मौर्य विजय, चित्तौड़ की चिता, शिवाजी, मुक्तियज्ञ आदि ऐसे ही काव्य हैं ।

कभी-कभी इतिहास केवल काव्य की पृष्ठभूमि के तौर पर रहता है । कवि कल्पना से प्रेरित मौलिक कथानकों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं। स्वतंत्रता की बलिवेदी तथा बंगाल का काल इसके उत्कृष्ट निदर्शन हैं ।

कभी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रख्यात ऐतिहासिक व्यक्तित्व की प्रख्यात कथा का वर्णन होता है — "तुलसीदास" खण्डकाव्य इसका प्रस्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करने वाला है । `कुटिया का राजपुरुष`, तांत्या टोपे, वीर लाल पद्मधर आदि काव्यों में ऐतिहासिक भूमिका पर ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के चरित ही वर्णित हुए हैं ।

ऐतिहासिक वस्तुओं को नवीन परिप्रेक्ष्यानुकूल, वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास सभी खण्डकारों की ओर से हुआ है । भारतीय इतिहास का परिचय प्राप्त करने तथा भारतीय सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों से परिचित रहने एवं भारतीय अतीत की संस्कृति से अवगत रहने के लिए ये ऐतिहासिक खण्डकाव्य उपयोगी बने हैं ।

काल्पनिक कथावस्तु

खण्डकाव्य की कथावस्तु के लिए प्रख्यात होने की अनिवार्यता नहीं। पहले तो प्रख्यात कथावस्तु ही काव्य विषय हुआ करती थी। प्रख्यात व्यक्तित्वों का ही चित्रण काव्य में होता था। प्राकृत लोगों के चरित का अंकन करना वे अनुचित समझते थे। स्वयं तुलसीदास की उक्ति रही --

"कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना।
सिर धुनि गिरा लाग पछिताना।।"[१]

मध्ययुगीन आभिजात्य की विचारधाराओं ने ही काव्य-विषय पर यह प्रतिबन्ध लगाया था। लेकिन आधुनिक युग की बौद्धिक चेतना ने इस रूढ़ि को तोड़ डाला। सर्वसाधारण की कथा भी काव्यों की वस्तु बनी। चित्र-विचित्र कल्पना के बल पर इन्द्रधनुषी प्रतिभा वाले कवियों ने काल्पनिक कथानकों पर काव्य रचे। पूर्व अनुभूतियों की पुनर्योजना से अपूर्व की अनुभूति उत्पन्न करने की क्रिया या शक्ति की कल्पना है। 'वर्तमान का अवगाहन करने वाला प्रत्यक्ष, 'अतीत' का अवगाहन करने वाली स्मृति तथा 'अनागत' का अवगाहन करने वाली कल्पना। क्षीर सागर, अमृत, स्वर्ण शृंग आदि अननुभूत पदार्थ कल्पना द्वारा ही अनुभव गम्य होते हैं। नव-मनोविज्ञान के अनुसार 'अचेतन' अनुभूतियों से भी कवि और कलाकार अपनी कृति के लिए पर्याप्त सामग्री पाते हैं। इस सामग्री का संकलन कल्पना द्वारा होता है।'[२]

आधुनिक काल में आकर काल्पनिक आख्यान काव्य-भाग में फिर प्रतिष्ठा पाने में समर्थ हो गये। अनेकों काल्पनिक कथामूलक खण्डकाव्य इस काल में विरचित हुए। उन्नीसवीं शती के अन्तिम चरण में श्रीधर पाठक के द्वारा अनुवादित प्रेमाख्यान काव्य 'एकान्तवासी योगी' ने खड़ीबोली में काल्पनिक आख्यान की परम्परा का श्रीगणेश

१- रामचरितमानस, तुलसीदास : बालकाण्ड.

२- हिन्दी साहित्य कोश : सं० धीरेन्द्र वर्मा, भाग १, पृ० २२७.

किया । गोल्ड स्मिथ कृत `हरमिट` के खड़ीबोली अनुवाद `एकांतवासी योगी` के सम्मोहक प्रेमतत्व एवं स्वच्छंदतावादी काव्यशैली ने हिन्दी कवियों को मोह लिया । `एकांतवासी योगी` का प्रेमतत्व अत्यन्त मनोरम है । उसके प्रभाव के बारे में भूमिका में ऐसा उल्लेख हुआ है कि कई लड़कियों के लिए यह अनुपम प्रेमकाव्य चिर साथी बन गया था तथा सोते वक्त भी वे उसका त्याग नहीं कर देती थीं ।[1]

"एकांतवासी योगी" का कथानक सम्मोहक है और उसका अवतरण भी मार्मिक ढंग से हुआ है । वन प्रदेश से घूमने फिरने वाले एक पथिक का मिलन एक योगी के साथ होता है । योगी उसे अपनी कुटिया में आश्रय देता है । उस पथिक की सौम्य चिन्ह देखकर योगी उससे अपने दुःख का कारण पूछ लेता है । जल्दी ही वह, अपने पुरुष-पथिक न होकर प्रेमविरहिणी नारी होने का रहस्य प्रकट करती है तथा उसने इस प्रकार प्रेम के पथ का पथिक बनने की व्यथा का आख्यान सुनाती है । काव्य में एक पूर्वदीप्ति (flash-back) के तौर पर उसकी अवतारणा हुई है ।

टाइन नदी के तट पर एक आलीशान महल में पिता की इकलौती दुलारी बेटी होकर वैभव विलास के साथ जीने वाली वह एडविन नामक युवक को प्यार करती थी । कुमार एडविन भी उस पर आसक्त था । योगी के सम्मुख अपने प्रेमी के सौन्दर्य का वर्णन करती-करती वह आत्मविभोर हो जाती है --

"उसके मन की सुघराई की उपमा उचित कहाँ पाऊँ
मुकुलित नवल कुसुम कलिका सम कहती फिर फिर सकुचाऊँ
यदपि ओसबिंदु अति उज्ज्वल, मुक्ता विमल अनूप
किन्तु एक परमाणु मात्र भी नहिं उसके अनुरूप ।"

---

1. Several girls being known to have made it their constant comparison with which they would not part even at bed-time. :(preface to fifth edition):

विधि के कारण वह एडविन की प्रेम परीक्षा लेने का निश्चय करती है। इस कारण प्रेम करते हुए भी वह अपने प्रिय की अवहेलना करती है। इस कारण दुःखी होकर एडविन कहीं चला गया। अपने प्रिय की खोज में ही वह यों पथिक बनकर घूमती फिरती है। अपने प्राणनाथ के प्रेम का ऋण अपने प्राणदान द्वारा चुकाने को भी वह उन्मत्त है।

यह प्रेम कहानी सुनकर सच्चा एडविन एंजेलिना को पहचान लेता है तथा बताता है कि वह योगी ही उसका प्राणप्यारा एडविन है। दोनों बिछुड़े प्रेमी युगल यों विधि की गति से परस्पर मिल जाते हैं। इस मधुर प्रेमतत्व का मनोहर आविष्करण भी मनोज्ञ शैली में हुआ है। एकांतवासी योगी के आदर्श प्रेम ने श्रीधर पाठक जी को अधिक प्रभावित किया उन्होंने ऐसी ही एक प्रेमकहानी भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत की — "प्रेम पथिक"।

ब्रजभाषा में लिखित पाठक जी के "प्रेमपथिक" खण्डकाव्य में प्रेमतत्व की अत्यंत मनोरम चित्रण हुआ है। इसमें प्रेम-पथ-पथिक को स्वयं प्रेम के अवतरित होकर, प्रेम सम्बन्धी बातों को बता देने का वर्णन हुआ है। अपने इस प्रेमकाव्य में पाठक ने प्रेम का साकार रूप में आविष्करण किया है।

ब्रजभाषा के "प्रेमपथिक" का प्रेम स्वरूप और अधिक प्रौढ़ रूप में आविष्कृत हुआ खड़ीबोली में रचित "प्रेमपथिक" में। ब्रजभाषा की कथातंत्र अत्यन्त क्षीण रही, खड़ीबोली का कथातत्व परिवर्धित एवं परिष्कृत रूप में मिलता। इसमें पथिक को एक तापसी आश्रय देती है। तापसी के आग्रह करने पर पथिक अपनी पूर्व कथा बताता है। यहीं पर "एकांतवासी योगी" की स्पष्ट छाप भी, दर्शित होती है। पुतली (कोकी) नामक लड़की के साथ अपने प्रेम की कथा का वह वर्णन करता है, और उस कोकी की इच्छा के विरुद्ध उसके माँ-बाप के हित पर एक दूसरे व्यक्ति के साथ उसकी शादी के सम्पन्न होने की बात भी बताता है। अपनी उसी प्राणप्यारी की स्मृति में वह प्रेम-पथ-पथिक बनकर निकला है।

तापसी तो और कोई नहीं थी, वह युवती या अकेली ही थी। विधि विधान से उसके विधवा हो जाने तथा तापसी बनने की कथा का आख्यान वह करती है। नियति की गति से अन्ततः दोनों का मिलन होता है। उस प्रेम पथ की ओर जहाँ शांति की प्राप्ति होती है, उस ओर प्रेमी-प्रेमिका प्रयाण करते हैं --

"चलो मिलें, सौन्दर्य प्रेमनिधि में, तब कहा अकेली ने
जहाँ अखण्ड शांति रहती है वहाँ सदा स्वच्छन्द रहे।"

प्रसाद जी कृत 'प्रेमपथिक' के काल्पनिक आख्यान का मूलस्रोत दरअसल 'एकांतवासी योगी' ही है। एकांतवासी के प्रेमतत्व का चित्रण प्रस्तुत काव्य में भारतीयता के परिप्रेक्ष्य में हुआ है। भारतीय वातावरण में प्रस्तुत आख्यान को प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक परिवर्तन कवि ने किया है। 'एकांतवासी योगी' में प्रेमिका पुरुष-वेश में प्रेमी की खोज में निकलती है। लेकिन भारतीय परम्परा के अनुसार अतिथियों का सत्कार नारियाँ ही करती हैं। 'प्रेमपथिक' में पथिक को नारी ही आश्रय दे देती है। 'एकांतवासी योगी' के कथानक में नारी की रूपछवि पर नायक के मन में प्रेम अंकुरित हो जाता है। प्रेमपथिक में नायक-नायिका के मन में बचपन से ही एक साथ खेलने-पीने के कारण ही प्रेम पनप उठता है। 'एकांतवासी योगी' में प्रेमिका की निराशा का कारण उसी के द्वारा पुरुष के प्रेम की परीक्षा लेना है। 'प्रेमपथिक' में नायिका के माँ-बाप उसकी शादी एक दूसरे व्यक्ति के साथ करा देते हैं। यों एक प्रेमतत्व का भारतीय परिवेश में प्रस्तुतीकरण प्रेमपथिक में हुआ है।

व्रजभाषा के 'प्रेमपथिक' की कथावस्तुएँ अत्यन्त क्षीण हैं, उसमें नायक, नायिका के कुछ नामकरण नहीं हुआ है। प्रेम-पथ-पथिक तथा प्रेम के वार्तालाप से प्रस्तुत काव्य का कथानक सम्पन्न होता है। इस कथावस्तु में प्रेम का साकार रूप में वर्णन हुआ है। पथिक के सम्मुख साक्षात् प्रेम अवतरित हो जाता है तथा उसे प्रेम का तत्व सिखा देता है।

खड़ी बोली 'प्रेमपथिक' की कथावस्तु अधिक पुष्ट एवं प्रौढ़ है । नायक-नायिका के प्रेम, विरह तथा पुनर्मिलन की स्पष्ट कड़ियाँ काव्य-कथानक में स्पष्टतया परिलक्षित हैं । ब्रजभाषा 'प्रेमपथिक' में सम्पूर्ण काव्य में प्रेम के मूर्तिमान रूप में प्रकट होने तथा पथिक को सन्देश देने का वर्णन है । इस काव्य में एक छोटा सा प्रसंग है जहाँ निराश प्रेमी को स्वयं प्रेम, प्रेम-पथ की शिक्षा देता है ।

एक सर्वांग सुन्दर काल्पनिक प्रेमतत्त्व के सफल चित्रण में काव्यकार सफल हुए हैं ।

रामनरेश त्रिपाठी के खण्डकाव्य 'मिलन' की कथावस्तु काल्पनिक है । स्वच्छन्द भावधारा के प्रवेश की प्रारंभिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत काव्यधारा की विशेषताओं से अभिभूत होकर वे काव्यक्षेत्र में आये हुए थे । काल्पनिक कथावस्तुओं के आधार पर आपने तीन खण्ड-काव्य रचे-मिलन, पथिक और स्वप्न । त्रिपाठी जी काल्पनिक खण्डकाव्यों के बारे में आचार्य शुक्ल जी का कथन है -- "काव्य के क्षेत्र में जिस स्वाभाविक स्वच्छन्दता का आभास पं० श्रीधर पाठक ने दिया था, उसके पथ पर चलने वाले द्वितीय उत्थान में त्रिपाठी जी दिखायी पड़े । मिलन, पथिक और स्वप्न नामक उनके तीनों खण्डकाव्यों में उनकी कल्पना ऐसे मर्मपथ पर चली है जिस पर मनुष्य मात्र का हृदय स्वभावतः ढलता आया है । ऐतिहासिक या पौराणिक कथाओं के भीतर न बंधकर अपनी भावना के अनुकूल स्वच्छन्द संचरण के लिए कवि ने नूतन कथाओं की उद्भावना की है । कल्पित आख्यानों की ओर यह विशेष झुकाव स्वच्छन्द मार्ग की अभिलाषा सूचित करता है ।"[१] दो युव मिथुनों के देश सेवा के महान् आदर्श से प्रेरित होकर देश रक्षा का काम करने वाली कथा ही काव्य में वर्णित है । काव्य के प्रारम्भ में एक अत्यन्त मधुर प्रेमकथा है जिस पर "एकांतवासी योगी" का स्पष्ट प्रभाव है । युव-मिथुनों का विछोह इसमें एक भाव दुर्घटना के कारण होता है । एक मुनि के द्वारा दोनों युवमिथुनों

१- हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सं० ९६, पृ० ५९९-६००.

का पुनःमिलन होता है । मुनि उन्हें देश की दीन दशा का संकेत करते हुए उन्हें देश सेवा की ओर उन्मुख करते हैं । काव्य के नायक-नायिका आनन्दकुमार व विजया तथा मुनि अपने देश की स्वतंत्रता के महान् आदर्श से प्रेरित होकर इस ओर प्रयत्नशील हो जाते हैं । देश की मुक्ति हेतु आयोजित भयानक विद्रोह में मुनिवर अपने प्राणों की बलि देकर अमर हो जाते हैं । काव्यांत में नायक-नायिका का पुनर्मिलन भी हो जाता है ।

"मिलन" काव्य का जो अतिमधुर प्रेमतत्व है, वह श्रीधर पाठक के 'एकांतवासी योगी' के प्रेमाख्यान से प्रभावित ही है । इसका प्रेमतत्व अमर एवं आदर्श है । एक नाव दुर्घटना पति-पत्नियों को बिछुड़ देती है तथा अन्त में उनका पुनर्मिलन भी होता है । नायक के द्वारा अपनी पूर्व कथा के आख्यान देने के प्रसंग में भी 'एकांतवासी योगी' की स्पष्ट छाप है । कथा की पृष्ठभूमि की अनुपम छटा 'एकांतवासी योगी' में अंकित है ।

एक प्रेमाख्यान से अधिक मिलन का राष्ट्रीय महत्व भी है । त्रिपाठी जी का यह काव्य राष्ट्रीय चेतना का संवाहक ही है जिसका मूल कारण तत्कालीन भारतीय राजनीतिक गतिविधियाँ ही हैं । कल्पना प्रसूत आख्यान होते हुए भी प्रस्तुत काव्य में देश के वर्तमान समाज तथा राजनीतिक परिस्थितियों का स्पष्ट चित्रण है । विदेशियों के आततायी शासन से मातृभूमि की मुक्ति का महान् कार्य काव्य में सम्पन्न होता है । मातृभूमि भारतभूमि भी इस अवसर पर ब्रिटिशों के काले शासन से पीड़ित व कराह रही थी । उसकी मुक्ति की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न भी कविवर ने काल्पनिक आख्यान से किया है । देश प्रेम व देश की मुक्ति के प्रयत्न में अपने प्राणों की बलि देने वाले मुनि का चरित भी महान् है । वस्तुतः इस काव्य की वस्तु में देश के उद्धार की पुकार है । अपनी अपूर्व कल्पना के बल पर कवि ने अपनी जन्मभूमि की स्वतंत्रता की कहानी ही शायद इस काव्य के जरिए प्रस्तुत की है ।

भारतीय जन-जीवन भी आधुनिक कवियों के काव्य-कथानक बन गये । भारत के पीड़ित जन आधुनिक काव्य के विषय बने । अपनी उर्वर कल्पना के बल पर जनता के

सामाजिक जीवन का चित्र खींचने का प्रयत्न इस काल में हुआ । "सब से अधिक संतोष का विषय यह है कि स्वर्ण-मंडित आभिजात्य से और मनोरंजिनी कल्पनाओं से अपने मन को हटाकर कुछ कवियों ने चिरपीड़ित उपेक्षित सर्वहारा की ओर अपनी दृष्टि डाली । कल्पना से केवल वस्तुस्थिति में रंग भरने का काम लिया ।"[1] मैथिलीशरण गुप्त जी के 'किसान' खंड-काव्य का विषय ऐसा ही है । भारतीय कृषक जीवन की करुण कथा ही इस काव्य में अंकित है । भारत की सामाजिक अत्याचारों से पीड़ित एक किसान कुली बनकर फिजी द्वीप में रहने लगता है । वहाँ भी उसका जीवन करुणामय एवं संघर्षपूर्ण ही रहा । उस किसान की पीड़ाओं को देख किसानों में खलबली मच जाती है तथा किसान (कल्लू) स्वतंत्र होकर भारत लौट आते हैं और उसका उद्धार हो जाता है । आखिर ब्रिटिश सरकार की सेना में भर्ती हो जाता है तथा उसके स्वार्थ की सेवा में लड़ते-लड़ते मृत्यु को प्राप्त करता है । एक छोटी-सी मार्मिक काल्पनिक कथावस्तु के आधार पर 'किसान' काव्य बना है । एक गरीब भारतीय किसान की मर्मांतक पीड़ाओं का ज्वलंत चित्रण काव्य में उपस्थित है । तत्कालीन भारतीय सामाजिक अत्याचारों -- साहूकारी व महाजन प्रथा, जमींदारी प्रथा -- पर भी कथावस्तु में प्रकाश डाला गया है । "किसान वस्तुतः भारत के आर्थिक जीवन के दुःखद अध्याय गिरमिट प्रथा की प्रतिक्रिया है ।"[2]

मैथिलीशरण गुप्त जी के छोटे भाई सियारामशरण गुप्त जी ने भी एक सामाजिक-व्यथा की कथा को अपने खंडकाव्य 'अनाथ' का रूप दे दिया है । काल्पनिक होते हुए भी भारतीय दुर्दशाग्रस्त समाज का यह यथार्थ चित्र है । 'अनाथ' सचमुच एक भारतीय अनाथ किसान की करुण कथा है जिसे अनाथों से मर्मांतक पीड़ाएं सहनी पड़ीं । 'अनाथ' में मोहन नामक कृषक की आर्त कथा है जिसका बड़ा बेटा रोग-शय्या पर है, छोटे बेटे के रोटी

१- हिन्दी कविता में युगांतर : डा० सुधीन्द्र, पृ० १३८.

२- वही.

माँगने पर एक लोटा गिरवी रखकर चून लेकर लौट आता है। रास्ते में ही चौकीदार उसे बेगार में पकड़ लेता है। उसे थाने में दारोगा की बेगारी करना पड़ता है तथा घर में मृत्यु शैय्या पर पड़े बेटे तथा वेदना-विकल पत्नी से कर्ज के रुपये लौटा लेने के लिए काबुली पठान आ धमकता है। वह पत्नी को बेगार में पकड़कर ले जाता है। मोहन थाने से छूटकर आ रहा था कि मालगुजार के सिपाही उसे पकड़कर ले जाता है। यहाँ उसे अपने पुत्र की मृत्यु व अपनी पत्नी के काबुली द्वारा पकड़े ले जाने का दुःखद समाचार प्राप्त होता है। आखिर मृत्यु के चरण ही उसका शरण रह जाते हैं। वह भी हताश होकर ठोकर खाकर गिर पड़ता है। ऋण-भार से ग्रस्त एक भारतीय कृषक का दयनीय चित्र ही काव्य में प्रस्तुत है। सामाजिक अत्याचार पर कवि ने तीखा व्यंग्य किया है। एक ओर वैभव विलास में जीने वाले जमींदारों व दूसरी ओर ऋण ग्रस्त किसानों का चित्रण भी हुआ है। एक ओर अमीर को घी-दूध देकर कुत्तों का पालन पोषण करते हैं तथा दूसरी ओर गरीब मजदूर भूखों मर रहे हैं। इसी सामाजिक व्यंग्य को कवि ने अपने खण्डकाव्य का विषय बनाया है।

रामनरेश त्रिपाठी जी के खण्डकाव्य ‘पथिक’ का कथानक काल्पनिक है। देश की तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों में युवकों तथा युवतियों को देशप्रेम के महान् आदर्श हेतु उन्मुख करने के लिए पथिक काव्य रचा गया है। कल्पना-प्रसूत आख्यान होते हुए भी इस काव्य में देश के तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति ही चित्रित है। ‘पथिक’ का नायक देश सेवा के पथ का पथिक है जिसने एकतंत्रीय शासन के अत्याचार के प्रति विद्रोह किया तथा जन्मभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। वह एक सत्याग्रही है जो अत्याचारी राजा के अत्याचारों को सहने वाली प्रजा की रक्षा का भार अपना लेता है। सेवा-पथ में अनेक कठिनाइयों को सहने वाले पथिक को अपनी-पत्नी व पुत्र और स्वयं अपनी बलि चढ़ानी पड़ती है। पथिक के बलिदान पर जनता की आँखें खुलती हैं तथा वे स्वयं राजा के विरुद्ध खड़ी हो जाती हैं और विजय प्राप्त करती हैं। अत्याचारी राजा को निर्वासित करके राज्य में जनता का शासन स्थापित हो जाता है।

प्रस्तुत काल्पनिक आख्यान का नियोजन कवि ने ऐसा ही किया है कि जिससे भारतीय जनता के मुक्तिसंघर्ष का सच्चा रूप उभर आता है । यह दरअसल कवि की दूर-दर्शिता का ही परिणाम है । सन् १९२० में निर्मित इस काव्य में जनता की संगठित शक्ति द्वारा अंग्रेजी सरकार को दूर करके भारत में गांधी जी के नेतृत्व में जनसंशासन स्थापित होने के बाद १९४७ के इतिहास का आभास है । तत्कालीन भारतीय सामाजिक व राजनीतिक चेतना का स्पष्ट रूप प्रस्तुत काल्पनिक खण्डकाव्य के कथानक में उपस्थित है ।

छायावादपूर्व युग के काल्पनिक आख्यान मुख्यतः दो ही धाराओं को प्रमुखतया लेकर चल निकला है । प्रथम है — 'एकांतवासी योगी' से प्रभावित सम्मोहक प्रेमतत्त्व तथा स्वच्छन्दतावादी काव्यशैली । जयशंकर प्रसाद जी कृत 'प्रेमपथिक' (ब्रजभाषा) प्रेमपथिक (खड़ीबोली) तथा मिलन पर इसका स्पष्ट प्रभाव है । दूसरा तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित राष्ट्रीय कविताधारा का रहा है जिसमें राष्ट्रप्रेम का स्वर मुखरित है तथा देशोद्धार के लिए आह्वान भी । 'मिलन', 'पथिक' आदि ऐसे ही खण्डकाव्य हैं ।

देश की तत्कालीन सामाजिक दीनदशा व असमत्व के विषय भी खण्डकाव्यों के कथानक बने । चिरपीड़ित एवं उपेक्षित सर्वहारा का हृदयस्पर्शी चित्रण 'अनाथ' एवं 'किसान' की कथावस्तुओं में दर्शनीय है । इस काल में विरचित खण्डकाव्यों के काल्पनिक आख्यान के वस्तुतः महान् लक्ष्य रहे हैं ।

<u>काल्पनिक कथावस्तु : छायावादी युग के खण्डकाव्यों में</u>

छायावादी युग के खण्डकाव्यों में काल्पनिक कथावस्तुओं को प्रचुर मात्रा में प्रश्रय मिला । चित्र-विचित्र कल्पनाओं का युग ही तो यह रहा है । पिछले युग के 'एकांतवासी योगी' से अनुप्राणित प्रेमतत्त्व का प्रभाव अब भी अक्षुण्ण रूप में विद्यमान रहा । सम्मोहक प्रेमतत्त्वों का छायावादी शैली में प्रस्तुतीकरण होने लगा । सुमित्रानन्दन पन्त जी की 'ग्रंथि', प्रसाद जी की 'आंसू', रामनरेश त्रिपाठी का 'स्वप्न', माहेश्वरी सिंह कृत

'सुहाग' जैसे खण्डकाव्य इसके भिन्नतुल्य निदर्शन हैं । इन चारों काव्यों में प्रेम के विविध रूपों का ही आदर्श स्थापित किया गया है । 'ग्रंथि' एक प्रेम काव्य है जिसमें संयोग एवं वियोग दोनों का ही मनोहर वर्णन हुआ है । काव्य का नायक एक नाव दुर्घटना में पड़ जाता है तथा डूब मरने वाले नायक की रक्षा एक बालिका करती है । अपने जान की रक्षा करने वाली उस सुन्दर बालिका पर नायक का मन रम जाता है । लेकिन नायिका की शादी एक दूसरे व्यक्ति से संपन्न होने पर नायक निराश हो जाता है । वह विरह सागर में डुबकियां लगाने लगता है ।

नायक-नायिका के मिलन, प्रेम तथा उनके विरह का मार्मिक वर्णन काव्य में हुआ है । छायावाद पूर्व युग का सा इतिवृत्तात्मक वस्तुवर्णन इस काव्य में नहीं । प्रेम के सुमनोहर भावों का मनोवैज्ञानिक आविष्करण ही काव्य में हुआ है । स्वयं कवि ने ग्रंथि के कथानक को काल्पनिक उद्घोषित किया है लेकिन कथा के उत्कट प्रेम, विरह आदि के वर्णनों की हृदयस्पर्शिता के कारण इस कृति में कवि की वैयक्तिकता का आभास मिलता है । ऐसा लगता है मानो कवि ही स्वयं अपनी प्रेम-ग्रंथि का प्रस्तुतीकरण कर रहे हैं । सच-मुच एक प्रेमतत्व का मनोज्ञ आविष्करण 'ग्रंथि' में हुआ है ।

जयशंकर प्रसाद जी के 'आंसू' खण्डकाव्य का कथानक भी एक काल्पनिक प्रेमतत्व पर आधारित है । लौकिक प्रेमतत्व के आधार पर गतिशील काव्य अंत में अलौकिक परि-वेश को प्राप्त होते हैं । अनुपम रूप छवि से आकर्षण नायक के मन में नायिका के प्रति प्रेम-भाव पैदा करता है । लेकिन अंत में वह समझ जाता है कि वह रूप माया केवल छलना थी । काव्य का शेष भाग तो विरहवर्णन का है । मिलन की आशा बनी रहती है पर आशा निराशा ही बन जाती है । विरही दुःख सागर में डूब जाता है तथा अपने दुःख को व्यापकता की पृष्ठभूमि पर ला खड़ा कर देता है । जिन आंसुओं को उसने केवल स्मृतियों के रूप में अपनाया था, उन्हें सृष्टि-कल्याण में नियोजित कर देता है । जिस वेदना ने उसे गिरा दिया था, उसी के सहारे वह ऊपर उठने तथा आश्वासन पाने का यत्न करता है । इस

खण्डकाव्य में सचमुच स्थूल कथा का अभाव है । "इस विरह काव्य में छायावाद की समस्त प्रवृत्ति बोल उठी थी । यह स्थूल और कृत्रिम के प्रति एक विद्रोह था ।"[1] केवल सूक्ष्म-कथा-सूत्रों को पिरोकर ही कवि अपने काव्य की कथा की सृष्टि करता है । प्रसाद जी के 'प्रेमपथिक' (व्रजभाषा) की भाँति स्थूल कथानक तथा प्रत्यक्ष कथापात्रों का इसमें अभाव है । कवि की अनुभूतियों की शृंखलाबद्ध कड़ियाँ ही काव्य-कथा का संगठन करती हैं ।

रामनरेश त्रिपाठी कृत 'स्वप्न' खण्डकाव्य में कविवर ने प्रेम के दो रूपों का दिग्दर्शन कराया है , एक वैयक्तिक प्रेम तथा दूसरा देशप्रेम का । 'स्वप्न' खण्डकाव्य की कथावस्तु कवि की कल्पना की उपज है । 'स्वप्न' का काव्यनायक वसंत अपनी प्राणप्यारी प्रेयसी सुमना की प्रेरणा से स्वदेश रक्षा के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। स्वदेश हित प्रयत्न करने वाली अपनी प्रिया से रणक्षेत्र में वह मिल जाता है । आखिर व्यक्ति प्रेम तथा देशप्रेम दोनों की सफल संप्राप्ति हो जाती है । इसमें व्यक्ति प्रेम पनपकर सामाजिक प्रेम का रूप धारण करता है तथा सामाजिक प्रेम देशप्रेम के साथ मिलकर एक हो जाता है । देशहित व्यक्ति अपने वैयक्तिक प्रेम को त्याग देता है । राष्ट्रीय भावधारा से अनुप्राणित प्रस्तुत काव्य कथानक में प्रेम का उच्च आदर्श ही दिखाया गया है ।

छायावादी काव्यशैली में विरचित 'सुहाग' खण्डकाव्य की कथावस्तु काल्पनिक है जिसमें छायावादी कथानक की सभी विलक्षण विशेषताओं का सम्यक सामंजस्य हुआ है । प्रेम के संयोग पक्ष को लेकर काव्य की कथावस्तु चलती है । सुहाग वेला में एक प्राण दो शरीर वाले प्रेमी प्रेमिका सदा के लिए एक हो जाते हैं । मानव जीवन में सुहाग की घड़ी का जो करुण माहात्म्य है वही इसमें वर्णित है । कवि ने भाव-लड़ियों से कथा की योजना की है । काव्यांत में आकर यह प्रेम अलौकिकता को प्राप्त करता है जबकि नायिका कहती है —

"निराकार की मैं पुजारिणी
पूजूं क्योंकर यह साकार ।"[2]

१- प्रसाद का काव्य : डा० प्रेमशंकर - पृ० १५२.
२- सुहाग - माहेश्वरी सिंह 'महेश'.

छायावादी काव्यशैली के उत्कृष्ट निदर्शन `आंसू` की भांति प्रस्तुत काव्य की कथातंत्रियां भी वर्णित हैं। कवि के काव्यसामर्थ्य ने ही काव्य कथा को प्रबन्धत्व के गुण से अभिमण्डित किया है। `आंसू` काव्य में वियोग शृंगार का सुन्दर वर्णन हुआ है तो `सुहाग` में संयोग शृंगार का। `आंसू` की विषय वस्तु लौकिक रूप में प्रारंभ होकर अन्त में अलौकिकता को पहुंच जाती है उसी भांति `सुहाग` का प्रेम तत्व भी अंत में रहस्यवादोन्मुख हो जाता है।

छायावादी काव्यवस्तु की विशेषताएं इस युग में विभिन्न खण्डकाव्यों में परिलक्षित होती हैं। प्रेमतत्व छायावादी कवियों के लिए विशेष प्रिय रहा। उसी सम्मोहक प्रेम तत्व को आधार बनाकर विरचित हैं इस काल के अधिकांश काल्पनिक खण्डकाव्य यथा -- ग्रंथि, आंसू, स्वप्न, सुहाग आदि। प्रेम के आदर्श रूप का अंकन ही इन काव्यों में हुआ। `स्वप्न` का प्रेम तो राष्ट्रीय धरातल तक को पहुंचने में सफल हुआ है। इन काव्यों में स्थूल व इतिवृत्तात्मक कथावस्तु का नितांत अभाव है। यही नहीं आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति भी सर्वत्र इनमें मुखरित है। `स्वप्न` तो मुख्यतः छायावादपूर्वी युग के कथानक सम्बन्धी विशेषताओं का अनुवर्तन करने वाला है।

`ग्रंथि`, `आंसू` तथा `सुहाग` तीनों छायावादी विशेषताओं से विभूषित काव्य हैं। छायावाद की समस्त प्रवृत्तियां इनमें काम करती हैं। यही कारण है कि इनमें स्थूल कथातत्व का अभाव है तथा पात्रों का स्पष्ट चित्रण भी नहीं है। आत्माभिव्यक्ति की -- प्रवृत्ति के कारण काव्यवस्तु का सम्बन्ध स्वयं कवि से मालूम होता है। वस्तुतः इसी कारण से पंत जी की `ग्रंथि` तथा प्रसाद जी की `आंसू` पर कवियों की वैयक्तिकता का आरोप किया गया है।

छायावादी काव्य बाह्यार्थ निरूपण की प्रवृत्ति के विरुद्ध स्वानुभूति व्यंजना को लेकर हिन्दी काव्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ था। इस काल में आत्मपरक अनुभूतियों की ही प्रमुखता रही। `प्राचीन एवं रूढ़ मूल्यों के प्रति विद्रोह का भाव उमड़ना तो स्वा-

भाषिक है । व्यक्ति के भाव प्रतिक्रिया कर उठते हैं । स्वानुभूतियों का आवेग -- प्रवाह, वस्तु तथ्य, इतिवृत्त, साधारण अभिव्यक्ति की अपेक्षा अनुभूतियों के विश्लेषण व व्यंजनात्मक अभिव्यक्ति की ओर अधिक उन्मुख होता है ।"[1]

छायावादी खण्डकाव्यों की कथावस्तु की यही विशेषता रही कि उनकी कथा व घटनाएं नई रूपों व परिमाणों में प्रकट हुईं । कहीं किसी खण्डकाव्य में घटना केवल सहारा मात्र है और कवि अपनी आंतरिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए साधन रूप में लेता है । कहीं घटना ही घट कर लुप्त होती है तथा उससे प्रवाहित भाव भी उमड़ते हैं । कहीं घटना की सूक्ष्म तंतु आर्पित चलती, उसके बीच भावों का विन्यास रहता, घटना व कथा का सूत्र अत्यन्त क्षीण रहता । काव्य में विषय से अधिक विषयी को स्थान प्राप्त हुआ । इन काल्पनिक खण्डकाव्यों में कल्पना प्रधान व आत्मनिष्ठ होते हुए भी इन काव्यों में देश-कालोपयोगी सन्देश उभारे गये हैं और कतिपय काव्यों पर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व दार्शनिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का चित्रण भी किया गया है । लौकिक तत्वों के साथ अलौकिक तत्वों का गुंफन भी छायावादी खण्डकाव्यों की कथावस्तुओं में दृश्यमान और एक अनूठी विशेषता है ।

काल्पनिक कथावस्तु : छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में

छायावादोत्तर युग में काल्पनिक कथावस्तु वाले खण्डकाव्य खूब प्रणीत हुए । छायावाद पूर्व युग तथा छायावादी युग में भी काल्पनिक आख्यान खण्डकाव्यों के कथानक बने हुए थे । छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में प्रयुक्त काल्पनिक कथानकों को पहले के कथानकों से पृथक करने वाले नए साधन हैं । इस काल में - नव युग के नवीन परिप्रेक्ष्य एवं परिवेशों के अनुकूल काव्यजगत में सर्वत्र क्रांति मच उठी थी । मनोवैज्ञानिक विचारविश्लेषणों

१- छायावाद के गौरव-चिह्न : प्रो० क्षेम, पृ० २४७.

को इस काल में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ । काव्य में कथावस्तु का स्थान गौण हो गया । (छायावाद काल से ही यह प्रवृत्ति शुरू हुई थी, पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों की प्रवृत्ति तब न रही थी, भावों की ही प्रधानता तब रही) पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रणों व मनोविश्लेषणों को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ ।

कथावस्तु कठोर यथार्थ की भूमि की ओर खिसक आयी । कोरी कल्पनाएं समाप्त हो गयीं । कथावस्तु को यों स्वाभाविकता का विशिष्ट गुण प्राप्त हुआ । एक ओर जीवन की कठिनाइयां व संघर्ष काव्यवस्तु बनीं तो दूसरी ओर सामाजिकतामत्व भी ।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी कृत 'अजित' की कथावस्तु काल्पनिक है । समसामयिक जीवन की एक घटना को ही कवि ने अपना काव्य-विषय बनाया है । समाज के जमींदारों से पीड़ित जो गरीब मजदूर हैं, उन्हीं का चित्रण कवि ने प्रस्तुत काव्य में किया है । काव्य नायक अजित जमींदार के अत्याचारों से पीड़ित होता है तथा उसे जमीं-दारों के इशारे पर नाचने वाले पुलिसों के कारण जेलवास सहना पड़ता है । अन्त में इन पीड़ाओं से प्राप्त मानसिक हिम्मत के बल पर वह गांववासियों के उद्धार के प्रयत्न में लग जाता है । समसामयिक भारतीय जन-जीवन का सच्चा चित्रण प्रस्तुत काव्य में उपस्थित है । कथावस्तु से अधिक काव्य में अजित के मनोवैज्ञानिक चरित्र विकास के चित्रण को ही प्रधानता प्राप्त हुई है ।

उपेन्द्रनाथ अश्क जी का खण्डकाव्य 'बरगद की बेटी' सामाजिक अत्याचार का खाका खींचने वाला है । इसमें एक भोली भाली गरीब किसान-बालिका की करुण कहानी अंकित है । घटनाओं से हो कर विकसित होने वाली काव्यकथा का सुन्दर संगठन काव्य में हुआ है । जमींदार के धोखेबाज बेटे पर आसक्त किसान-बालिका लहरों को जी जान से प्यार करता था साधिक । बिरादरी व धर्म समानता के कारण साधिक लहरा के ऊपर अपना अधिकार मानता था । एक सांझ में जमींदार के बेटे मनहर तथा लहरा को एक साथ

लेकर [illegible] दोनों पर अपने खंजर का प्रयोग करता है। अनवर मर जाता है तथा कजरी लहरा जमींदार के यहां लायी जाती है, वहां अत्याचारी जमींदार उस पर बला-त्कार के लिए आता है तो जमींदार की हत्या करके वह नदी में कूदकर आत्महत्या कर डालती है।

भारतीय ग्रामीण जीवन का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत काव्य-कथानक में उपस्थित है। पात्रों के मानसिक संघर्षों के चित्रण के साथ काव्य-कथा का भी प्रौढ़ विकास काव्य में हुआ है।

`चांदनी रात और अजगर` उपेन्द्रनाथ अश्क जी का रोचक खण्डकाव्य है जिसमें कवि के मन में उठने वाले जीवन सम्बन्धी संघर्षों का सजीव चित्रण हुआ है। सामाजिक असमत्व एवं शोषण-उत्पीड़न के कारण व्यक्ति का भविष्य किस प्रकार रास्ते में ही भटक जाता है, इस तथ्य पर कवि चिंतन-विचिंतन करते हैं। आखिर इस निश्चय पर आ सकते हैं कि मानवता के मुक्तिसंघर्ष के जड़ पकड़ने का समय आ गया है तथा उस संघर्ष में मानव-श्रम-रूपी अजगर अपनी कुंडली खोलकर बाहर आयेगा और वह शोषक पूंजीवादियों की सत्ता को मिटायेगा। इस काव्य में कथावस्तु कवि के क्रमबद्ध विचारों से निर्मित होती है। कवि ने विगत जीवन के संस्मरणों, अभावों व भविष्य के सुनहले सपनों द्वारा अपने काव्य की कथावस्तु की नियोजना की है। काव्यवस्तु में सामाजिक वैषम्यों व अन्तर्विरोधों का सच्चा चित्रण हुआ है।

एक काल्पनिक प्रेम कथा के आधार पर नरेन्द्र शर्मा का खण्डकाव्य `कामिनी` विरचित है। कामिनी तथा उसके प्रिय अतिथि[1] के मिलन, विरह तथा पुनर्मिलन की कथा ही प्रस्तुत काव्य में वर्णित है। कामना व प्रिय ऐश विलास का जीवन बिता रहे थे तथा केवल कामवासना की पूर्ति का जीवन का लक्ष्य समझते थे। लेकिन उनका विछोह हो जाता है। दोनों अथाह विरहाग्नि में डूब जाते हैं। विरहाग्नि में ज्वाला में जलकर दोनों के मन का कालुष्य जलकर भस्म होकर मिट जाता है। इस अन्तर कामिनी का एक बच्चा पैदा

1- कामिनी का पति है जिसका उल्लेख काव्य में सर्वत्र `अतिथि` हुआ है। कामिनी की कुटिया में अतिथि की तरह वह तो कुछ ही दिन रहता है।

होता है तथा पुत्र जन्मोत्पत्ति का सुखद समाचार पति को उस ओर खींच लाता है। यों पति-पत्नी का पुनर्मिलन होता है। इसमें पुत्र जन्म के साथ पति-पत्नी के सम्बन्ध के सुदृढ़ हो जाने का वर्णन है। वासना तो प्रेम का सच्चा रूप नहीं तथा प्रेयसी या कामिनी से अधिक नारी के मातृरूप की ही महत्ता है। प्रस्तुत कथानक इसी तथ्य को प्रकट करने वाला है।

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' के खण्डकाव्य 'गृहलक्ष्मी' की कथावस्तु काल्पनिक है। प्रस्तुत काल्पनिक कथावस्तु के जरिए कवि ने पारिवारिक जीवन का यथार्थ चित्र ही काव्य में प्रस्तुत किया है। पारिवारिक जीवन के एक ही पहलू को कवि ने आधार रूप में चुना है -- वह है सास और बहू का सम्बन्ध है। जिसका बहू अपने स्नेह सिक्त हृदय व आचरणों से अपनी कर्कश सास के भी हृदय को जीत लेती है। ऐसी ही बहू गृह की लक्ष्मी है। कवि ने सास व बहुओं के मानसिक विचार-विकारों व संघर्षों को भी अपनी कथावस्तु में महत्वपूर्ण स्थान दे दिया है। भारतीय ग्रामीण परिवार का मार्मिक चित्र इस काव्य-वस्तु में प्रस्तुत है।

'अनासक्ति'[१] खण्डकाव्य की कथावस्तु कवि की प्रतिभा की उपज है। आसक्ति की अपेक्षा अनासक्ति तथा भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता के प्रामुख्य का इसमें कवि वर्णन करते हैं। इस काव्य के कथानक का नायक अपनी प्रेमिका को छोड़ अनासक्त होकर विशाल कर्म क्षेत्र में पदार्पण करता है तथा मानव हित के कई कार्यों में लग जाते हैं। जनता को उसने सेवा व मानवता का आदर्श सिखाया। प्रजा के लिए उसने प्रजातंत्रीय शासन स्थापित करने का प्रयत्न किया, लेकिन अधिकार प्राप्ति की लेशमात्र ही अभिलाषा उसे न रही। विश्वशांति के लिए भी उसने खूब प्रयत्न किया। यों राष्ट्रसेवा के लिए घूमते फिरते आखिर वह अपनी पत्नी के मृत्यु शैय्या के पास आ जाता है तथा उसे अनासक्ति की सेवाएँ

---

१. अनासक्ति : राजेन्द्र आर्य.

है प्रस्तुत करती है । पति-मिलन-आसक्ति पर जीने वाली उसे आश्वास की प्राप्ति होती है। भारतीय राजनीतिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत काल्पनिक कथा की संयोजना हुई है । पात्र व उनकी जीवन घटनाएं भारत के आदर्श राष्ट्रस्नेही की याद दिलाने वाली हुई हैं । इसका कथा-आसक्ति अनासक्ति सम्बन्धी संघर्षों का मनोविश्लेषणात्मक विवेचनों ने काव्यवस्तु को और प्रौढ़ बनाया है ।

आधुनिक हिन्दी के हास्य-रस सम्राट श्री काका हाथरसी का एक हास्य रस प्रधान खण्डकाव्य है `काकदूत` जिसकी कथावस्तु काल्पनिक है । `मेघदूत` आदि दूतकाव्य परम्परा की कड़ी में कवि ने `काकदूत` की भी सृष्टि की है । इसमें एक कौए को दूत बनाकर कवि अपनी पत्नी को सन्देश भेजने का उपक्रम करते हैं । कवि जाने की मार्ग का, मार्ग के विशिष्ट स्थानों का पता उसे सुनाता है, पत्नी के लिए सन्देश भी सुनाता है तथा स्मृति रूप में एक मार्मिक घटना का भी उल्लेख करता है । कवि की कल्पना की कड़ियाँ अभी अटूट बह रही थी कि सखी के घर में सदस्य बातें करने के लिए गयी हुई कवि पत्नी लौट आती है । यहीं कवि के `काकदूत` का तागा टूट जाता है । हास्य की शैली में विरचित इस खण्डकाव्य की कथावस्तु अत्यन्त रोचक है ।

सियारामशरण गुप्त जी कृत `सुनन्दा` खण्डकाव्य का कथानक प्रेमविषयक है । स्वर्ण नगर की रानी नन्दा अपनी सखी चम्पा के साथ एक घने जंगल के लौह दुर्ग में फंस गयी है । स्वर्ण नगर का राजकुमार अपनी प्रिया से मिलने जंगल की ओर आ जाता है । उसका मित्र दुर्जन जो चम्पा का प्रेमी है, वह भी जंगल आ जाता है । उनकी प्रेमिकाएँ लौहदुर्ग में पड़ी अपने प्रियों की प्रतीक्षा में रत रहती हैं । दोनों प्रेमिकाओं की प्रेम प्रतीक्षा तथा उनके हृदयव्यापारों का सुन्दर चित्रण काव्य में उपस्थित है ।

`अनारी-नर` खण्डकाव्य श्री गोपालप्रसाद व्यास कृत है जिसका कथानक काल्पनिक है जो हास्यरस से लबालब भरा हुआ है । नर-अर्ध नारी की चर्चा व नारी की महिमा का

व्यंग्यात्मक गायन यही काव्य का विषय है । समाज में पुरुषों के अत्याचारों से पीड़ित नारी उनके अत्याचारों के विरुद्ध संगठित हो जाती हैं । अपनी सत्ता स्थापित करना ही तो उनका लक्ष्य है । अन्त में नारी अपनी सत्ता की स्थापना कर लेती है । यों नर-नारी सम्बन्धी हास्य-व्यंग्यात्मक कुतूहलक विचारों से काव्य कथा निर्मित हुई है ।

इस काल में काल्पनिक आख्यान पर जितने भी खण्डकाव्य लिखे गये, उनमें आख्यानों को स्वाभाविक, सुसम्बद्ध एवं सुन्दर रूप में नियोजित करने में खण्डकाव्यकारों का सफल प्रयास रहा है । मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों की अन्विति के कारण काल्पनिक आख्यानों को नितांत नवीनता, आकर्षकता व यथार्थता प्राप्त हुई है । वस्तुतः इन काव्यों कथावस्तु से अधिक पात्रों के मानसिक संघर्षों व मनोवैज्ञानिक विचार विश्लेषणों की प्रमुखता हो गयी है । लेकिन कथावस्तु की क्षीण से क्षीण रेखा ही सही, इन खंडकाव्यों में अवश्य विद्यमान है ।

समग्रतः विचार करने पर ज्ञात होगा कि आधुनिक काल के खण्डकाव्यों में पौराणिक, ऐतिहासिक विषयों के साथ काल्पनिक आख्यान भी कुछ खण्डकाव्यों के कथानक बने । खण्डकाव्यों के कथा संगठन सुचारु ढंग से सम्पन्न करने में कवियों का ध्यान रहा है । एक मुख्य कथा ही अधिकांश खण्डकाव्यों का आधार है । कतिपय खण्डकाव्यों में सूचित कथा के रूप में प्रसंग कथाओं की अन्विति भी हुई है । 'जयद्रथ वध' जैसे खण्डकाव्यों में यदि मात्र प्रासंगिक कथाओं की सूचना है[1], तो कैकेयी जैसे खण्डकाव्यों में प्रसंग कथायें आ[2] गयी हैं ।

---

१. "संग्राम जैसे था किया गाङ्गेय से भृगुराम ने ।"
जयद्रथ वध : पंचम सर्ग, पृ० ६६ (परशुराम-भीष्म युद्ध की सूचना)
"अपने पिता की गोद में ही वह अचानक आ गिरा ।
रण से अलग उसका पिता तप कर रहा था रत हुआ ।"
वही, षष्ठ सर्ग, पृ० १२.

२. श्रवण कुमार की कथा का वर्णन वशिष्ट के मुंह से हुआ है ।

पात्र एवं चरित्र-चित्रण

कथावस्तु की भाँति पात्र एवं चरित्र-चित्रण भी प्रबन्धकाव्यों का एक आवश्यक अंग है। खण्डकाव्य भी इस तत्व से पृथक नहीं। पात्र सचमुच कथावस्तु के संचालक हैं। वस्तु एवं पात्र का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। पात्र तो "वे व्यक्ति हैं जिनके द्वारा कथा की घटनाएं घटती हैं अथवा जो उन घटनाओं से प्रभावित होते हैं।"[१] इन्हीं पात्रों के क्रिया-कलापों से कथावस्तु का निर्माण एवं विकास होता है।

अन्यान्य कथात्मक काव्यकृतियों के समान खण्डकाव्य में भी पात्र एवं चरित्र-चित्रण का विशेष महत्व है। खण्डकाव्य के लघु रूप में व्यक्ति के सम्पूर्ण चरित्र-चित्रण के लिए गुंजायश नहीं रहती। कहानी तथा एकांकी की भाँति व्यक्ति के चरित्र के एक पक्ष की झलक ही इसमें रहती है।

पात्र कई प्रकार के होते हैं -- जैसे पुरुष पात्र, नारी पात्र। उनमें भी नायक, नायिका, खलनायक, अन्य सहयोगी पात्र जैसे भेद होते हैं। प्राचीन आचार्यों ने प्रबन्धकाव्यों के विशेषकर महाकाव्य के नायकों के भी चार वर्ग किये हैं -- धीरोदात्त, धीरललित, धीरोद्धत एवं धीरप्रशान्त।

ये सभी प्रकार के पात्र निम्नलिखित तीन भेदों के अन्तर्गत समाहित हो जाते हैं -- पौराणिक पात्र, ऐतिहासिक पात्र एवं काल्पनिक पात्र। काव्यों में चित्रित कतिपय पात्र तो चिरप्रसिद्ध रहते हैं तथा कतिपय नितांत अपरिचित। प्रख्यात का सम्बन्ध पुराणप्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक पात्रों से है तथा अप्रख्यात या अपरिचित का सम्बन्ध काल्पनिक पात्रों से है। काव्य के रूप, उसके उद्देश्य, कवि की रुचि आदि के आधार पर काव्यों में पात्रों का चयन होता है।

१- हिन्दी साहित्य कोश : सं० धीरेन्द्र वर्मा, भाग १, पृ० ४८८.

पात्रों के शीलनिरूपण का भी काव्य में प्रमुख स्थान रहता है । चरित्र काव्य का विशिष्ट तत्व है । किसी भी काव्य की कथावस्तु, पात्र, देशकाल या वातावरण, संवाद तथा उद्देश्य का चित्रण चरित्रानुकूल ही रहता है । कथावस्तु के संचालक हैं पात्र तथा पात्रों के कार्यों से ही कथानक का सृजन होता है । कथा की घटनाएं तथा पात्र उसके चरित्र के अनुकूल ही संगठित किये जाते हैं । देशकाल का निर्माण भी पात्रों के चरित्र के अनुकूल होता है । व्यक्ति ही देशकाल का प्रतिनिधित्व करने वाला है । निश्चय ही व्यक्तित्व-चित्रण तथा वातावरण का आपसी सम्बन्ध रहता है । काव्य में पात्रों के चरित्र के अनुकूल ही संवादों की योजना भी होती है । यही नहीं कथा के उद्देश्य की महानता भी पात्रों के चरित्र में ही निहित है ।

चरित्रचित्रण आदर्श एवं यथार्थ--दोनों की पृष्ठभूमि पर हो सकता है । मनोविश्लेषणवाद के इस नवयुग में मनोविश्लेषणात्मक चरित्रचित्रणों को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है । चरित्रचित्रण की प्रमुखतया दो प्रणालियां होती हैं -- एक, प्रत्यक्ष या विश्लेषणात्मक प्रणाली । दूसरी, अप्रत्यक्ष या नाटकीय चरित्रचित्रण प्रणाली । कवि के स्पष्ट कथन द्वारा जिस पात्र का चरित्र व्यक्त हो जाता है वही विश्लेषणात्मक या प्रत्यक्ष प्रणाली है ।[१] पात्रों के क्रियाकलापों तथा आपसी संवादों द्वारा जो चरित्र व्यक्त हो जाता है वह अप्रत्यक्ष या नाटकीय चरित्रचित्रण प्रणाली है ।

आधुनिक काल के खण्डकाव्यों के पात्र आमतौर पर तीन रूपों में बांटे जा सकते हैं --

१- पौराणिक कथापात्र

२- ऐतिहासिक कथापात्र

३- काल्पनिक कथापात्र

---

1. There are first of all, several means by which a writer may characterize his people. He may in the role of narrator discribe and pass judgement on this creatures of his imagination before he allows us to see them in action:

An introduction to Literary Criticism: Marlies K. Danziger, W. Stacy Johnson. Page: 23.

पौराणिक पात्र

पौराणिक कथावस्तुओं पर आधारित खण्डकाव्यों पर दृष्टिपात करने पर एक विशेष बात यह लक्षित हो जाती है कि अधिकांश खण्डकाव्यकारों ने अपनी-अपनी विचार-धारा एवं युगदृष्टि के अनुकूल काव्य में आवश्यक परिवर्तन कर डाले हैं। पात्रों का चरित्र-चित्रण भी कवियों ने बुद्धिसंगत, मौलिक एवं यथार्थ मानवीय धरातल पर किया है। आधुनिक काल के अनुरूप पौराणिक कथापात्रों को ढालने के हेतु उनके अलौकिक तत्वों को दूर करना आवश्यक हो गया तथा बौद्धिक एवं वास्तविक धरातल पर उनका प्रस्तुतीकरण करना था। आधुनिक काल के पौराणिक खण्डकाव्यों में महाभारत, रामायण, जैसे पुराणों के पात्र ही अधिक चित्रित हुए हैं।

आधुनिक खण्डकाव्यों में पौराणिक पात्र उसी रूप में चित्रित नहीं हुए हैं। आवश्यक परिवर्तन के साथ, मौलिक रूप में ही उनका पुनर्सृजन हुआ है। पुराणों में कथानक के अनुसार उनका चरित्र-चित्रण भी नितांत अलौकिक है। मानसिक द्वन्द्व उनमें बहुत ही थोड़ी मात्रा में पाया जाता है। वस्तुतः पुराणों में घटनाओं के चित्रण की ही प्रमुखता है, मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों की कम। आधुनिक कविगण अपने काव्य में पौराणिक अलौकिक पात्रों का चित्रण नहीं करते। उन अलौकिक पात्रों को मानवीय धरातल पर ले आकर उनके चरित्र का मानवरूप चित्रण करते हैं। कभी-कभी कवि पौराणिक पात्रों के परम्परागत चरित्र को बनाये रखते हुए उनके चरित्र का चित्रण करते हैं तथा कभी-कभी उनका परम्परा विरुद्ध चित्रण भी। इन दोनों ही रूपों का चरित्राविष्करण आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों में प्राप्त होता है।

पौराणिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण पूर्वछायावादी युग के खंडकाव्यों में

आधुनिक युग के प्रारंभिक चरण में अर्थात् पूर्वछायावादी युग में कथावस्तु के समान उसका पात्र एवं चरित्र-चित्रण भी परम्परा का पालन करने वाला अधिक रहा है। पात्रों के पुराणसम्मत चरित्र का पुनरालेखन ही इस काल के अधिकांश काव्यों में दृष्टिगोचर होता है।

आधुनिक कवि प्राचीन सांस्कृतिक आदर्शों की पुन: स्थापना हेतु पात्रों के चरित्र की पुन: सृष्टि करते हैं । आधुनिकता की ओर उन्मुख होने पर भी ये कवि पौराणिकता को पूर्णतया छोड़ते नहीं । यही कारण है कि उनके चरित्रचित्रण में पौराणिकता एवं आधुनिकता दोनों का समन्वय प्राप्त होता है ।

आधुनिक काल की बदलती राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव तत्कालीन साहित्य में खूब पड़ने लगा था तथा इस युग में विरचित पौराणिक खण्डकाव्यों -- 'हरिश्चन्द्र'[१], 'जयद्रथ वध'[२], 'द्रौपदी चीर हरण'[३], 'अभिमन्यु का आत्मबलिदान'[४] आदि में तत्कालीन बुद्धिवादी, आदर्शवादी मानवतावादी एवं राष्ट्रीयतावादी विचार-धाराओं की स्पष्ट झाँकी है । इन काव्यों के चरित्रचित्रण में पौराणिक आदर्शवाद एवं नवीन यथार्थवाद दोनों का सामंजस्य हुआ है ।

परम्परागत प्रख्यात पात्र तो मानवमात्र के मानस पटल पर अपनी अमिट छाप अंकित करते हैं -- "हृदय पर नित्य प्रभाव रखने वाले रूपों और व्यापारों की भावना को सामने लाकर कविता बाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य की अन्त: प्रकृति का सामंजस्य घटित करती हुई उसकी भावात्मक सत्ता का प्रसार करती है ।"[५] आधुनिक काल के कवियों का लक्ष्य तत्कालीन जनता के सम्मुख देश के ऐसे आदर्श चरित्रों को प्रस्तुत करना था जिनसे भारतीय जनता अपने अतीत की सांस्कृतिक महत्ता का अनुभव करे । इसी कारण पौराणिक आदर्श चरित्रों को केन्द्र बनाकर असंख्य काव्य इस युग में विरचित हुए । ऐसे ही आदर्श चरित्र को केन्द्र बनाकर विरचित खण्डकाव्य हैं -- 'हरिश्चन्द्र' तथा 'अभिमन्यु का आत्मबलिदान' ।

१- जगन्नाथदास रत्नाकर.
२- मैथिलीशरण गुप्त
३- तीर्थेश्वर त्रिपाठी.
४- कमलाप्रसाद वर्मा.
५- रस-मीमांसा -- रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ७.

हरिश्चन्द्र आदर्श पौराणिक पात्र है जो अपनी अटल सत्यनिष्ठा के कारण भारतीय जन-मानस में चिर प्रतिष्ठा पा सके। उनकी सत्यनिष्ठा का उज्ज्वल वर्णन करते हुए कवि ने प्रस्तुत काव्य में भारतीय अतीत की सांस्कृतिक गरिमा का गायन किया है। 'अभिमन्यु का आत्मबलिदान' में महाभारतीय उज्ज्वल पात्र वीर अभिमन्यु के चरित्र की कर्तव्यनिष्ठा का आदर्श प्रस्तुत हुआ है। शूरता, वीरता, वैश प्रेम आत्मत्याग आदि अभिमन्यु के चरित्र के विशिष्टगुण हैं। कवि का उदेश्य भी तो अभिमन्यु के कर्तव्यनिष्ठ चरित्र का अंकन प्रस्तुत करना था।[1]

महाभारत के कतिपय प्रमुख वीर पात्रों को आधार बनाकर विरचित है — 'जयद्रथ वध'। इसमें वीर अभिमन्यु के चक्रव्यूह भेदन एवं आत्मबलिदान का चित्रण तथा पुत्रहंता जयद्रथ के अर्जुन के हाथों वध का चित्रण है। महाभारत के प्रमुख पात्र-अर्जुन, कृष्ण, अभिमन्यु, जयद्रथ, दुर्योधन, युधिष्ठिर, उत्तरा, सुभद्रा आदि भी इस काव्य में आये हैं। परम्परागत रूप में ही उपर्युक्त पात्रों के चरित्र का प्रस्तुत काव्य में अंकन हुआ है। महाभारत के प्रमुख नारी पात्र द्रौपदी को आधार बनाकर उसकी विवशता का चित्र खींचने का प्रयत्न 'द्रौपदी चीरहरण' में हुआ है। आधुनिक युग की विवश नारी का वह प्रतीक है।

पौराणिक पात्रों के द्वारा आधुनिक युग में सत्यनिष्ठा, शौर्य, वीरता, कर्तव्यनिष्ठा, वैशप्रेम, आत्मत्याग जैसे सात्विक गुणों के प्रसार करने का कार्य आधुनिक कवियों ने किया है। "भारतेन्दु काल के कवि के मानसिक संस्कारों में अतीत की निधि सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी, तदुपरान्त सामाजिक यथार्थ। अतः कवियों ने सामाजिक यथार्थ को प्राचीनता के साथ समन्वित किया। चरित्र प्राचीन रहे, समस्या नयी, पात्र अतीत के रहे, जीवन दर्शन आधुनिक, आस्था का सिद्धांतवादी रूप पुरातन किन्तु व्यावहारिक रूप नवीन रहा।"[2] हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा, अभिमन्यु के कर्तव्यपालन एवं आत्मबलिदान आदि

१- "... आर्य गौरव मान का वह एक यही दृष्टांत है।"
अभिमन्यु का आत्मबलिदान : कमलाप्रसाद वर्मा - निवेदन, पृ० १.

२- महाभारत का आधुनिक हिन्दी प्रबन्ध काव्यों पर प्रभाव : डा० विनय, पृ० २७१.

में स्पष्ट यथार्थवाद की सीमा को लांघने वाली अलौकिकता की झांकी है । वस्तुतः उस काल के कवि परम्परागत चरित्रचित्रण प्रणाली से उन्मुक्त नहीं हुए थे । नन्ददुलारे वाजपेयी जी ने स्पष्टतः बताया है -- "... चरित्रों की अलौकिकता का वह स्वरूप अब भी शेष था ..... ।"[1] काव्य में पुरानी रूढ़ियों को अपनाने का आपने विरोध किया -- "..... काव्य साहित्य में पुरानी रूढ़ियों को अपनाना कवि कल्पना के स्वातंत्र्य का बाधक ही कहा जायगा ।"[2]

आगे इसी परम्परागत चरित्रचित्रण प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित हुआ ।

<u>पौराणिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण छायावादी युग के खण्डकाव्यों में</u>

छायावादी युग में भी महाभारत, रामायण तथा अन्य पुराणों के कथापात्रों को आधार बनाकर कुछ खण्डकाव्य रचे गये । उन पौराणिक कथापात्रों के चरित्र-चित्रण को भी इन सभी काव्यों में विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है । महाभारतीय पात्रों को आधार बनाकर विरचित खण्डकाव्यों में कीचकवध,[3] अभिमन्युवध,[4] वक-संहार,[5] वन-वैभव,[6] सैरन्ध्री,[7] नहुष,[8] अभिमन्यु-पराक्रम[9] आदि प्रमुख हैं । सुप्रसिद्ध वीर अभिमन्यु के चरित्र को केन्द्र बनाकर अभिमन्यु वध एवं अभिमन्यु पराक्रम काव्य विरचित हुए हैं । दोनों में ही वीरता के आदर्श के रूप में अभिमन्यु का चित्रण हुआ है । कीचकवध एवं सैरन्ध्री में महाभारत के प्रमुख पात्र

१- आधुनिक साहित्य : नन्ददुलारे वाजपेयी, पृ० १७.
२- वही.
३- शिवदास गुप्त.
४- रघुनन्दनलाल मिश्र.
५- मैथिलीशरण गुप्त.
६- वही.
७-८. वही.
९- देवीप्रसाद बरनवाल.

द्रौपदी का चरित्रांकन हुआ है । कीचक वध एवं सैरन्ध्री में द्रौपदी या सैरन्ध्री नारी के आदर्श एवं परिष्कृत धर्म के प्रतीक के रूप में आयी है । कुन्ती के अन्तर्द्वन्द्वों का मनोवैज्ञानिक चित्रण `कर्णसंहार` में हुआ है तथा इस कारण कुन्ती मानसिक संघर्षों से युक्त आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है । `धन-वैभव` में पाण्डव श्रेष्ठ युधिष्ठिर के आत्मिक वैभव का दिग्दर्शन कराया गया है । `नहुष` में इन्द्र पद को प्राप्त करने वाले राजा नहुष के चरित्र का चित्रण मिलता है । असंयमित काम के कारण मानव का जो पतन होता है, नहुष का चरित्र उसे स्पष्ट कर देता है । `नहुष` काव्य में नहुष एवं शची के मानसिक संघर्षों का वर्णन हुआ है जिससे ये दोनों पात्र अपने पौराणिक अस्तित्व को छोड़कर मानवीय धरातल पर आ जाते हैं । कीचक-वध तथा बक-संहार दोनों में ही दुष्टों की हत्या करके पीड़ितों की रक्षा करने वाले भीमसेन के चरित्र का चित्रण हुआ है ।

विवेच्य काल के खण्डकाव्यों में प्रमुख अन्य पात्रों में से रामायण के पात्र -- राम, सीता, लक्ष्मण, शूर्पणखा आ जाते हैं जिन पर `पंचवटी` काव्य विरचित हुआ है । `पंचवटी` में राम, सीता, लक्ष्मण एवं शूर्पणखा का चरित्र अंकित है । इसमें शूर्पणखा अपने पौराणिक राक्षसीय चरित्र से ऊपर उठती है, और सच्ची मानवी के रूप में अवतरित होती है ।

श्रीमद्भागवत् के `भ्रमर गीत` प्रसंग पर आधारित `उद्धवशतक`[1] के मुख्य पात्र कृष्ण, उद्धव तथा गोपिकाएं हैं । काव्य में इन सभी पात्रों का मानव सहज चरित्र-चित्रण हुआ है । ज्ञान के घमण्ड के साथ आने वाले उद्धव के गर्व को गोपिकायें अपनी अकाट्य उक्तियों से पराजित कर देती हैं । गोपिकाओं के स्वाभाविक तर्क इतने सुगठित मिलते हैं कि वे सीधी छाती से ही लगते हैं ।

१- जगन्नाथदास रत्नाकर.

मार्कण्डेय पुराण में वर्णित 'दुर्गासप्तशती' की देवी दुर्गा की महिमा का वर्णन करने वाला काव्य है 'शक्ति'। इसमें देवी दुर्गा शत्रुओं एवं अत्याचारियों के दमन एवं आश्रितों की रक्षा करने वाली देवी के रूप में चित्रित हुई है। देवी दुर्गा सचमुच शक्ति के प्रतीक रूप में प्रस्तुत काव्य में आयी है। अपनी देवी के रूप में भी वह नारी है। उसका मानवीय धरातल पर चरित्र-चित्रण हुआ है।

छायावादी युग के उपर्युक्त खण्डकाव्यों के पात्र एवं चरित्र-चित्रण पर एक विहंगावलोकन करने पर यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि छायावाद पूर्व युग के चरित्र-चित्रण से इस युग के चरित्र-चित्रण ने काफी क्रांति अपनायी है। धीरे-धीरे छायावादी युग तक आते-आते कथावस्तु से अधिक उनके चरित्रों को स्थान प्राप्त होता गया तथा राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, जैसे अलौकिक व्यक्तित्व वाले पौराणिक पात्र भी अपने मानवोचित विचारों व अन्तर्द्वन्द्वों के कारण मानव की साधारण भूमि में उतर आये। पात्रों के चरित्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण शुरू हुआ। 'नहुष', 'सैरन्ध्री' आदि खण्डकाव्य इसके निदर्शन हैं। सैरन्ध्री की द्रौपदी, एवं 'नहुष' का नहुष आदि पात्र अपने मानसिक संघर्षों व अन्तर्द्वन्द्वों के कारण अधिक यथार्थ बन गये। पात्रों के सत्य स्वाभाविक चरित्र-चित्रण पर भी कवियों का ध्यान गया। 'पंचवटी' की शूर्पणखा, 'उद्धवशतक' की गोपिकाएँ, कीचक-वध की द्रौपदी आदि के स्वाभाविक चरित्र-चित्रित हुए। 'शक्ति' खण्डकाव्य की देवी दुर्गा नारी मात्र का प्रतीक बनकर पाठकों के सम्मुख उपस्थित हुई। मनोवैज्ञानिक चरित्रचित्रणों ने न केवल पात्रों को ही नवजीवन प्रदान किया है, बल्कि काव्य को भी अधिक स्वाभाविक एवं यथार्थवादी बना दिया है।

पौराणिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण: छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में

छायावादोत्तर युग में भी भिन्न-भिन्न पौराणिक कथापात्रों के चरित्र के चित्रण करने वाले अगणित खंडकाव्य प्रणीत हुए। महाभारतीय पात्रों को प्रश्रय देकर निर्मित खण्डकाव्यों में कुरुक्षेत्र, नकुल, कर्ण, हिडिम्बा, रश्मिरथी, युद्ध, शल्यवध, पांचाली,

विपुलोपाख्यान कच देवयानी, सती-सावित्री, दानवीर कर्ण, द्रौपदी, उर्वशी, गुरुदक्षिणा, कौन्तेय कथा, चक्रव्यूह, द्रोण, सुवर्णा, उत्तरजय आदि का विशेष महत्त्व है। चरित्र-चित्रण का विकास आधुनिक काल के प्रारंभिक चरण से उत्तरोत्तर बढ़कर, छायावादोत्तर युग तक आ गया, तो उसमें अनुपम उत्कर्ष निखर आया। पौराणिक पात्रों का अलौकिक रूप सदा के लिए दूर हो गया। सभी पात्र व्यक्तित्व सम्पन्न होकर अपने अन्तर्मन की पुकार के अनुसार कार्यों में प्रवृत्त होने लगे। पात्रों के मनोविश्लेषणात्मक चरित्र-चित्रण तो इस युग की प्रमुखतम प्रवृत्ति बन गयी है, जो खण्डकाव्यों में अधिक प्रखर रूप में प्रकट हुई है। कुरुक्षेत्र, नकुल, हिडिम्बा, कर्ण, रश्मिरथी, द्रौपदी जैसे काव्यों में महाभारतीय पात्रों का मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण हुआ है। `कुरुक्षेत्र` काव्य में महाभारत के दो प्रमुख पात्र-युधिष्ठिर एवं भीष्म के युद्ध सम्बन्धी विचारों का विस्तृत विवेचन है। कर्ण के चरित्र के विभिन्न पहलुओं का उद्घाटन रश्मिरथी, कर्ण, दानवीर कर्ण, सुवर्णा जैसे काव्यों में हुआ है। `सुवर्णा` काव्य में तो सुवर्णा नामक एक कल्पित कथापात्र चित्रित हुई है। महाभारत में सुवर्णा नामक कथापात्र का उल्लेख तो नहीं हुआ है। `सुवर्णा` के कवि ने `महाभारत` की कथा की पृष्ठभूमि बनाकर सुवर्णा नामक राजकुमारी के साथ कर्ण के प्रणय का चित्र खींचा है। कर्ण सम्बन्धी सभी काव्यों में कर्ण की युद्धवीरता दानवीरता आदि का चित्र खींचा गया है।

महाभारतीय पुरुष पात्रों में पाँचों पाण्डव, कर्ण, दुर्योधन, दुःशासन, जयद्रथ, अश्वत्थामा, भीष्म, द्रोण, अभिमन्यु, शल्य, आदि ही मुख्य हैं। नारी पात्रों में द्रौपदी, कुन्ती, विदुला आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। युधिष्ठिर के चरित्र में दयालुता, क्षमा, धार्मिकता, अनासक्ति, कर्तव्य पालन आदि महान् गुण सम्मिलित हैं। `नकुल` खण्डकाव्य में उनके चरित्र के ये सारे गुण एक साथ प्रकट हो जाते हैं। अपने छोटे भाई नकुल के लिए बड़े से बड़े त्याग करने के लिए उद्यत होने वाले युधिष्ठिर का चरित्र सचमुच श्रेष्ठ है।

आधुनिक काल में तो सभी चीज़ों को अभिनव दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति बहुत बढ़ गयी है । इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप पौराणिक चरित्रों के परम्परामुक्त प्रस्तुतीकरण की प्रवृत्ति का जन्म हुआ । यही नहीं आधुनिक युग के बदलते हुए परिवेश में मानवतावादी दृष्टिकोण अधिक पनप उठा है । इस दृष्टिकोण के अनुसार नायक-नायिका सम्बन्धी परम्परागत विचारों व लक्षणों को तोड़कर निम्नवर्ग के पात्र भी काव्य के नायक-नायिका बन गये । युग के विद्रोह का स्वर ही इन सब में स्पष्ट सुनायी पड़ता है । महाभारत में एकलव्य का स्थान बहुत ही गौण रहा । आधुनिक काल में उसके गुणों का प्रकाशन हुआ तथा उनका चरित्र ऊपर उठाया गया । `महाभारत` के उपेक्षित पात्र निषाद एकलव्य के आधार पर `गुरु दक्षिणा` खण्डकाव्य की रचना हुई है । `हिडिम्बा` में हिडिम्बा के राक्षसी रूप का परिमार्जन हुआ है तथा उसका चरित्र एक वीर प्रणयिनी, कुलवधू मानवी के रूप में चित्रित है । हिडिम्बा के मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों के चित्रण ने उसके चरित्र को सत्य मनोवैज्ञानिक रूप प्रदान किया है । `उर्वशी` काव्य में काम के प्रतीक के रूप में उर्वशी के चरित्र का मनोज्ञ चित्रण हुआ है । `द्रौपदी` काव्य में पंचपाण्डवों द्रौपदी तथा अन्य प्रमुख महाभारतीय पात्रों की प्रतीकात्मक व्याख्या हुई है । प्रतीक रूप में पात्रों तथा उनके चरित्र का चित्रण भी छायावादोत्तर युग की देन है । द्रौपदी यहाँ जीवनी शक्ति का प्रतीक है । युधिष्ठिर आकाश, भीम समीर, अर्जुन अग्नि, नकुल जल सहदेव पृथ्वी धृतराष्ट्र बंधन, एवं उनके पुत्र अभिलाषाओं के प्रतीक के रूप में चित्रित हैं । प्रतीकों के रूप में ही काव्य में उनका चरित्र विकास हुआ है । आधुनिक छायावादोत्तर खण्डकाव्यों में चित्रित रामायण के पात्रों में राम, लक्ष्मण, भरत, रावण, कैकेयी, सीता आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान है । वनागमन, कैकेयी, अग्निपथ, सौमित्र, भूमिजा, संशय की एक रात, चित्रकूट जैसे खण्डकाव्यों में रामायण के प्रमुख पात्रों का चित्रण हुआ है । `अग्निपथ` को छोड़कर शेष सभी खण्डकाव्यों में श्रीराम का चरित्र चित्रित है । परम्परा से ही धीरोदात्त नायक के रूप में ही श्रीराम का चरित्र-चित्रण होता आ रहा है । वाल्मीकि के राम तुलसी तक आकर मर्यादा पुरुषोत्तम बन गये थे । आधुनिक काल में भी उनका अवतारी रूप तथा पुरुषोत्तम रूप दोनों सुरक्षित

है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने आदर्श मानव के रूप में अपने काव्य 'साकेत' में राम का चरित्र-चित्रित किया है। कैकेयी, सौमित्र, भूमिजा, जैसे छायावादोत्तर खण्डकाव्यों में भी राम के चरित्र-चित्रण सम्बन्धी इसी प्राचीन परम्परा का पालन हुआ है। किन्तु 'दशानन' में श्रीराम के चरित्र का परम्परा विरुद्ध रूप ही चित्रित हुआ है। प्रस्तुत काव्य में नायक के रूप में रावण तथा प्रतिनायक के रूप में राम का चित्रण हुआ है। रावण के चरित्र के महत्वपूर्ण अंशों का अंकन करते हुए राम के चरित्र की दुर्बलताओं को प्रकट किया गया है। इसका श्रीराम अपने कृत्यों पर पश्चाताप प्रकट करता है। रावण का चित्रण एक आत्माभिमानी व्यक्ति के रूप में हुआ है। वह सीताहरण के कारण को स्पष्ट करते हुए कहता है कि अपनी बहिन शूर्पणखा का नाक-कान काटना सीताहरण से बढ़कर घृणित कार्य है। विभीषण तथा सुषेण को अपने पक्ष में मिलाना भी राम का उचित कार्य नहीं रहा। बालि का वध एवं सुग्रीव से मैत्री भी श्रीराम के महान् व्यक्तित्व के अनुकूल नहीं ठहरती। क्योंकि --

"फिर अगणित सुग्रीव, विभीषण होंगे जग में
तुम ने बाँटे चिह्न दिये हैं, युग के मन में
मातृभूमि पद-दलित करते, यों विभीषण
किया करेंगे प्रतिदिन ही नूतन अन्वेषण।"[1]

हनुमान के द्वारा किये गये लंकादहन की भी भर्त्सना काव्य में हुई है। यही नहीं लंका पर अयोध्या का शासन भी भविष्य के लिए उपनिवेशवाद को खोलने वाला है, जो भी राम के चरित्र का कलंक बताया गया है। प्रस्तुत खण्डकाव्य में राम एवं रावण के चरित्र-चित्रण की परम्परागत प्रणाली का उल्लंघन किया गया है। 'संशय की एक रात' खण्डकाव्य में राम-रावण युद्ध के पूर्व राम के मन में उठने वाले संघर्षों का मनोविश्लेषणात्मक चित्र प्रस्तुत हुआ है। मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों में पड़कर अपने को अस्वस्थ पाने वाले श्रीराम में अलौकिकता का कण तक नहीं, वह आधुनिक युग का संघर्षशील मानव है।

---

१. दशानन : कैलाश तिवाड़ी 'विद्रोही', पंचम सर्ग, पृ० ६२.

`भूमिजा` में सीता परित्याग के बाद श्रीराम के मन में उठने वाले संघर्षों का चित्रण हुआ है, उसमें भी अलौकिक राम से अधिक लौकिक राम का रूप ही अधिक प्रकट होता है। `सौमित्र` एवं `चित्रकूट` में भी राम के चरित्र का परम्परागत रूप ही निखर आया है। सौमित्र में लक्ष्मण के वीरोचित चरित्र को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है तो `चित्रकूट` में आदर्श भाई के रूप में भरत का चरित्र-चित्रण यथार्थ की भूमि में हुआ है।

उपेक्षित पौराणिक पात्रों के उत्थान का प्रयास इस युग में प्रमुख रूप से हुआ है। `कैकेयी,` `अग्निपथ`, `पाषाणी` जैसे खण्डकाव्यों में क्रमशः कैकेयी, सिंहिका तथा अहल्या जैसे पौराणिक उपेक्षित एवं कलंकित पात्रों के चरित्र का उत्कर्ष दिखाया गया है। `रामायण` में कैकेयी का चरित्र विमाता के रूप में ही आया है। उसके चरित्र के कलंक को दूर करने का प्रयत्न आधुनिक युग के कवियों ने किया है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने `साकेत` नामक महाकाव्य में कैकेयी के चरित्र के कलंक को दूर करने का प्रयास किया। प्रस्तुत खण्डकाव्य में भी श्री शेषमणि शर्मा ने कैकेयी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक चित्र उपस्थित किया है। इस काव्य में कैकेयी अपनी करनियों पर पश्चात्ताप प्रकट करती है तथा श्रीराम से क्षमायाचना करती है। कैकेयी के चरित्र से कलंक को हटाकर, उसके चरित्र के मनोविश्लेषणात्मक चित्रण करने का सफल यत्न प्रस्तुत खण्डकाव्य में हुआ है।

सिंहिका रावण की द्वितीय पत्नी है, जिसके उपेक्षित चरित्र का उत्कर्ष `अग्निपथ` खण्डकाव्य द्वारा हुआ है। राक्षसी सिंहिका को एक वीर एवं आत्माभिमानी नारी के रूप में इस काव्य में चित्रित किया गया है। रावण की मृत्यु पर अग्निप्रवेश करने वाली सिंहिका का चरित्रविश्लेषण उस राक्षसी नारी को मानवीय धरातल पर ला खड़ा कर देता है।

`पाषाणी` खण्डकाव्य में उपेक्षित नारी अहल्या के चरित्र का मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण हुआ है। पौराणिक आख्यान के अनुसार मुनि गौतम के शाप से वह कलंकिता-

नारी शिला बन जाती है तथा श्रीराम के पादस्पर्श से उसका पुनरुत्थान भी होता है। 'साकेत' में अहल्या का चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक धरातल पर हुआ है। उसमें मुनि के शाप से उसका हृदय जड़वत् बन जाता है। महर्षि विश्वामित्र से वह अपने शापमोचन की बात से अभिज्ञ हो जाती है। श्रीराम के पाद स्पर्श से उस के हृदय की जड़ता दूर हो जाती है। शापमोचन को कवि ने मनोवैज्ञानिक उपचार सिद्ध कर दिया है।

पौराणिक पात्रों में श्रीकृष्ण का अपना अलग व्यक्तित्व है। उनके अवतारी रूप की महिमा तो सभी काव्यों में वर्णित है। आधुनिक काव्यों में कृष्ण के अवतारी रूप में थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन करके उसे आधुनिक परिवेश के अनुकूल चित्रित किया गया है। कुरुक्षेत्र युद्ध के प्रमुख सारथी कृष्ण के नीतिज्ञ रूप का चित्रण 'उत्तरायण', चक्रव्यूह, प्रवीर, कर्ण, रश्मिरथी, 'द्रौपदी' जैसे काव्यों में हुआ है।

'भागवत' के आधार पर विरचित 'उद्धवशतक' में गोपिकाओं के प्रिय के रूप में लोकरंजक कृष्ण का चित्र खींचा गया है। 'प्रयाण' के कृष्ण का चरित्र और भी उज्ज्वल है। अपने पुराने मित्र सुदामा की मैत्री को निभाने वाले आदर्श मित्र के रूप में इसमें कृष्ण का चरित्र आया है।

'वाजश्रवसी' में नचिकेता के मन में उठने वाले मानसिक संघर्षों का उज्ज्वल चित्रण हुआ है। प्रस्तुत काव्य में उपनिषद् के पात्र वाजश्रवा एवं नचिकेता का इतना मार्मिक मनोवैज्ञानिक चरित्र प्रस्तुत है कि ये दोनों आधुनिक युग के पिता-पुत्र मालूम होने लगते हैं तथा उनका संघर्ष आधुनिक युग का पूँजीवादी संघर्ष है। 'परीक्षित्' खण्डकाव्य में राजा परीक्षित् के चरित्र का मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण हुआ है।

इन हिन्दू पुराणों के अतिरिक्त ईसाई धर्म ग्रंथ 'बाइबिल' के आधार पर इस काल में 'अमृत पुत्र'[1] नामक खंडकाव्य रचित हुआ, जिसमें महात्मा ईसा के महान् चरित्र का

१- सियारामशरण गुप्त.

चित्रण सामग्री तथा रावणत्व के युद्ध से हुआ है । ईसा का महान् रूप ही उसमें चित्रित है ।

मुसलमानी संस्कृति व उनके धर्मपुराण पर आधारित है मैथिलीशरण गुप्त जी का खण्डकाव्य `काबा और कर्बला` । इसमें आपने इमाम-हुसैन का उज्ज्वल चरित्र-चित्रण किया है । कर्बला के नायक हुसैन सचमुच महापुरुष हैं जिनका आचरण आदर्श मानवता के अनुकूल है । `कवि ने मध्ययुग की धार्मिक सहिष्णुता और चारित्रिक उज्ज्वलता का वर्णन ही नहीं किया है वरन् प्रतिपक्षी की मूर्खता का चित्रण भी उदारता-पूर्वक प्रस्तुत किया है ।`[1]

आधुनिक युग में आकर पौराणिक पात्रों का आधुनिक परिवेशानुकूल चित्रण हुआ है । अधिकांश काव्यों में पौराणिक पात्रों के परम्परानुकूल चित्रण ही मिलता है तो कतिपय काव्यों में परम्परा-विरुद्ध चित्रण भी ।

आधुनिक युग में आकर पौराणिक पात्रों का मानवीय धरातल पर चित्रण हुआ है । अलौकिकता का अंश पूर्णतया विलीन हो गया है । पात्रों के ऐसे चरित्र-चित्रण में कवि की वैयक्तिकता की अधिक झलक दिखाई पड़ती है । जिस चरित्र पर कवि का मन अधिक रमा है, उसे आधार बनाकर उनके चरित्रगत विशेषताओं पर उन्होंने ध्यान लगाया है । ये पौराणिक पात्र भी मानवीय संस्कृति के प्रतीक बनकर मानवता का सन्देश दे देने वाले बन जाते हैं । सभी के सभी पात्र आधुनिक सामाजिक वातावरण में सांस लेने वाले संघर्षशील व्यक्तित्व वाले हैं । कतिपय पौराणिक पात्र केवल प्रतीक के रूप में आये हैं, उनकी आत्मा आधुनिक युग में जीती है ।

ऐतिहासिक पात्र

भारतवर्ष का इतिहास उज्ज्वल एवं वीर व्यक्तित्वों की कहानियों से भरा हुआ है । आधुनिक खण्डकाव्यकारों ने ऐसे ही ऐतिहासिक व्यक्तित्वों का चित्रण अपने काव्यों का विषय बनाया है, जिनका कोई निश्चित उद्देश्य व महत्व है । आधुनिक युग के प्रारंभिक

युगों में गुलामी की शृंखलाओं में जकड़ी भारत भूमि के साथ यहाँ की जनता भी हताश एवं निराश रही । तत्कालीन कविगणों ने भारत के उज्ज्वल अतीत से ऐसे व्यक्तियों के चरित्रों को ग्रहण किया तथा चित्रण किया जिससे हताश एवं निराश जनता में नवोन्मेष हो जाये । 'स्वातंत्र्य पूर्व भारतवर्ष' में व्यक्ति-व्यक्ति वेश के स्वातंत्र्य की ओर उन्मुख था । इतिहास के अमर पात्रों को केन्द्र बनाकर इस काल में अनेक खण्डकाव्य रचे गये । तत्कालीन भारतीय, सामाजिक, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में इन ऐतिहासिक पात्रों व उनके चरित्रचित्रणों की विशेष महत्ता थी ।

ऐतिहासिक पात्रों के चरित्र-चित्रण करते समय कवियों को अधिक ध्यान देना पड़ता है तथा उन्हें उन पात्रों की ऐतिहासिकता को बनाये रखते हुए ही उनका चित्रण करना पड़ता है ।

ऐतिहासिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण : छायावादीपूर्व युग के खण्डकाव्यों में

पूर्वछायावादी युग में भारत की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति बहुत ही अस्त-व्यस्त थी । देश अस्वतंत्र था, देशवासी भी । इस समय भारत के इतिहास से गड़े मुर्दों को उखाड़कर, उसे नितांत भूल रूप में नवीन परिवेशानुकूल प्रस्तुत करने का प्रयास तत्कालीन कवियों ने किया । भारतवर्ष के इतिहास के राजपूती इतिहास तथा मौर्य वंशी इतिहास के आधार पर विशेष्य काल में रंग में भंग,[१] मौर्य विजय,[२] महाराणा का महत्व,[३] वीर हमीर[४] जैसे ऐतिहासिक खण्डकाव्य प्रणीत हुए ।

भारतवर्ष के इतिहास में राजपूती इतिहास का विशेष महत्व है । उसमें राजपूतों की वीरता तथा आत्म गौरव का उज्ज्वल वर्णन है । 'रंग में भंग' में कविवर गुप्त जी

१- मैथिलीशरण गुप्त जी
२- सियारामशरण गुप्त
३- जयशंकरप्रसाद,
४- रामकुमार वर्मा

के मध्ययुगीन भीतियावदिता, कर्तव्यनिष्ठा आदि का मार्मिक चित्रण किया है। राजपूती वीरों की वीरता तथा राजपूत स्त्रियों के सती प्रथा पालन का वर्णन भी प्रस्तुत खण्डकाव्य में हुआ है। प्रस्तुत खण्डकाव्य में सुप्रसिद्ध राजपूत वीर बूँदी के राणा लालसिंह तथा चित्तौड़ के राजा वैतल की वीरता का चित्रण हुआ है। राव कवि वाक्पी तथा पाजाणी नारी प्रभावती के स्वधर्म पालन का चित्र भी सुस्पष्ट रूप से काव्य में अंकित है।

`मौर्य विजय` खण्डकाव्य भारतवर्ष के मौर्य साम्राज्य के प्रख्यात वीर चन्द्रगुप्त मौर्य की वीरता का वर्णन करने वाला है। कवि ने ऐसा करके भारतीयों को स्वदेश प्रेम की ओर उन्मुख करने का बड़ा कार्य किया है। कवि ने स्वयं बताया है --" यदि सौभाग्य से किसी जाति का अतीत गौरव-पूर्ण हो और वह उस पर अभिमान करे तो उसका भविष्यत् भी गौरव पूर्ण हो सकता है।"[1]

सुप्रसिद्ध राजपूत वीर राणा प्रताप के महान् चरित्र का उद्घाटन `महाराणा का महत्व`[2] में हुआ है। स्त्रियों के प्रति आदर भारतीय संस्कृति का एक विशेष गुण है। शत्रु की पत्नी की रक्षा करके स्वयं राणा ने आर्य संस्कृति की गरिमा को बनाये रखने का कार्य किया।

वीर हमीर काव्य में इतिहास प्रसिद्ध वीर राजा हमीर का उज्ज्वल चरित्र-चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में भी ऐसे ही वीर व्यक्तित्वों की आवश्यकता है।

छायावाद पूर्व युग के कवियों ने अपने ऐतिहासिक खण्डकाव्यों के लिए राजपूत एवं आर्य इतिहास से ही वीर पात्रों को चुन लिया है। उनकी ऐतिहासिकता को बनाये रखते हुए, तत्कालीन परिवेश के अनुकूल उनके चरित्र-चित्रण भी इन कवियों ने किया है।

१- मौर्य विजय : सियारामशरण गुप्त, भूमिका, पृ० ४.

२- जयशंकर प्रसाद.

ऐतिहासिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण : छायावादी युग के खण्डकाव्यों में

भारतवर्ष के अतीत तथा वर्तमान इतिहास के कतिपय पात्रों को केन्द्र बनाकर इस युग में विकट भट,[१] चितौड़ की चिता,[२] तुलसीदास,[३] आत्मोत्सर्ग[४] जैसे खण्डकाव्य लिखे गये। 'विकट भट' में जोधपुर के राजा विजयसिंह एवं उनके दरबार के एक विकट भट के चरित्र का, एवं नायक तेज का उज्ज्वल वर्णन किया गया है। विकट भट के बेटे वीर सवाईसिंह की वीरता का चरित्र भी काव्य में अंकित है।

राजपूतिनी नारियों के आत्मत्याग एवं जौहर व्रत का चित्र खींचने वाला खण्ड-काव्य है 'चितौड़ की चिता'। राणा संग्राम सिंह की वीरता एवं रानी करुणा के सतीत्वमण्डित का जीता जागता चित्र प्रस्तुत काव्य में उपस्थित है। रानी के मनोविकारों का मनोवैज्ञानिक चित्रण से रानी का चरित्र खूब निखर उठा है।

भारतवर्ष के अतीत के इतिहास की ही समान समसामयिक इतिहासों पर भी खण्डकाव्यों का निर्माण हुआ है। एक समसामयिक घटना पर आधारित रचना है 'आत्मोत्सर्ग'। भारत के हिन्दू-मुस्लिम दंगे के अवसर पर गांधीजी के उपदेशों को शिरोधार्य करके, सार्वजनिक कल्याण के लिए अपनी बलि चढ़ाने वाले वीर गणेश शंकर विद्यार्थी के चरित्र का मार्मिक चित्रण इसमें उपस्थित है।

मध्यकालीन भारत के वीर राजा सिद्धराज जयसिंह के वीर चरित्र का अवतरण हुआ है 'सिद्धराज'[५] में। मालवेश्वर नरवर्मा का भी चरित्र इसमें चित्रित है।

१- मैथिलीशरण गुप्त जी.

२- राजकुमार वर्मा.

३- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला.

४- सियारामशरण गुप्त.

५- मैथिलीशरण गुप्त.

भारत के मध्यकालीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर निराला ने अपने काव्य `तुलसीदास` में महाकवि तुलसीदास के चरित्र का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। मुसलमानी शासन सत्ता से त्रस्त भारतीय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में समन्वयकारी लोकनायक के रूप में अवतरित तुलसीदास के चरित्र के एक विशिष्ट अंश का चित्रण ही इस काव्य में प्रस्तुत है। अपनी पत्नी रत्नावली के उद्बोधन से ईश्वरोन्मुख होने वाले तुलसी का चरित्र इस काव्य का प्राण तत्त्व है। इसमें तुलसीदास के जीवन-संघर्षों की स्थूल भूमि से सूक्ष्म मनोजगत की ओर प्रयाण का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण हुआ है।

सचमुच छायावादी युग में कविगणों का ध्यान पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रणों पर अधिक रम गया।

ऐतिहासिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण : छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्य में

छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों के लिए भी भारतीय अतीत एवं वर्तमान इतिहास से अनेकों प्राणवान पात्र प्राप्त हुए। इस काल में भारतवर्ष के प्राचीन ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को आधार बनाकर गौरावध, अशोक, सिद्धार्थ, चंदेरी का - जौहर, अजेय पौरुष, सुनन्दा, प्रतिपदा, रत्ना की बात जैसे खण्डकाव्य प्रणीत हुए तो भारतवर्ष के आधुनिक इतिहास के आधार पर आत्मोत्सर्ग, बंगाल का काल, तात्या टोपे, शिवाजी, वीर लाल पद्मधर, झांसी की रानी, प्राणार्पण, महारानी लक्ष्मीबाई, मुक्तियज्ञ, कारा जैसे खंडकाव्य रचे गये।

`गोरा बध` में सुप्रसिद्ध राजपूत वीर गोरा की वीरता एवं राज्य हित अपनी बलि चढ़ाने का वर्णन हुआ है। देशभक्ति एवं वीरता दोनों वीर गोरा के चरित्र के अंग हैं।

कलिंग युद्ध के उपरान्त होने वाले अशोक के मन: परिवर्तन का मनोवैज्ञानिक चित्रण `अशोक` खण्डकाव्य में उपलब्ध है। अशोक के मानसिक द्वन्द्वों के चित्रण ने अशोक के चरित्र को और स्पष्ट किया है।

राजा बिंबिसार एवं उनके पुत्र कोणिक के चरित्र का स्पष्ट उद्घाटन `तप्तगृह` खण्डकाव्य में हुआ है । पिता एवं पुत्र दोनों के मानसिक संघर्ष काव्य में चित्रित हैं । मुसलमान शासन काल से सम्बद्ध भारतवर्ष के इतिहास का एक उज्ज्वल पात्र है बापा रावल । बापा रावल तथा गज़नी के बीच के घोर युद्ध का वर्णन करते हुए कवि ने अपने काव्य `सिंहद्वार` में दोनों के चरित्र का चित्रण भी किया है । बापा रावल वीर है साथ ही साथ भारतीय संस्कृति का संरक्षक भी । राजपूत राणा वीर मेदिनीराय के चरित्र का चित्रण `चंदेरी का जौहर` खंडकाव्य में मिलता है । `कोणार्क मन्दिर` से सम्बन्ध ऐतिहासिक कथा के मुख्य पात्र हैं उड़ीसा के राजा नरसिंह देव, शिल्पि विशु तथा शिल्पि का बेटा धर्मपाद । तीनों व्यक्तियों के चरित्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण `कोणार्क` काव्य में हुआ है । महाराणा प्रताप के शूरवीर चरित्र का प्रोद्घाटन करने वाला काव्य है `अजेय पौरुष` । `प्रतिपदा` खंडकाव्य में भी मेवाड़ के वीर दुर्जयसिंह के चरित्र का चित्रण हुआ है ।

भारतवर्ष के आधुनिक इतिहास के आधार पर विरचित खण्डकाव्यों में भारत के स्वतंत्रताप्रेमी वीर व्यक्तित्वों का भी चरित्र अंकित हुआ है । `शिवाजी`[1] खण्डकाव्य में सुप्रसिद्ध मराठा वीर शिवाजी का महान् चरित्र अंकित है । सन् सत्तावन के भारतवर्ष के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने वाले वीर तात्या टोपे, `तात्या टोपे` खण्डकाव्य का नायक है तो झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को आधार बनाकर रचित खण्डकाव्य है महारानी लक्ष्मीबाई । महारानी लक्ष्मीबाई का चित्रण वीर-आदर्शपूर्ण क्षत्राणी नारी के रूप में हुआ है । उनके लिए `चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की मूर्ति कायरता की मूर्ति थी । उनकी राय में ज्वाला में जल मरने से अधिक तलवार लेकर स्वयं ज्वाला बनना, क्षत्राणी के लिए अधिक श्रेष्ठ था ।`[2] स्वदेशरक्षा के लिए गोरों के विरुद्ध लड़कर लड़ते-लड़ते रणभूमि में ही

१- उमाकांत मालवीय.

२- `पद्मिनी गगन से कहती है
आयेगा जौहर से निदान.
मैं तो कहती हूँ उसने ही
दिखलाया अबला का स्वरूप
क्या कर मैं ले तलवार नहीं
बन सकती थी ज्वाला स्वरूप ।`

अपने प्राणों को विसर्जित करने वाली रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र, भारतवासियों के लिए आदर्श है। 'वीर लाल पद्मधर' में भी आधुनिक भारत के वीर सपूत मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ाने वाले पद्मधर के उज्ज्वल चरित्र का अंकन हुआ है। 'कुटिया का राजपुरुष' खण्डकाव्य में भारतवर्ष के भूतपूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के व्यक्ति वैशिष्ट्य का मनोज्ञ चित्रण हुआ है।

आधुनिक खण्डकाव्यों में जिन ऐतिहासिक पात्रों का चरित्र-चित्रण हुआ है वह अवश्य स्वाभाविक है, मनोवैज्ञानिक भी, साथ ही साथ अपनी ऐतिहासिकता को भी अक्षुण्ण रखने में समर्थ है।

काल्पनिक पात्र

खण्डकाव्य की कथावस्तु की ही भाँति उसके कथापात्रों के लिए प्रख्यात होने की आवश्यकता नहीं। काल्पनिक काव्यों में कवियों के भावजात व्यक्ति ही नायक-नायिका तथा अन्य पात्र बन जाते हैं। आधुनिक काल के खण्डकाव्यों में भी खूब भावजात चरित्र प्रस्तुत हुए हैं। वे सबके सब स्वतंत्र अस्तित्व रखने वाले भी हैं। पौराणिक एवं ऐतिहासिक पात्रों के चरित्र-चित्रण करते समय तो कवि को सजग रहना पड़ता है कि कहीं उसका चित्रण परम्परा विरुद्ध या अनैतिहासिक न हो जाय। कल्पित कथा पात्रों कवि अपने विचारों व कल्पनाओं के अनुरूप रूप दे सकते हैं।

काल्पनिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण : छायावाद पूर्व के खण्डकाव्यों में

श्रीधर पाठक ने सर्वप्रथम एंजेलिना एवं एडविन के चरित्र का चित्रण अपने अनुवाद काव्य 'एकांतवासी योगी' में कर दिया है। नायिका एंजेलिना, एवं नायक एडविन के प्रेम वर्णन के बीच उन दोनों के चरित्र-चित्रण का सफल निर्वाह भी कवि ने किया है। प्रसाद की रचित प्रेमपथिक (ब्रजभाषा) में तो मूर्त चरित्रों का नितांत अभाव है। इन्हीं के प्रेमपथिक के खड़ीबोली परिवर्द्धित संस्करण में नायक-नायिका के चरित्र का चित्रण अवश्य हुआ है। रामनरेश त्रिपाठी के काव्य 'मिलन' के नायक-नायिका हैं आनन्दकुमार

एवं विजया । उन दोनों का तथा एक अन्य कथापात्र मुनि का चरित्र प्रस्तुत काव्य में चित्रित हुआ है । देशप्रेम की ओर प्रवृत्त होने वाले तीनों के व्यक्तित्व को काव्य में प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है । सामाजिक अत्याचारों से पीड़ित एक किसान का चरित्र चित्रण ही वस्तु है द्वारा कविवर गुप्त जी ने अपने खण्डकाव्य `किसान` में किया है । `अनाथ` का नायक मोहन भी पीड़ित जनसाधारण का प्रतिनिधि होकर सियारामशरण गुप्त जी के काव्य में अवतीर्ण हुआ है ।

`पथिक` काव्य का काव्यनायक पथिक देश सेवा के पथ का पथिक है । उसका चरित्र-चित्रण कवि ने ऐसा किया है कि उसमें हमारे राष्ट्रपिता महात्मागांधी के चरित्र का आभास मिलता है । पथिक मानों गांधीजी का प्रतिरूप है ।

काल्पनिक पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण : छायावादी युग के खण्डकाव्यों में

इस काल में आकर खण्डकाव्य में कथावस्तु से अधिक पात्रों के चरित्र-चित्रणों को प्रधानता होने लगी । ग्रंथि, आंसू आदि ऐसे काव्य हैं जिनमें पात्रों व उनके चरित्रों की स्पष्ट रूपरेखा तो उपलब्ध नहीं होती । यह तो छायावादी काव्यों की एक विशेषता ही रही । माहेश्वरी सिंह कृत `सुहाग` के पात्रों की भी यही दशा है । इन तीनों में ही नायक-नायिका का वर्णन है । उनका चरित्र विश्लेषण भी है । इनके प्रस्तुतीकरण में वैयक्तिकता का इतना अधिक प्रभाव है कि उन पात्रों के साथ कवि का वैयक्तिक सम्बन्ध प्रतीत होता है ।

स्वदेश रक्षा के लिए प्रयत्नशील नायक-नायिका वसन्त तथा सुमना के चरित्र का स्पष्ट क्रम `स्वप्न` खण्डकाव्य में हुआ है । नायक-नायिका के वैयक्तिक प्रेम आगे बढ़कर सामाजिक प्रेम के धरातल को पहुंच जाता है ।

इन तीनों काव्यों में अवश्य विषय से अधिक विषयी को ही प्रमुख स्थान मिला है । व्यक्ति के भावों एवं विचारों का सुन्दर निरूपण उपर्युक्त काव्यों में हुआ है ।

छायावादोत्तर युग में काव्यों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान पात्रों के चरित्र-चित्रणों को प्राप्त हुआ । पात्रों के चरित्र का मनोवैज्ञानिक एवं मनोविश्लेषणात्मक चित्रण प्रस्तुत होने लगा ।

मैथिलीशरण गुप्त जी कृत `अजित` में सामाजिक अत्याचारों से पीड़ित अजित नामक गरीब मजदूर के चरित्र का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत हुआ है । काव्य में सचमुच कथावस्तु से अधिक अजित के अन्त:संघर्षों को भी प्रमुखता मिली है । `बरगद की बेटी`[1] में एक ओर क्रूर जमींदार का चित्रण हुआ है तो दूसरी ओर गांव की अबोध बालिका लहरा, तथा उसके प्रेमी भोले भाले साधिक का भी सफल चित्र खींचा गया है । पात्रों के मानसिक संघर्षों के कारण ही काव्यकथा आगे की ओर बढ़ गयी है । ग्रामीण लोगों का भोला-भाला चरित्र एवं नगरनिवासियों के छल-कपट एवं क्रूरता को कविवर ने पात्रों के चरित्र-चित्रण के द्वारा स्पष्ट दिखाया है । लहरा और साधिका ग्रामीण निरीह जन है तो बनवार शहरी धूर्त का प्रतीक है ।

`चाँदनी रात और अजगर`[2] में कवि अपने ही मानसिक विचारों का मनोविश्लेषणात्मक वर्णन प्रस्तुत करते हैं । मानव जीवन की व्यस्तता का चित्र इसमें स्पष्टतया व्यक्त हुआ है । कवि के मानसिक संघर्षों एवं वैयक्तिक विकार विचारों से स्वयं उनका चरित्र परिव्यक्त हो जाता है ।

नरेन्द्र शर्मा कृत `कामिनी` नामक खण्डकाव्य में नारी की प्रतिमूर्ति के रूप में कामना तथा उसके प्रिय अतिथि का चरित्र-चित्रण हुआ है । गृहलक्ष्मी`[3] खण्डकाव्य में एक आदर्श कुलवधू का चरित्र चित्रित है । इस काल के सभी काव्यों में मनोविश्लेषण द्वारा पात्रों का सुन्दर चरित्र-विकास दिखाया गया है ।

१- उपेन्द्रनाथ `अश्क`.

२- वही.

३- गिरिजादत्त शुक्ल `गिरीश`.

खण्डकाव्य में व्यक्ति के जीवन के एक ही पक्ष का चित्रण होता है। उसका रूप भी लघु रहता है। बहुत ही कम पात्रों को उसमें स्थान मिलता है। महाकाव्य की भाँति व्यक्ति के चरित्र के सर्वांगपूर्ण विकास के लिए खंडकाव्य में अवकाश नहीं रहता। इसमें केवल व्यक्ति के चरित्र के एक ही पहलू का चित्रण रहता है। तभी तो खंडकाव्य में थोड़े ही पात्र आ जाते हैं लेकिन उनके व्यक्तित्व के उद्दिष्ट पक्षों के आवश्यक विकास का उचित अवसर मिलता अवश्य है। चरित्र-चित्रण की मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली छाया-वादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में खूब उपलब्ध होती है। यह मनोविश्लेषण या तो अपने प्रमुख एवं प्रारंभिक रूप में मानसिक तथा स्नायविक रोगों की चिकित्सा की विशेष विधि रही है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांत ही इस प्रक्रिया के मूल में काम करने वाले हैं। सिग्मण्ड फ्रायड ने पहले पहल इस विधि का प्रयोग चिकित्सा विधि में दिखाया। फिर तो धीरे-धीरे साहित्य क्षेत्र में भी मनोविज्ञान का प्रभाव बढ़ता चला गया तो, मनोविश्लेषण भी पात्रों के चरित्र-चित्रणों में प्रमुख होने लगा। पात्रों के अन्तर्द्वन्द्वों को स्पष्ट करने में इस विधि ने अपनी सफलता दिखायी है। यह मनोविश्लेषणात्मक चरित्र-चित्रण तो चरित्र-चित्रण-प्रणाली के क्रांतिकारी विकास का ही द्योतक है। आधुनिक काल के प्रारंभ में पात्रों के चरित्र का स्थूल चित्रण ही होता था, धीरे-धीरे उसके स्थान पर मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण ने जड़ पकड़ लिया। मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण कला के विकास की अनुपम उपलब्धि है।

प्रकृति-चित्रण

प्राचीन काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्यों के लिए प्रकृति चित्रण की अनिवार्यता घोषित की है। खण्डकाव्य में प्रकृति चित्रण अनिवार्य तो नहीं। उसके लघु कलेवर में उसके लिए अवकाश भी कम ही मिलता है। लेकिन अपने खण्डकाव्यों में यत्र-तत्र आवश्यक स्थलों पर कवियों ने प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है।

आधुनिककाल के प्रारम्भ में गोल्डस्मिथ के सुप्रसिद्ध काव्य `द हरमिट` का खड़ी-बोली हिन्दी में स्वतंत्रानुवाद करते हुए कविवर श्रीधर पाठक ने स्वतंत्र रूप में प्रकृति का मनोज्ञ चित्रण किया है --

`टाइन नदी के रम्य तीर पर, भूमि मनोहर हरियाली
लटक रहीं झुक रहीं जहाँ झुमलता, झारें जल से डाली
चिपटा हुआ उसी के तट से उज्ज्वल उच्च विशाल
शोभित है एक महल बाग में, बाने है एक ताल ।"

गोल्डस्मिथ के `द हरमिट` के २६वां पद का यह स्वतंत्र अनुवाद है । [1]

" My father lived beside the Tyne
A Wealthy lord was he
And all his wealth was marked as mine
He had but only me."

हिन्दी अनुवाद में हरी-भरी प्रकृति का आकर्षक वर्णन हुआ है तो,ऊजड़ ग्राम में उजड़ी हुई प्रकृति तथा पहले की सम्मोहक प्रकृति का वर्णन मिलता है । एक उदाहरण नीचे है--

" हे प्यारे औबर्न, सकल गामन माँ न्यारे ।
जहाँ श्रमी कृषिकार लहे सुख सम्पति पूरे ।
जहाँ रसीली ऋतु बसन्त पहले ही आवत ।
ग्राम समय विलमाय फूल फल देर लगावत ।"

यह तो `द डसर्टेड विलेज` के निम्नलिखित पंक्तियों का अनुवाद है -- [2]

"Sweet Auburn! loveliest village of the plain,
Where health and plenty cheered the labouring swain
Where smiling spring its earliest visit
And parting summer's lingering belooms delayed"

---

1. The Hermit: Goldsmith, Stanza 26, page: 31.
2. The Deserted Village: Goldsmith. Lines 1-4.

प्रकृति के अनुपम पुजारी कवि जयशंकर प्रसाद जी के प्रेमपथिक में तथा रामनरेश त्रिपाठी जी के तीनों खण्डकाव्य-पथिक, मिलन तथा स्वप्न` में प्रकृति की मनोहर छटा का अंकन हुआ है । `पथिक` में दक्षिण भारत तथा रामेश्वरम के सागर-तट की आकर्षक झांकी है तो `स्वप्न` में काश्मीर की मनोहारी सुषमा अंकित है । "`पथिक` मेरी दक्षिण-यात्रा का स्मृति-चिह्न है और यह स्वप्न उत्तर यात्रा का ।"[1] `पथिक` का प्रारंभिक छन्द ही कवि के प्रकृतिचित्रण वैभव का सप्राण प्रमाण है --

"राग-रथी, रवि राग-पथी अविराम-विनोद बसेरा ।
प्रकृति भवन के सब चित्रों में सुन्दर सरस सवेरा ।
एक दिवस अतिमुदित उदधि के वीचि-चुम्बित तीरे,
सुख की भांति मिला प्राणी से आकर धीरे-धीरे ।"

कवि लिखते हैं --" १९२० ई० में, मैं रामेश्वरम की यात्रा पर गया था । वहाँ पहली बार समुद्र देखा । उसकी छवि देखकर आत्मविभोर हो उठा । मारे प्रसन्नता के दोनों पैर सागर के पानी में कर एक शिला पर बैठ गया और मुंह से अपने आप एक पद निकल गया । वही पथिक का प्रथम पद है ।"[2] इसी प्रकार `मिलन` में --

" नीरव निशा तपोवन नीरव
शांत दिशा आकाश ।
नील तारागण करते थे
झिलमिल अल्प प्रकाश ।
प्रकृति मौन, चराचर निद्रित
अति निस्तब्ध समीर ।"[3]

१- स्वप्न : रामनरेश त्रिपाठी, भूमिका.

२- महाकवि विशेषांक : सम्मेलन पत्रिका, पृ० २५४-२५५.

३- मिलन : रामनरेश त्रिपाठी, पृ० ११.

तथा

" गगन-नीलिमा में हीरे का
तेज-पुंज अभिराम ।
एक पुष्प आलोकित करता
था जल-थल-नभ-धाम ।"[1]

ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ प्रकृति का आकर्षक चित्रण हुआ है ।

'स्वप्न' खण्डकाव्य में भी प्रकृति का विभिन्न रूपों में वर्णन मिलता है । 'स्वप्न' में कवि का कथन है --

" मैं प्रकृति का पुजारी हूँ । इससे प्रकृति के प्रति मेरा अतिरिक्त अनुराग 'पथिक' की तरह इसमें भी जहाँ तहाँ उमड़ पड़ा है । काश्मीर में जिन प्राकृतिक दृश्यों ने मुझे लुभा लिया था, उनका वर्णन मैंने इसके अनेक पदों में किया है ।"[2]

स्वच्छंदतावादी प्रकृति-निरीक्षण की परम्परा श्रीधर पाठक के समय से चली आ रही थी । उसी का विकसित रूप रामनरेश त्रिपाठी में प्राप्त होता है । आधुनिक काल के प्रारंभिक युग में प्रकृति के स्वतंत्र निरीक्षण का प्रयत्न ही दृष्टिगत होता है । यह तो तत्कालीन इतिवृत्तात्मक काव्यप्रवृत्ति के प्रभाव के कारण ही है कि कवि दर्शक की भाँति प्रकृति को निरखता है तथा उसका चित्र खींचता है । छायावादी युग में आकर प्रकृति चित्रण की इस परम्परा में परिवर्तन आ गया । छायावाद पूर्व कवियों ने प्रकृति के अन्तराल में प्रविष्ट होकर उसके रहस्य को खोजने का कष्ट नहीं उठाया है । लेकिन यह प्रवृत्ति बाद में दर्शित हुई ।

छायावाद काल में विरचित ग्रंथि, आँसू, तुलसीदास जैसे काव्यों में प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण दृष्टिगत होता है । 'ग्रंथि' के प्रारंभ में कवि के नौकाविहार के

---

१. मिलन : रामनरेश त्रिपाठी, पृ० २८.
२. स्वप्न : रामनरेश त्रिपाठी, भूमिका.

वर्णन प्रसंग में प्रकृति के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूपों की झाँकी मिलती है। `सुहाग` का नायक दुल्हन से कहता है --

" सूर्य मत करना आज प्रभात
आज है प्रथम मिलन की रात।"[1]

" जलती आँखों की ज्वाला चल,
पाषाण खंड रहता जल-जल
ऋतु सभी प्रबलतर बदल-बदल कर आते
वर्षा में पंक-प्रवाहित सरि
है शीर्ण-काय-कारण हिम अरि,
केवल दुःख देकर उदर भरि जन जाते।"[2]

इसमें प्रकृति वर्णन के द्वारा भारतीय दयनीय दशा का अंकन भी हो पाया है।

छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में भी प्रकृति के विभिन्न रूप में चित्रण हुआ है। प्रकृति के यथातथ्य रूप का वर्णन अधिकांश खण्डकाव्यों में उपलब्ध होता है --

" भारत-माता नहीं भूमि वह केवल, जिसका मुकुट हिमाचल,
सिंधु करता जिसके चरणों को है अपने जल से स्नान,
जिसमें पर्वत, दुर्ग, भवन हैं, खेत, कूप अमराई, खानें,
जिसमें चित्र-गुफाएं मन्दिर, घर, सरिताएं, तीर्थ स्थान।"[3]

अपने `कोणार्क` नामक खंडकाव्य में श्री रामेश्वरदयाल दुबे ने प्रकृति का सरल एवं अलंकृत दोनों प्रकार का चित्रण किया है। इसमें आपने प्रकृति के चित्रण द्वारा कथा-वस्तु में प्रवाह, उत्तेजना और मनोहारिता प्रदान की है। यथा --

---

१. सुहाग : माहेश्वरी सिंह महेश.
२. तुलसीदास : निराला, पृ० २०.
३. स्वतंत्रता की बलिवेदी : जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, पृ० ८०.

" श्यामपटी पर चित्र खींचता कोई चतुर चितेरा ।
जिसमें चित्रित रहा था सुखमय सुन्दर सरस सवेरा ।।
आकृतियाँ वे मेघ बनाते, किरणें रंगती जाती ।
विद्युतधुरं चंचल चित्रों से अपने कला सजाती ।।
प्रभापूर्ण प्राची में प्रात: पल-पल पर परिवर्तन ।।
- - -
।।"[१]

प्रस्तुत खण्डकाव्य में यत्र-तत्र, किन्तु यथास्थान पर प्रात:काल, सन्ध्या, रात, वनादि एवं सागर का बड़ा सजीव वर्णन हुआ है ।

"दिन हो गया समाप्त शान्त थी सान्ध्य घनों की लाली ।
धीरे-धीरे खोल रही थी श्यामा चादर काली ।।"[२]

तथा

गिरि उपत्यका के अंचल में सरस सघन वनराई ।
तत्पर जहाँ कुंज रहते हैं करने को पहुनाई ।।
लता लिपट कर कहीं झुलती, शाखी शांत खड़े हैं ।
शिला-खण्ड निर्लिप्त कहीं पर भूतल बीच गड़े हैं ।।[३]

मानव अपने ही अन्तर्मन को प्रकृति में देख लेता है --

" मेरे ही मानस-मंथन की अनुकृति सागर-मंथन ।
लहरों में प्रतिध्वनित हो रहा मेरा करुण-क्रन्दन ।।[४]

'रत्नावली' खण्डकाव्य में पूनम के चाँद का वर्णन हुआ है --

" देखो !
वह क्षितिज के उस पार
पूनम का लाल चाँद

१- कोणार्क : रामेश्वर दयाल दुबे, पृ० ८.
२-३-४. वही, पृ० ६७, पृ० १८, पृ० १८.

निकला है कुसुमामी रंग में नहाया सा,
ज्ञात नहीं पीर बांटता है
या सागर भर नीर बांटता है ।"[1]

'तप्तगृह' में --

"व्योम प्रांत भर गया
प्रखर ज्वाल-माला से
और लगा पिघल-पिघल
कपाल चलने
मट्ठी की आंच से
शुष्क काष्ठ खण्ड ज्यों
धांय धांय जलता ।"[2]

विरह वर्णन के प्रसंग में भी प्रकृति का वर्णन कतिपय खण्डकाव्यों में हुआ है । विरहिणी की विरहवेदना को प्रकृति के सुन्दर दृश्य बढ़ा देते हैं -- जैसे --

"फूल-पंखुड़ी में, पल्लव में
प्रियतम-रूप विलोक ।
भर आता है भरा मोद से
प्रेमी का उर-कोक ।
कभी देख करने लगता है
वह उन्माद-प्रलाप ।
देखें कबतक इन पदों में
छुपे रहेंगे आप ।।"[3]

१- रत्नावली : हरिप्रसाद 'हरि,' पृ० ३३-३४.
२- तप्तगृह : केदारनाथ मिश्र 'प्रभात,' पृ० ३३.
३- मिलन : रामनरेश त्रिपाठी, पृ० ३४.

इसके अलावा, बरगद की बेटी, लक्ष्मण शक्ति, प्रयाण, कामिनी, चित्रकूट मर्मांकुर जैसे काव्यों में भी प्रकृति का सुन्दर वर्णन हुआ है। प्रकृति का परम्परागत रूप में वर्णन ही आधुनिक खण्डकाव्यों में अधिकतया हुआ है।

उद्देश्य

किसी भी सृजन के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। काव्यों की रचना के मूल में भी अवश्य कोई उद्देश्य काम करता है। कविवर मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में —

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।"
महात्मा तुलसीदास ने भी "सुरसरि सम सब कहँ
हित होई" – काव्य के सृजन पर ज़ोर दिया है।
सचमुच काव्य का उद्देश्य तो महान् रहता है।

विविध उद्देश्यों से प्रेरित होकर आधुनिक काल के खण्डकाव्यकारों ने काव्यों का प्रणयन किया है। किसी खण्डकाव्य का उद्देश्य राष्ट्रीय सांस्कृतिक उच्चादर्शों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना रहा है तथा किसी का सामाजिक कुरीतियों का चित्रण करके समाज सुधार करने का रहा है। आत्मोत्सर्ग, नहुष, कुरुक्षेत्र, अजित, महाराणा का महत्व, वीर हमीर, मौर्य विजय आदि खण्डकाव्य राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक उच्च आदर्शों से प्रेरित रचनायें हैं। सामाजिक कुरीतियों का चित्रण करके समाजसुधारवादी दृष्टिकोण को बनाये रखने का प्रयास, किसान, अनाथ, जैसे खण्डकाव्यों द्वारा हुआ है। भारतीय उज्ज्वल अतीत का चित्रण करके भारतीय जन-मानस में जोश फैलाने हित उस काल में हरिश्चन्द्र, महाराणा का महत्व जैसे काव्य विरचित हुए। राष्ट्र प्रेम के महान् उद्देश्य को मूल में रखकर रचे गये काव्यों में पथिक, मिलन, स्वप्न, वीर हमीर, गोरा-वध जैसे खण्डकाव्यों का स्थान है। पथिक, मिलन, स्वप्न जैसे काव्यों में राष्ट्रप्रेम को पहुँचने वाले व्यक्तिप्रेम का उदात्त चित्रण हुआ है।

इस काल में जनता में नवजागृति फैलाने के उद्देश्य से भी भारतीय अतीत के उज्ज्वल व्यक्तित्वों का चित्रण हुआ। भारतमाता को स्वतंत्रता दिलाने के लिए उस समय वीर व्यक्तित्व वाले नवयुवकों की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। प्रणवीर प्रताप, वीर हमीर, अजेय पौरुष आदि खण्डकाव्यों में भारतीय अतीत के वीर एवं त्यागशील पात्रों का चित्रण हुआ है। भारतीय नवयुवकों को देश सेवोन्मुख बनाने का लक्ष्य इन के मूल में रहा है। अजेय पौरुष का कवि अपने काव्य सृजन का उद्देश्य प्रकट करते हैं —" आज ऐसे वीर एवं प्रेरणादायक चरित्र-चित्रणों की नितांत आवश्यकता है जो हमारी नयी पीढ़ी को कुण्ठा, निराशा और दुर्बलता से बचा, दृढ़ता और कर्तव्य की ओर ले जा सकें। इस कृति की रचना के साथ यह मेरा प्रधान उद्देश्य रहा है।"[1]

लौकिक एवं अलौकिक प्रेमतत्वों को प्रश्रय देते हुए इस काल में प्रेमपथिक आँसू, गुंजन, ग्रंथि जैसे काव्य रचित हुए। 'कल्पना प्रधान व आत्मनिष्ठ होते हुए भी इन काव्यों में देशकालोपयोगी सन्देश उभारे गये हैं और इन पर सामयिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक समस्याओं का प्रभाव पड़ा है, जिसे इन लोगों ने अपने निजी कल्पनात्मक एवं आदर्शवादी दृष्टिकोणों से समाहित किया है।'[2] आध्यात्मिक एवं मानवीय तत्वों का समन्वय करके विरचित आधुनिक खण्डकाव्य है निराला कृत 'तुलसीदास'।

पुराने काव्यतत्वों को नवीन बौद्धिक परिप्रेक्ष्य देकर नवीन युगानुकूल प्रस्तुत करने की इच्छा से प्रेरित कतिपय खण्डकाव्यकारों ने पुराने अलौकिक तत्वों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। नहुष, आत्मजयी, परीक्षित, संशय की एक रात, महाप्रस्थान आदि इसके सुन्दर उदाहरण हैं।

१- अजेय पौरुष : शंकर सुल्तानपुरी, भूमिका, पृ०५,

२- छायावाद के गौरव चिह्न : प्रो० क्षेम, पृ० ३०८.

समसामयिक जीवन मूल्यों से पाठकों को अवगत कराने के मूल उद्देश्य से रचित खण्डकाव्य है बंगाल का काल। भीख माँगकर नहीं बल्कि धर्म विद्रोह के द्वारा मातृभूमि के अकाल को दूर करने की प्रेरणा देशवासियों को दे देता है। मित्र-मित्र एवं गुरु-शिष्य सम्बन्ध की सांस्कृतिक गरिमा का अंकन ही 'प्रयाण' के कवि का उद्देश्य रहा है। स्वयं कवि के शब्दों में "गुरु-शिष्य-सम्बन्ध, मित्र का मित्र के प्रति व्यवहार, ऋण-भार से मुक्त होने के लिए परम आग्रह, निरन्तर दानशील, त्यागशील महामानवता के रूप में ईश्वर भावना का सच्चा स्पष्टीकरण -- इन सब भावों के समावेश से, वर्तमान युग में, सुदामा की सीधी-सादी कथा एक विशेष सांस्कृतिक उपयोगिता से सम्पन्न दिखायी पड़ेगी।"[1] भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेकर देश के लिए शहीद हुए अमर सपूतों की स्मृति में भी कुछ खण्डकाव्य प्रणीत हुए। प्राणार्पण, आत्मोत्सर्ग, वीरलाल-पद्मधर, स्वतंत्रता की बलिवेदी आदि ऐसे ही खण्डकाव्य हैं। महान् पुरुषों व वीरों के व्यक्तित्व एवं जीवनी से व्यक्ति प्रेरणा ले सकता है। इसी उद्देश्य से निर्मित खण्डकाव्य हैं -- कुटिया का राजपुरुष, तांत्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, शिवाजी आदि।

उपेक्षितों के उद्धार के इस युग में चिर उपेक्षित पात्रों को ऊपर उठाने तथा चरित्रों के कलंक को दूर करने का प्रयास भी आधुनिक खण्डकाव्यकारों की ओर से हुआ है। कैकेयी, गुरुदक्षिणा, कूबरी, कर्ण, दशानन आदि काव्य के मूल में इसी उद्देश्य की प्रेरणा रही।

युद्ध की समस्या वर्तमान काल की एक जटिल समस्या है। इस समस्या पर सफलता पूर्वक विचार 'कुरुक्षेत्र' नामक खण्डकाव्य में हुआ है। "युग के संघर्ष" को विचार के धरातल पर काव्य के माध्यम से व्यक्त करने वाला यह हिन्दी का उत्कृष्ट प्रबन्ध काव्य है।"[2]

१- प्रयाण : गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश - निवेदन, पृ० २.

२- हिन्दी के नव प्रबन्ध काव्य : डा० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, पृ० ३००.

पारिवारिक सम्बन्ध को सुदृढ़ करने के लिए छोटों के लिए बड़ों को बड़ा त्याग करना पड़ता है। इसी तथ्य को प्रकट करने के उद्देश्य से विरचित है 'मङ्गल' काव्य। काव्य का मूल मंत्र ही यह है —

'छोटे के भी लिए बड़े से बड़ा समर्पण
किया जाय तब सभी धर्म-धन का संरक्षण ।।

नारी की महत्ता एवं नारी के सम्मान तथा दासता से उसकी मुक्ति आदि को लक्ष्य बनाकर विरचित हैं रूपछाया, पांचाली, विषपान, रत्नावली जैसे काव्य। 'विषपान' खण्डकाव्य में लोकमंगल के लिए प्रेरणा देने वाली नारी का चित्र है तथा स्वयं त्याग करके भी लोकमंगल करने वाली नारी का चित्र प्रस्तुत करना 'रत्नावली' का उद्देश्य रहा है।

संसार में न्याय की प्रतिष्ठा के लिए शक्ति का अर्जन करना चाहिए। इसी उद्देश्य को प्रकट करने वाला काव्य है कौन्तेय-कथा। महाभारत काल में महादेव ने न्याय, धर्म तथा सृष्टि की अक्षुण्णता बनाये रखने के लिए अर्जुन को पाशुपत अस्त्र दिया, जिसके द्वारा अर्जुन ने कौरवों को जीतकर न्याय की प्रतिष्ठा की। आधुनिक युग में भी न्याय की प्रतिष्ठा के लिए शक्ति का उपयोग करना पड़ता है।

वस्तुतः विभिन्न उद्देश्यों से प्रेरित होकर ही आधुनिक खण्डकाव्यकारों ने अपने काव्यों का प्रणयन किया है। अपने काव्य के लिए पौराणिक, ऐतिहासिक एवं काल्पनिक कथावस्तु को चुनने के मूल में कवि का निश्चित उद्देश्य अवश्य काम करता रहा है।

वातावरण

आधुनिक खण्डकाव्यों में वातावरण की सफल योजना पर भी कविगणों ने ध्यान रखा है। पौराणिक, ऐतिहासिक एवं काल्पनिक तीनों ही प्रकार के खण्ड-

काव्यों में वातावरण की प्रधानता रहती है, पर ऐतिहासिक खण्डकाव्यों में ही इसके लिए अधिक गुंजाइश रहता है। पौराणिक कथावस्तुओं का चित्रण आधुनिक कवियों ने नवीन परिवेश में ही किया है, जिससे काव्य में स्वाभाविकता एवं वास्तविकता का गुण आ जाता है। काल्पनिक काव्यों का वातावरण चित्रण तो कवि अपनी ही इच्छा के अनुसार कर लेता है। आधुनिक काल्पनिक खण्डकाव्यों में तत्कालीन राजनीतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक वातावरण सुस्पष्ट चित्र अंकित है। ऐतिहासिक खण्डकाव्यों में ऐतिहासिकता को बनाये रखने के लिए वातावरण के ठीक निर्वाह पर अधिक जोर डालना पड़ता है। वातावरण चित्रण तो सभी खण्डकाव्यों में होता ही है लेकिन इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण कतिपय खण्डकाव्यों में तुलसीदास, मुक्तियज्ञ आदि खण्डकाव्यों का स्थान है। 'तुलसीदास'[1] में मुगलकालीन भारतवर्ष का अच्छा चित्र खींचा गया है। भारत की सांस्कृतिक, राजनैतिक दशा का अच्छा अवतरण काव्य के प्रारंभिक भाग में उपलब्ध है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर लिखे गये खण्डकाव्यों में भारत के तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, एवं धार्मिक वातावरण का स्पष्ट चित्र उभर आया है। यथा --

परतंत्र भारत में शिक्षा की दशा का वर्णन --

"शारीरिक दासता मानसिक बनती जाती है क्रमशः,
शिक्षा पर अधिकार देश की किया विदेशी शासन ने।
नीचे से ऊपर तक सारे विद्यालय आश्रित उसके,
शिक्षक पंगु बनाए शिक्षा के उलटे संचालन ने।"[2]

सामाजिक दशा --

"विदेशियों के शासन ने जो शोषण किया देश का था,
भारत की जनता को निर्धन, निर्बल भी कर डाला था,
धीरे-धीरे उसका परिचय भी उनको स्यामा देती,
उसका चिंतन भी उनका उर विकल बनाने वाला था।"[3]

१- तुलसीदास : निराला, पद १
२-३. स्वतंत्रता की बलिवेदी : जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द, पृ० ३१.

'मुक्तियज्ञ' में भारतीय मुक्ति संघर्ष का चित्र ही प्रस्तुत हुआ है। तत्कालीन भारतीय वातावरण का जीता-जागता चित्रण मुक्ति यज्ञ में हुआ है।

सम्मुख खण्डकाव्यों के प्रभाव को सफल वातावरण चित्रण बढ़ा देता है और इस कारण खण्डकाव्यों में उसका बढ़िया स्थान रहता है। सफल कविगण तो कथा-योजना व पात्र कथन के साथ ही साथ अनुकूल वातावरण का चित्रण भी स्वयं ही कर लेते हैं। आधुनिक खण्डकाव्य वातावरण चित्रण की दृष्टि से सफल दिखते हैं।

रससंयोजन

रस काव्य का प्राणतत्व है। काव्याध्ययन का परम ध्येय भी रसास्वादन है। काव्य के भावपक्ष का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप रसनिष्पत्ति है। भाव रस कोटि पर पहुंच कर आस्वाद्य बन जाते हैं। व्यापक दृष्टि से रस का सम्बन्ध भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों से है। भाव-पक्ष में काव्य के समस्त वर्ण्यविषय आ जाते हैं और कलापक्ष में वर्णन शैली के सब अंग सम्मिलित हैं। ये दोनों एक दूसरे के पूरक तथा सहायक है। भावपक्ष का सम्बन्ध काव्य की वस्तु से एवं कलापक्ष का उसके आकार से है। वस्तु एवं आकार की पृथकता शायद ही संभव हो सकती है। यों तो भावपक्ष तथा कलापक्ष दोनों ही रस से सम्बद्ध हैं तथापि रस का सीधा सम्बन्ध भावपक्ष से है। कलापक्ष के अंग रस के पोषक बनकर आते हैं।

काव्य में रस का सर्वोच्च स्थान है। आचार्य विश्वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा घोषित की है।[1] मनुष्य के मन में स्थायी रूप से विद्यमान भाव ही अन्य उपादानों से परिपुष्ट होकर रस रूप को प्राप्त करते हैं। "जो भाव वासनात्मक होकर चित्त में चिरकाल तक अवस्थित रहता है।"[2] वही स्थायीभाव है। कथाओं द्वारा मानव मन के

1- "वाक्यं रसात्मकम् काव्यम्" - साहित्यदर्पण.

2- काव्यदर्पण : रामदहिन मिश्र, पृ० ६२.

नौ स्थायी भावों का उल्लेख हुआ है -- रति, उत्साह, शोक, क्रोध, हास, भय, जुगुप्सा, आश्चर्य वीर निर्वेद। इनके अलावा वात्सल्य तथा भक्ति भी स्थायी भाव माने गये हैं। ये ही स्थायी भाव भरतमुनि के निम्नलिखित सूत्र के अनुसार रस रूप में परिणत हो जाते हैं।

"विभावानुभावव्यभिचारी संयोगाद्रसनिष्पत्तिः"[1]

स्पष्ट शब्दों में सहृदय हृदय में वासना या संस्कार के रूप में विद्यमान स्थायी भाव कारणरूप विभावों से उद्बुद्ध, उद्दीपन विभावों से उद्दीप्त, संचारी भावों से परिपुष्ट तथा अनुभावों से परिव्यक्त होकर रस रूप को पहुँच जाते हैं। उपर्युक्त नौ स्थायीभावों के अनुरूप रस भी संख्या में नौ हुए -- शृंगार, वीर, करुण, रौद्र, हास्य, भयानक, बीभत्स, अद्भुत एवं शान्त। इनके अलावा वात्सल्य एवं भक्ति रस भी मान्य हुए हैं।

काव्य के दोनों रूपों -- दृश्य एवं श्रव्य -- में रस की बहुत बड़ी मान्यता है। महाकाव्यों में अनेक रसों का सम्यक परिपाक होता है। आचार्यों ने महाकाव्य के लिए कोई रस के रूप में शृंगार, वीर एवं करुण रसों में से किसी एक का निर्धारण किया है तथा अन्य रसों का अंग रूप में। महाकाव्य के विशाल पट में अनेक रसों का स्थान मिलता है, किन्तु खण्डकाव्य के लघु कलेवर में अनेक रसों के परिपाक की गुंजाइश नहीं रहती। जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण तो खण्डकाव्य का विषय नहीं बनता, जीवन के किसी एक मार्मिक पक्ष का चित्रण ही उसमें रहता है। खण्डकाव्यों में प्रायः एक ही रस अंगी रूप में रहता है। कभी कभी उसके सहायक होकर अन्य रस भी अंग रूप में सम्मिलित रहते हैं।

प्रारंभिक काल में तो काव्यों में रस की अधिक मान्यता रही, उसका महत्वपूर्ण स्थान रहा। प्रारंभिक खण्डकाव्यों में भी यही बात है। छायावाद एवं छायावादोत्तर युग तक आते आते काव्यक्षेत्र में सर्वत्र जो क्रांति मच गयी, रस क्षेत्र भी उससे बहुता नहीं

१- नाट्यशास्त्र : भरतमुनि : ६ : ३२.

रहा । रस सम्बन्धी प्राचीन दृष्टिकोण प्रायः बदलता गया और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों तथा मानसिक संघर्षों के मनोविश्लेषणात्मक चित्रणों ने उसका स्थान प्राप्त कर लिया । 'आधुनिक मनोविज्ञान ने रस सम्बन्धी हमारी मान्यता को बेतरह झकझोरा है, क्योंकि यह किसी भी लोकोत्तर सत्य में आस्था नहीं रखता है ।'[1]

रस का मनोवैज्ञानिक महत्त्व तो है ही । रस के मूल में प्रमुखतम भाव हैं तथा भाव मन के विकार होते हैं । अतएव भावों का मन से गहरा सम्बन्ध है । 'रसों की व्याख्या भावों का मनोविज्ञान है ।'[2]

आधुनिक काल के प्रारंभिक खण्डकाव्यों में रस संयोजन में काव्यकारों का विशेष ध्यान रहा है । उन्होंने अपने काव्य में रस संयोजन दो रूपों में किया है -- (१) एक रस समग्र रूप में । (२) अनेक रस असमग्र रूप में । प्रबन्धकाव्यों के लिए आचार्यों द्वारा निर्धारित शृंगार, वीर एवं करुण रस ही इस युग के खण्डकाव्यों में अधिक प्रयुक्त हुआ है । 'महाराणा का महत्त्व', 'मौर्यविजय' जैसे काव्यों में समग्र रूप में वीर रस की अभिव्यक्ति हुई है । 'प्रेमपथिक' में शृंगार रस समग्र रूप में निष्पन्न हुआ है तो हरिश्चन्द्र, किसान, अनाथ जैसे खण्डकाव्यों में करुण रस की समग्र अभिव्यक्ति हुई है । रंग में भंग, मिलन, अभिमन्यु का आत्मबलिदान, पथिक, वीर हमीर, जैसे खण्डकाव्यों में असमग्र रूप में करुण, वीर, शृंगार, रौद्र रसों की अभिव्यक्ति हुई है ।

छायावादी युग में आकर रस सिद्धान्त की मान्यता पर्याप्त क्षीण हो गयी, तथापि इस काल के खण्डकाव्यों में रस की सुन्दर अभिव्यक्ति प्राप्त होती है । आँसू, ग्रंथि जैसे खण्डकाव्यों में वियोगशृंगार की सफल निष्पत्ति हो पायी है तो 'तुलसी' में

१- हिन्दी साहित्यकोश : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ६६२.

२- काव्यदर्पण : रामदहिन मिश्र : पृ० १८७.

संयोग शृंगार खूब खिल-खुलकर खेलता है । इस युग तक मनोविज्ञान काव्यक्षेत्र में अपना प्रभाव जमा चुका था और इसकी झलक कुशीदास एवं नहुष में मिलती है । इनमें रस का परिपाक पर कवि का ध्यान नहीं गया है, पात्रों के अन्तर्मन के चित्रण पर ही कवि का मन रम गया है । इस युग में विरचित 'चित्तौड़ की चिता', 'आत्मोत्सर्ग', 'शिवराज', 'अभिमन्यु' जैसे खण्डकाव्यों में, क्रमश रूप में करुण, वीर एवं रौद्र रसों का परिपाक प्राप्त होता है ।

छायावादोत्तर युग तक आते-आते रस का महत्त्व गौण होता गया । पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रणों की प्रमुखता के कारण रस-संयोजन को काव्य में प्रमुख स्थान प्राप्त नहीं हुआ । लेकिन परम्परा प्रेमी कवियों ने अपने खण्डकाव्यों में रससंयोजन को अक्षुण्ण रखा है । आत्मोत्सर्ग, अग्निपथ, प्राणार्पण, रक्तफूल, कौणार्क जैसे खण्डकाव्यों में पात्रों के अन्तर्द्वन्द्वों के सफल चित्रण के बीच भी करुण रस के संयोजन का सुन्दर निर्वाह दृष्टिगोचर होता है । कौन्तेय कथा, महारानी लक्ष्मीबाई, अजेय पौरुष, कुरुक्षेत्र, शिवाजी जैसे खण्डकाव्यों में वीर रस का परिपाक हुआ है । 'मधुर पुत्र' काबा और कर्बला जैसे खण्डकाव्यों में शांत एवं करुण रसों की सफल निष्पत्ति हुई है । इस युग में परम्परा से विरुद्ध हास्य-रस को अंगी बनाकर दो खण्डकाव्य विरचित हुए — 'बनारसी-मद' तथा 'कालदूत' । इन दोनों ही खण्डकाव्यों में हास्यरस का सफल परिपाक दर्शित होता है । इस युग में रचित पाषाणी, दशानन, आत्मजयी, रत्नावली, द्रौपदी जैसे खण्डकाव्यों में मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रणों के बीच रस निष्पत्ति को स्थान ही नहीं मिला ।

समग्रत: विचार करने पर ज्ञात होता कि आधुनिक काल के प्रारंभिक युग में रसों की अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा किन्तु छायावाद एवं छायावादोत्तर युग तक आते आते इसका स्थान गौण हो गया । मनोविज्ञान के आविर्भाव ने काव्यक्षेत्र में रस व्यवस्था को महत्त्वहीन सिद्ध कर दिया है । पात्रों के मनोविश्लेषणात्मक चरित्र-चित्रण ही युगानुकूल, प्रभावशाली एवं स्वाभाविक सिद्ध हुआ है ।

संयोग शृंगार

"एक पल मेरे प्रिया के दृग-पलक
थे उठे ऊपर सहज नीचे गिरे
चपलता ने इस विकंपित पुलक से
दृढ़ किया मानो प्रणय-सम्बन्ध था।"

इसमें तो समस्त रस सामग्री का उल्लेख नहीं हुआ है। ऐसे प्रकार भी कवि के अभिप्रेत के अनुसार प्रसंगानुकूल उनकी कल्पना कर लेना पड़ता है।

प्रस्तुत पंक्तियों में संयोग शृंगार का सुन्दर वर्णन मिलता है। आलंबन नायिका है, नायिका का सौन्दर्य उद्दीपन विभाव है, नायिका का दृष्टिपात अनुभाव है तथा लज्जा संचारी है। इनसे पुष्ट होकर रति स्थायी भाव रसराज शृंगार को पहुंच जाती है।

विप्रलंभ शृंगार

विरह विकल है, नैन भरे हैं, और जगत है रीता।
कैसे मुझे प्यास प्राणों की जब जीवन ही रीता।।
कहने की इच्छा होती है, किन्तु कहाँ कह पाती।
विषम टीस ऐसी प्राणों में, मौन नहीं रह पाती।।[१]

इसमें प्रियतम के प्रवास के कारण विरहिणी हुई नायिका की विरहव्यथा का वर्णन हुआ है। यह विरह वियोग का विप्रलंभ रस दशा को प्राप्त करता है।

१- कोणार्क : रामेश्वरदयाल दुबे, पृ० ५५.

वीर रस

क्या धमकाता है काल अरे, आ जा, मुट्ठी में बन्द करूँ,
छुट्टी पाऊँ तुमको समाप्त कर दूँ, निज को स्वच्छन्द करूँ।
ओ शल्य ! हयों को तेज करो, ले चलो उड़ाकर शीघ्र वहाँ,
गोविन्द-पार्थ के साथ डटे हों चुन कर सारे वीर जहाँ।"[१]

इसमें युद्धवीर का वर्णन हुआ है जिससे वरिए वीर रस का परिपाक हुआ है।

रौद्र रस

"श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे।
सब शोक अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे।
संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठकर खड़े॥"[२]

इसमें अभिमन्यु के वध पर शत्रु पक्ष (कौरव) का उल्लास आलंबन विभाव, श्रीकृष्ण के वचन उद्दीपन विभाव, अर्जुन के वाक्य अनुभाव तथा अमर्ष, उग्रता, गर्व आदि संचारी हैं। स्थायी भाव क्रोध है जो इन विभावानुभावों व संचारियों से परिपुष्ट होकर रौद्र रस में परिणत होता है।

अद्भुत रस

"यह कैसी उज्ज्वल छाया
मेरे साथ साथ चलती है ?
ये आँखें हैं या अग्निकुण्ड ?

- - -

---

१. रश्मिरथी : दिनकर, सर्ग ७, पृ० ११९.
२. जयद्रथ वध : गुप्त जी, पृ० ३७.

जिसकी छाया के पड़ते ही
हर चीज तुरंत कुम्हला जाती है[1]

इन पंक्तियों में अद्भुत रस का परिपाक द्रष्टव्य है।

तथा

"उस एक ही अभिमन्यु से यों युद्ध जिस जिसने किया
मारा गया अथवा समर से विमुख होकर ही जिया।
आश्चर्य देखो तो नया यह सिंह सोते से जगा।

- - -

इसमें सभी योद्धाओं के मन में अभिमन्यु की कुशलता को देखकर जो आश्चर्य होता है, वही स्थायी भाव, रस दशा को प्राप्त करता है।

भयानक

कर्तव्य अपना इस समय होता न मुझ को ज्ञात है

- - - -

या पार्थ प्रण करके विफल अपघात अपने कीजिए।"[2]

इसमें अभिमन्यु वध आलंबन है, पार्थ की प्रतिज्ञा उद्दीपन है, उसके शरीर का पतन अनुभाव, शंका, चिंता आदि संचारी है। भय स्थायी भाव है।

बीभत्स रस

गोल कपोल पलट कर सहसा बने भिड़ों के छत्ते से
हिलने लगे उष्ण श्वासों से ओठ लपालप लत्तों से।
कन्धों पर के बड़े बड़े से बाल बने अहो आँतों के जाल
फूलों की वह वरमाला भी हुई मुण्डमाला सुविशाल।"[4]

१- आत्मजयी : कुंवर नारायण, पृ० ६४.
२-३. जयद्रथ वध : मैथिलीशरण गुप्त.
४- पंचवटी - वही.

इन पंक्तियों में शूर्पणखा आलंबन है, उसका [illegible] उद्दीपन, [illegible] [illegible] आलंबन तथा मोह, दैन्य, ग्लानि आदि संचारी हैं। इन्हीं परिपुष्ट जुगुप्सा, वीभत्स रस में परि-व्यक्त हो जाता है।

करुण

'जो भूरि भाग्य भरी विदित थी, अनुपमेय सुहागिनी।
हे हृदयवल्लभ! हूँ वही अब मैं यहाँ हत भागिनी।
जो साथिनी होकर तुम्हारी थी अतीव सनाथिनी
है अब उसी मुझ-सी जगत में और कौन अनाथिनी॥'[1]

अभिमन्यु की मृत्यु पर प्रियतमा उत्तरा को शोक ही इन पंक्तियों में अंकित है। अभिमन्यु का मृतशरीर आलंबन है, वीर-पत्नी का अपने वीर पति का स्मरण करना उद्दीपन है, उत्तरा का क्रन्दन अनुभाव है। स्मृति, दैन्य, आदि संचारी भाव हैं। इन्हीं परिपुष्ट स्थायी भाव शोक से करुण रस की अभिव्यक्ति होती है।

इसी भाँति —

अपने पुत्र के तिरोधान पर शोकाभिभूत पिता का विलाप करुण रस की व्यंजना करनेवाला है —

'सम्भ्रम उठा, चरण उठाया पै, पूछा — 'गया किधर है?'
किधर गया है मेरा छौना, बोलो गया किधर है?
उत्तर सुने – अभागे को अब इतना धैर्य नहीं था।
किंतु चित्तभ्रम सोचने लगा, चित्त का पता नहीं था।'[2]

वात्सल्य रस

आलिंगन में पुनः बाँधकर झुककर मस्तक चूमा।

१- जयद्रथ वध – मैथिलीशरण गुप्त   २- कौणार्क : रामेश्वरदयाल दुबे, पृ० १००.

वत्सल भावों में विभोर बन पितृ-पितृत्व था झूमा ।
पुलक प्रकंपित रोमांचित था, हर्ष-ज्वार था दूना ।
शोभा-उचित इसी अवसर पर निज रत्न को चूमा ।[१]

बाप-बेटे के वात्सल्यपूर्ण मिलन का यह प्रसंग है । स्थायीभाव अपत्य प्रेम वात्सल्य रस को पहुँचता है ।

आधुनिक अधिकांश खण्डकाव्यकारों ने प्रमुख रस को काव्य की आत्मा मानकर ही स्वीकार किया है तथा अपने काव्यों में उसे महत्वपूर्ण स्थान भी प्रदान किया है । छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में रस को जो धक्का सा लगा है वह तो युगप्रवृत्ति के कारण ही हुआ है । तत्कालीन युग एवं काव्यप्रवृत्ति दोनों ही ऐसी रही कि काव्यों में रस से अधिक पात्रों के मनोवैज्ञानिक चरित्र विश्लेषणों को स्थान प्राप्त हुआ ।

समग्रतः विचार करने पर ज्ञात होगा कि आधुनिक खण्डकाव्यों में भावपक्ष का सफल निर्वाह हुआ है । कथावस्तु, पात्र एवं चरित्रचित्रण, प्रकृतिचित्रण, उद्देश्यचित्रण, वातावरण चित्रण, रस संयोजन आदि के सुन्दर समन्वय से आधुनिक खण्डकाव्यों का अन्तरंग-सौष्ठव खूब निखरा हुआ है ।

१- कोणार्क - रामेश्वर दयाल दुबे, पृ० ८१.